मासिक

जय हाटकेश वाणी

jaihaatkeshvani.com

दिसम्बर 14 | वर्ष : 9 अंक : 7

मूल्य ₹ 10

प्रथम जन्मदिन की बधाई
मेहता परिवार की लाड़ली बिटिया
परिधि मेहता
22 दिसम्बर 2014
नन्ही-सी गुड़िया आई हमारे द्वारे
लेकर खुशियों के उजियारे,
रोशन हुआ घर
किलकारियों से उसकी,
जगमग हुआ मन,
बदमाशियों से उसकी।
यही शुभकामना दिल से तुम्हे,
रहे सदा खुश बिटिया हमारी ।।
आशीर्वाद दाता
श्री गोपाल मेहता (परदादाजी), संतोष-सौ.इन्दू मेहता (दादा-दादी)
पंकज-सौ.प्रतिक्षा मेहता (पापा-मम्मी), ईश्वरीप्रकाश-सौ.जानकीबाई नागर (नाना-नानी)
पूजा मेहता (बुआ), अनुज मेहता (चाचू) एवं समस्त मेहता एवं नागर परिवार, उज्जैन-नलखेड़ा
मो.89825 63959

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं श्री रवीन्द्र नागर, नईदिल्ली
पं श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुंबई
पं श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं श्री कान्ताप्रसाद नागर, दास्ताखेड़ी
पं श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं श्री दिनेश शर्मा, इटावा (तराना)
पं श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ. दमिता वकील झा

-विज्ञापन-
पवन शर्मा
9826095995/92004-20000

-वितरण एवं शिकायत
दीपक शर्मा
94250-63129

सम्पादक वाणी...

जीते जी मोक्ष...

जिंदगी को सम्भाल कर रखना ये मौत की अमानत है...आम तौर से मरना या मरने की बात करना अच्छा नहीं माना जाता, इसके बावजूद ज्ञानीजनों को हम कहते सुनते हैं कि मन को मारो, इच्छाओं को मारो, जीते जी मोक्ष प्राप्त करो। वास्तव में देखा जाए तो उम्र के किसी भी पड़ाव पर जीते जी मोक्ष प्राप्त कर लेना सर्वोचित होता है। उससे जीवन की बहुत सारी समस्याओं का निदान हो जाता है, क्योंकि जिस प्रकार जीवन स्थायी, अमर नहीं है, उसी प्रकार दुःख, चिंताएं भी स्थायी नहीं रहती। उनका असर बहुत कम समय रहता है, तथा समय के पास ही उसका इलाज है। यदि आप इन सब बातों को समझ चुके हैं तो न आपको दुःख सताएगा, न चिंता। सुख में भी आप सामान्य ही रहेंगे, आपको अहंकार नहीं आएगा। दुनिया में ज्यादातर लोग अपने जीवन की चिंता, संतान को व्यवस्थित करने की चिंता, नौकरी कारोबार की व्यस्तता में अपनी उम्र खपा देते हैं। जीवन के अंतिम दौर में वे पाते हैं कि सबके लिए उन्होंने सब कुछ किया परन्तु अपने लिए कुछ भी नहीं। जबकि सबके साथ अपने लिए भी जीना जरूरी है, अपने लिए जीने का मतलब सांसारिक जंजालों से छूट जाना है, व्यर्थ के दुःखों से छूट जाना है। चिंताओं से छूट जाना है। भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद् भगवतगीता में जो स्थितिप्रज्ञ की व्याख्या की है वह यही है कि दुःख में भी विचलित नहीं होना चाहिए। होई है वही जो राम रचि राखा। मतलब संसार में जो कुछ भी घट रहा है वह पहले से तय है, उसके बारे में दुःख या चिंता कर हम अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं तथा स्वास्थ्य भी। इसलिए जीते-जी मोक्ष का महत्व है उसके बाद आप अपना जीवन तो जीते हैं, लेकिन एकदम विपरीत स्थिति में। हम संसार में हैं या नहीं यह संसार अपनी गति से चलता ही रहता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि जीवन की इस गति से हम प्रभावित हो जाते हैं... तमाम समस्याओं के बारे में चिंता करने से कुछ नहीं होता, वैसे भी हम पाते हैं कि हम किसी काम को जब हाथ में लेते हैं, तो वह हमारी मर्जी से पूरा नहीं होता, वह एक निश्चित समय पर ही पूर्ण होता है, हम कितने भी हाथ-पैर पटक लें। इसका मतलब यह है कि हम कार्य करते जाएं एवं फल हेतु ईश्वर के ऊपर छोड़ दें। जीते जी मोक्ष प्राप्त करने के बारे में आप किसी सच्चे प्रेमी से भी मशविरा प्राप्त कर सकते हैं, वह कहता है हम तो किसी पर मर मिटे, वास्तव में यदि कोई किसी पर मर मिटा है तो उसे भी संसार के दुःख नहीं सताते, उसके जीवन का अंदाज बदल जाता है। जीते-जी मोक्ष प्राप्त करने की कोई उम्र नहीं है, जब चाहो प्राप्त करो तथा संसार के प्रपंचों से मुक्त होकर आराम से जीवन जियो, न जीवन की चिंता, न मौत का भय।

– संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

मध्यप्रदेश नागर निर्देशिका का प्रकाशन

मासिक जय हाटकेश वाणी का आगामी जनवरी 2015 अंक मेलापक का रहेगा, जिसमें विवाह योग्य युवक-युवती के परिचय शामिल किए जाएंगे। पूर्व में प्रकाशित ऐसे वैवाहिक विशेषांकों से समाज को बड़ा लाभ प्राप्त हुआ है, अनेक विवाह सम्बन्ध तय हुए तथा सबसे बड़ा संतोष यह है कि सबके सब सफल से सफलतम रहे। इसकी सार्थकता तभी है जब ज्यादा से ज्यादा समाजबंधु इस विवाह विशेषांक का लाभ लें। इसके पश्चात म.प्र. नागर निर्देशिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें नाम, पता, सम्पर्क नम्बर के साथ कार्यरत पद स्थान एवं ब्लड ग्रुप का भी समावेश किया गया है। जय हाटकेशवाणी का यह प्रयास भी भागीरथी है, इसमें प्रत्येक नागरबंधु का मोबाइल नंबर उपलब्ध हो जाएगा, ताकि उनसे चर्चा अथवा मैसेज के माध्यम से जुड़ाव हो सकेगा... कई बार समाजबंधुओं के पोस्टल एड्रेस की जरूरत पड़ जाती है, उसकी पूर्ति भी इस निर्देशिका के माध्यम से हो सकेगी। समाजबंधु किस क्षेत्र में

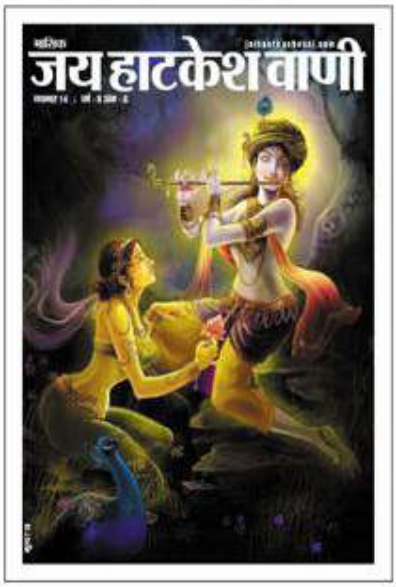

कार्यरत हैं यह जानकारी मिलने से व्यावसायिक संबंधों का विस्तार किया जा सकेगा। वर्तमान समय में यह एक बड़ी जरूरत है। इसी के साथ ब्लड ग्रुप का भी प्रकाशन किया जा रहा है। मध्यप्रदेश निर्देशिका का प्रकाशन भविष्य में कई आयामों को अंजाम देगा इस बारे में रतलाम नागर समाज का जिक्र आता है जहां मोबाइल मैसेज के माध्यम से पूरा समाज जुड़ा हुआ है। हर सुख-दु:ख की खबर प्रत्येक समाज बंधु के पास उपलब्ध होती है, इस पद्धति से विभिन्न नगरों के नागर भी मोबाइल के द्वारा आपस में जुड़ सकते हैं, परन्तु उसके लिए सबसे बड़ी जरूरत है मोबाइल नम्बरों की, जिसकी पूर्ति यह निर्देशिका कर सकेगी, इसी के साथ प्रदेश स्तर पर किए जाने वाले आयोजन को पूरे प्रदेश के नागर समाज तक पहुंचाना है, तो निर्देशिका में पूरे प्रदेश के मोबाइल नम्बर उपलब्ध रहेंगे। उपरोक्त निर्देशिका का प्रकाशन फरवरी अथवा मार्च माह में प्रस्तावित है, जो सम्पूर्ण भारत के नागर परिवारों को उपलबध करवाई जाएगी। यह समाज को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी... ऐसी आशा है।

- सम्पादक

सदस्यता/नवीनीकरण आवेदन पत्र

मै _____

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) _____

_____

मासिक जय हाटकेश वाणी का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा गोराकुण्ड, एम.जी. रोड, इन्दौर में खाता क्रमांक-0325201004027 में जमा किया है।

संपर्क-**जय हाटकेश वाणी**, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर-452002

फोन-0731-2450018/मो.99262 85002/99265 63129

www.haatkeshvani.com/ Email : jayhotkeshvani@gmail.com/manibhaisharma@gmail.com

रिश्ते ही रिश्ते

जय हाटकेशवाणी का मेलापक 2015 अंक समर्पित रहेगा

पूज्यनीय स्व. पिताम्बरलाल जी उदयराम जी एवं पूज्यनीय स्व. श्रीमती मीराबाई पिताम्बर लालजी जसवंतपुरा (जालोर) को जनवरी 2015 के अंक में नागर समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों की सम्पूर्ण जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित की जावेगी।

स्व. श्री पिताम्बरलालजी उदयरामजी
जसवंतपुरा (जालोर)

स्व. श्रीमती मीराबाई पिताम्बरलालजी
जसवंतपुरा (जालोर)

निम्नलिखित प्रोफार्मा में विवरण 20 दिसम्बर 2014 तक पहुंचाने का कष्ट करें।

नाम- _____

पिता का नाम-_____

जन्म दिनांक-_____ समय- _____स्थान_____

शिक्षा- _____

कद/वजन-_____

कार्यरत- _____

नानाजी का नाम _____

मांगलिक-हां/नहीं गौत्र- _____

पता- _____

फोन नं./मोबा. नं- _____

उपरोक्त विवरण-मासिक जय हाटकेशवाणी 20, जूनी कसेरा बाखल, इंदौर पर भेजें।

ताना-रिरि संगीत समारोह का उद्घाटन मुख्यमंत्री ने किया

वडनगर याने नागरों के पूर्वजों की भूमि जहां पर कि अनेक विद्वान, राजनीति शास्त्र के जानकारों का जन्म हुआ है। नागर समुदाय कला, संस्कृति एवं ज्ञान के अलावा व्यापार में भी कुशल थी, और इस क्षेत्र में उनका बोलबाला था। इसलिए नागरों को नागरवणिक भी कहते हैं। नागर बंधु में जिन्होंने पाककला में महारथ हासिल की वे बंधारा एवं श्रीनगरा नागर कहलाए। गुजरात का राजकीय एवं सांस्कृतिक इतिहास कहता है कि एक समय में वडनगर गुजरात का स्वर्गपंख कहलाता था। इसलिए कथाजी कदमबांदेडे ने वडनगर में बेहिसाब लूटमार की, जिसके चलते नागरों ने वडनगर को छोड़ दिया। एक समय की बात है जब दिल्ली की गद्दी पर मुगल शहंशाह अकबर बादशाह राज करता था, जिसके दरबार में बीरबल, टोडरमल, जैसे नवरत्न थे। तानसेन नामी संगीतकार थे उनके गुरु संत हरिदास के समक्ष तानसेन ने गर्व से एक बार जिक्र किया कि मेरे जैसा संगीतकार पूरे भारत में नहीं है। हरिदास जी समझ गए कि शिष्य को अहंकार आ गया है। उन्होंने तानसेन से कहा मेरी चिता दीपक राग से जलाना। एक लोककथा के अनुसार तानसेन वडनगर का ब्राह्मण था और उसने मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिया था। तानसेन ने गुरू हरिदास की चिता दीपक राग से जलाई। संगीत के नियम अनुसार दीपक राग के बाद में जो कोई मल्हारराग का गायन नहीं करे तो उसके शरीर में भारी जलन होने लगती है। दीपक राग का दाहक पीड़ा से पीड़ित तानसेन मल्हारराग गाने वाले को खोजने निकल पड़ा। उसे किसी ने बताया कि वडनगर में ताना और रिरि नाम की दो नागर कन्याएं संगीत की जानकार हैं, उनके पास जाकर तानसेन ने विनती की, जिसके फलस्वरूप दोनों बहनों ने राग-मल्हार गाया और तानसेन की जलन पीड़ा को शांत किया, यह खबर जैसे ही बादशाह अकबर को लगी, उन्होंने दोनों बहनों को दरबार में आमंत्रित किया। मगर ताना-रिरि ने सोचा बादशाह कहीं हमारा धर्म परिवर्तन या किसी प्रकार का शोषण न कर लें, इस कारण वडनगर के श्मशान में जलती चिता पर कूद पड़ी और अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। वडनगर में जन्मे और वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तानारिरि की स्मृति में भावांजलि वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन 2003 से शुरू किया। इस वर्ष इस महोत्सव का आयोजन 1-11-14 से 2-11-14 तक था। महोत्सव के आयोजन में अ.भा. नागर परिषद के कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आमंत्रित नागर बंधु आयोजन देख आश्चर्यचकित रह गए। 1-11-14 को शाम 5 बजे नरेन्द्र भाई मोदी के बड़े भाई श्री सोमभाई मोदी एवं श्री अंजलिबेन पंड्या का आगमन हुआ। जिनका स्वागत नागर बंधुओं द्वारा किया गया। इस संगीत महोत्सव का उद्घाटन गुजरात की प्रथम महिला मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल के करकमलों द्वारा हुआ। आयोजन में अ.भा. नागर परिषद के उपाध्यक्ष श्री चम्पकभाई जोशी एवं परिवार का विशेष सहयोग रहा। सभी ने मिलकर संगीत का आनंद लिया एवं अगले साल फिर मिलेंगे यह वचन देकर विदा हो गए। जय हाटकेश।

जयपुर में नवरात्रि महोत्सव सम्पन्न

नौ वर्षों में छटा हो गई निराली

2006 में गौरव नागर परिवार ने जयपुर में निवास स्थान बनाया। तब वहां के अन्य वर्ग के साथ गुजराती पद्धति से गरबा नृत्य प्रारंभ किया था। प्रारंभ में सभी को अभ्यास कराया गया। मां भगवती की कृपा से 9वां गरबा कार्यक्रम 2014 इतना भव्य बन गया है कि प्रांगण में जगह तक नहीं मिलती। इस कार्यक्रम में किसी प्रकार का शुल्क व चंदा नही लिया जाता। सजावट, म्यूजिक व्यवस्था व डांडिया इत्यादि सभी व्यवस्था निजी खर्च पर होती है। समारोह की भव्यता देख कुछ प्रभुत्व वर्ग प्रसाद व्यवस्था व इनाम की व्यवस्था करते हैं। कार्यक्रम में मित्रगण- श्री श्यामसुंदरजी, श्री प्रमोदजी, श्रीनरेश जी, गुप्ताजी, श्री सुरेशजी टेमाणी इत्यादि बहुत सहयोग करते हैं। सेवानिवृत्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सबको पुरस्कार वितरण करते हैं।

इस वर्ष राजस्थान राज्य के ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज्यमंत्री श्री गुलाबचंद कटारिया ने समापन समारोह में पधारकर कार्यक्रम को गौरवान्वित किया एवं शुभकामना व आशीर्वाद देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रारंभ में कार्यक्रम को मूर्त रूप देने का श्रेय गौरव नागर के पिता भगवतीलाल नागर, माता अरूणा नागर व पत्नी अर्पणा नागर व पुत्री अक्षरा नागर को जाता है।

- गौरव नागर
जयपुर, 09460190903

नृसिंह हार जयंती

धन्य घड़ी धन्य पल मुदकारी भूतल अवल रक्षा जयकारी
मार्गशीर्ष नी महायशवाली शुक्ल पक्षे सातम रविवारी।
हार दीधो हरित महेता ने भक्त तणोशुद्ध भाव विचारी,
ए अवसर उत्सव राजेपुर भमका मां भारी।। धन्य घड़ी-
नौतम नागरी नात समाजे प्रकट बताव्यो प्रेम पधारी,
हरिकीर्तन गाया होशे थी राग रागणी ललकारी।। धन्य घड़ी--
तरीयां तोरण बांध्या द्वारे सुंदर आंगणे छटायु वारी।
जय जय शब्द वदे जन मंडल हलतो मलतो हस्त पसारी। धन्य घड़ी-
स्वर्ग समासम सज्जन गोमे शुभ समय नी छे बलिहारी।
महेता नुं मंदिर दीपक थी सरस रह्युं छे शोभा वधारी।। धन्य घड़ी-5
पूर्ण प्रकाशी रघु प्रतिमास जाणे हार नी तैयारी,
नागर भक्त लीधो निभावी गरुड़ विना आवी गिरधारी।। धन्य घड़ी-
नागर नात पर नटवर छे प्रीति त्रिभुवन नाथ हमेशा तमारी
अम नात नी उन्नति करवा हरदम हाजर रहजो मुरारी ।। धन्य घड़ी

प्रसंग :-

नृसिंह महेता ना विरोधियों अे राव मंडलिक ने भगत नरसी महेता ना विरुद्ध उश्केरी ने जेल भेगा करावी हता अने केदखाना थी छुटवा माटे एकज शर्त हती के श्री दामोदर राय जी ना गला नो हार सुरज उगता पेला नृसिंह भगत ना गला मां नहीं आवे तो मृत्युदंड फटकारवा मां आवशे। शर्त मुजब भगवान श्री दामोदरराय जी ना गला नो हार नृसिंह महेता ना गला मां पेरावी दीधो। आ दिवस ना आनंद ने कविये पोता नाभाव मां दर्शाया छे।

सरलार्थ :-

ज्यारे भगवान श्री दामोदर राय जी अे पोता ना गला नो हार हवा मारफते भक्त नरसी महेता ना गला मां पेराव्यो ते घड़ी ने पल धन्य छे दो घड़ी बहुज सुखद छे भोमका (पृथ्वी) पर ध्रुव तारानी जेम अचल सदाई जयकारी छे। मागसर महीना उजवाली सातम ने रविवार धणीज यशवंती थई गई छे। नरसी भगत नो शुद्ध भाव विचारी श्री दामोदर राय जी ये पोता ना गला नो हार भगत श्री नरसी महेता ने पेरावी दीधो। अेवा टाणे राजेपुर गामे घणुज सरस अने घणुज सुंदर उत्सव सरजन (आयोजन) कयुं हतु। श्री हरि दामोदर रायजी अे इशीलु नागरी नात ने प्रेम थी पधारी ने पोतानी हाजरी मात्र नरसिंह महेता नी भक्ति ने प्रत्यक्ष बतावी दीधी। घणीज उमंग थी राग रागिणी थी हरि कीर्तन कर्युं। घर चोखट चोख पर आसोपालव ना तोरण शोभा पामी रह्या छे अने आंगणे आंगणे पानी नु छटकाव करायु छे। जन मेदनी घणा ज होशे होशे जय जयकारा करी ने एक बीजा ने गले पले छे। आ सारा समय नी बलिहारी छे। के आ गाय स्वर्ग जेवु थई रह्यु छे। नृसिंह महेता नु घर मंदिर दीवलाओ ना अजवाला थी घणुज शोभावधारी रह्यु छे। पूर्ण प्रकाश थी शोभती भगवान दामोदर रायजी नी प्रतिमा अेवी लागे छे के नरसी भगत ने हार पेरावव नी उतावल करता होय। नागर भगत नी कीर्ति वधारवा श्री हरि गरुड़ मुकी ने पधार्या। हे, नटवर नागर अमारी नागरी नात पर तमारी हमेश लागणी रहे। हे, मुरारी अमारी नागरी नात नी उन्नति करता हमेश हाजर रहजो।

संकलन अने सरलार्थ

- दयाराम नागर
सुमेरपुर राज.
7742035036

उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण कार्य जारी

परम पूज्य-गुरुदेव की असीम कृपा से ही श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कार्य पूरा होने जा रहा है। न्यास मंडल एवं समाज आपका आभारी है। समाज की धर्मशाला हरसिद्धि पाल स्थित श्री हाटकेश्वर धाम का निर्माण कार्य मालव भाटी के संत पूज्य गुरुदेव पं. श्री कमलकिशोर जी नागर महाराज की असीम कृपा से पूर्णता की ओर है। तीन मंजिल पूरी हो चुकी है। चौथी टॉवर एवं एलिवेशन के लिए छत का कुछ हिस्सा भी डाला गया है। छत का प्लास्टर, कमरों का निर्माण तथा बिजली की पाइप लाइन डालने का काम हो गया है। कुछ समय पश्चात फर्श, सेनीटेशन, पाइप लाइन, दरवाजे, खिड़की एवं बिजली फिटिंग का कार्य हो जाएगा तथा पूज्य गुरुदेव यह ऐतिहासिक भव्य धरोहर को समर्पित कर देंगे। न्यास मंडल एवं नागर समाज पूज्य गुरुदेव का आभारी रहेगा। क्योंकि इतना बड़ा कार्य, न्यास के नाय संभव नहीं था। इतने कम समय में एक ऐतिहासिक धरोहर तैयार होना, असीम कृपा ही मानी जावेगी। सिंहस्थ 2016 एवं आगे भी समाज को इसका लाभ मिलेगा तथा आगे आने वाली भावी पीढ़ी कई वर्षों तक इस सदुपयोग कर, समाज कल्याण में अपना योगदान प्रदान करेगी। पूज्य गुरुदेव को इस पुनीत कार्य के लिए न्यास मंडल नमन करता है तथा पूज्य गुरुदेव से इसी प्रकार से आपकी अनुकम्पा बनी रहे, प्रार्थना करता है। **- न्यास मंडल**

श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण में दान राशि भेंट

1. श्री मोहनलाल जी नागर (छापरी वाले) इंदौर 5000 1000/- पूर्व में जमा किए
2. श्री महेन्द्र कुमार नागर (पिता श्री गौरीशकर जी नागर के 101 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में) 11000
3- श्री दिलीप जी त्रिवेदी उज्जैन - 5001
4- श्रीमती राधा-प्रेमनारायण जी रावल महेश नगर उज्जैन - 5000
5- श्रीमती विमला-लक्ष्मीकांत जी व्यास उज्जैन - 2100
6- श्री ओमप्रकाश नागर करज तराना- 5000 घोषणा राशि जमा
7- श्री उन्मेद जी नागर अंडमान निकोबार द्वीप समूह- 1002
8- श्री गेंदालाल जी नागर सुतारखेड़ा देवास - 10000 (घोषणा राशि पेटे)
9- श्रीमती वर्षा-निशात बटवाल वारंगल आंध्रप्रदेश- 5001
(घोषणा राशि जमा)
10- श्री किरणकांत जी मेहता सुभाषनगर उज्जैन - 31250
(कमरा निर्माण की घोषणा राशि जमा)
11- सुश्री लीला बेन पंडित कालमुखी- 5111/-
12- श्री श्यामलाल जी नागर, देवास 5100 घोषणा राशि जमा।

राज्य स्तरीय समारोह का 24 एवं 25 दिसम्बर को आयोजन

उज्जैन। म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति के तत्वावधान में दो दिवसीय राज्य स्तरीय समारोह उज्जैन में आयोजित होंगे। 24 दिसम्बर 2014 को समिति की सांस्कृतिक इकाई अभिरुचि विकास मंच द्वारा नागर रत्न स्व. श्री विष्णुप्रसाद जी नागर की स्मृति में 13वें सांस्कृतिक समारोह जो पूर्व सांसद स्व. श्री राधेलाल जी व्यास की स्मृति में डॉ. प्रदीप व्यास एवं परिवार उज्जैन द्वारा समर्पित है एवं 25 दिसम्बर 2014 को 37वें प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। सांस्कृतिक समारोह 24-12-14 सायं 7 बजे, प्रतिभा सम्मान समारोह 25.12.14 को दोपहर 12.30 बजे स्थान- पं. सूर्यनारायण व्यास संकुल कालिदास अकादमी कोठी रोड, उज्जैन पर होगा। विगत वर्षों के अनुसार इस वर्ष आमंत्रण पत्र नहीं छपवाए गए हैं। यह उल्लेखनीय है कि दानदाताओं से प्राप्ति धनराशि बैंक में सावधि जमा है। इससे प्राप्त ब्याज का ही उपयोग समिति आयोजन हेतु करती है। उक्त आयोजन आप सबके स्नेह, सहयोग, आशीर्वाद, मार्गदर्शन एवं योगदान से ही प्रति वर्ष किया जा रहा है। उक्त दो दिवसीय राज्य स्तरीय समारोह में नागर ब्राह्मण परिवार सादर आमंत्रित है। समय पर सबकी उपस्थिति अपेक्षित है।

- रमेश मेहता प्रतीक, अध्यक्ष

स्व.रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार शिवपुरी के श्री मुकेश मेहता को

भोपाल। शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेवा, उत्कृष्ट योगदान और असाधारण उपलब्धियों के लिए हर साल दिया जाने वाला स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार २०१४ इस बार शिवपुरी के शासकीय हायस्कूल सिंहनगर के प्राचार्य श्री मुकेश मेहता को दिया जाएगा। उन्हे ये पुरस्कार उज्जैन में २५ दिसंबर को मध्यप्रदेश नागर ब्राम्हण प्रतिभा प्रोत्साहन समिति के राज्यस्तरीय वार्षिक सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के रुप में सम्मान निधि, स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति-पत्र भेंट किया जाता है। यह पुरस्कार देवास के पूर्व सहायक जिला शाला निरीक्षक स्व. रमाकांत नागर की स्मृति में उनकी पुत्री एवं व्याख्याता श्रीमती संगीता विनोद नागर ने स्थापित किया है। इससे पूर्व यह पुरस्कार सर्वश्री हेमंत दुबे (शाजापुर), शीला व्यास (उज्जैन), दिलीप मेहता (देवास), महेश नागर (शाजापुर), मोहन नागर (उज्जैन) कमल नागर (राजगढ), संजय त्रिवेदी (उज्जैन) व मोहनलाल नागर (राजगढ) को प्रदान किया जा चुका है। शिवपुरी में २६ नवम्बर १९६२ को जन्मे श्री मुकेश मेहता श्री कैलाश नारायण मेहता व स्व. अनुसुईया मेहता

के सुपुत्र तथा स्व. डा. मनोहरलाल मेहता के सुपौत्र हैं। फिजीक्स में एम.एससी. तथा एम.एड. कर चुके श्री मेहता ने शिक्षा विभाग में अपनी सेवा की शुरुआत १९८८ में शाजापुर जिले के अकोदिया में व्याख्याता के रुप में की। बाद में शिवपुरी जिले में सुदीर्घ सेवाकाल के दौरान वे विज्ञान विषय की पुस्तक लेखन तथा म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा मिशन एक्सीलेंस कार्यक्रम अंतर्गत चयनित हुए। वर्ष २००७ में उन्हे नेशनल बाल विज्ञान कांग्रेस के सफल आयोजन के लिए सम्मानित किया गया। सहज सरल व्यक्तित्व के धनी श्री मेहता को वर्ष २००७ में शिक्षक दिवस पर जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया।

निःशुल्क यज्ञोपवीत संस्कार

ओंकारेश्वर में मार्कण्डेय सन्यास आश्रम (नागर घाट के पास) में वैदिक विधि से यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन आगामी बसन्त पंचमी पर किया जाएगा। 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों को इसमें सम्मिलित किया जाएगा। यज्ञोपवीत संस्कार का समस्त व्यय आश्रम समिति द्वारा वहन किया जाएगा, केवल ठहरने की व्यवस्था करना पड़ेगी। अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए एक हजार रुपए अग्रिम जमा करवाना पड़ेंगे, जो आयोजन स्थल पर पहुंचने पर वापस लौटा दिए जाएंगे। इच्छुक समाजजन जय हाटकेश वाणी कार्यालय में मो. 9425063129 पर बुकिंग हेतु सम्पर्क कर सकते हैं जल्दी से जल्दी।

म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति, उज्जैन

प्रतिभा सम्मान समारोह 2014 हेतु चयनित छात्र-छात्राओं की सूची

केजी1 - सप्त मेहता पिता संदीप मेहता उज्जैन 96.50 प्रतिशत से प्रथम, कु. प्रियांशी जोशी पिता संजय जोशी उज्जैन 92.50 प्रतिशत से द्वितीय एवं कौशल शर्मा पिता मनीष शर्मा उज्जैन 88.33 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **केजी2** - रक्षित नागर पिता हिमांशु नागर उज्जैन 99.00 प्रतिशत से प्रथम, आराध्य व्यास पिता संजय व्यास उज्जैन 98.50 प्रतिशत से द्वितीय, हिमांशु नागर पिता राजेश नागर उज्जैन 98.50 प्रतिशत से द्वितीय एवं कु. अन्वी व्यास कृष्णकांत व्यास उज्जैन 96.50 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **कक्षा पहली** - कु. सुनिधि मेहता पिता डॉ. नवीन मेहता उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, कु. आस्था मेहता पिता गिरीश मेहता उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, कु. अरण्या नागर पिता संदीप नागर उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, भव्य नागर पिता राजकमल नागर उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, कु. स्नेहा व्यास पिता मनोज व्यास उज्जैन 94.16 प्रतिशत से द्वितीय एवं गौरव शर्मा पिता लक्ष्मीकांत शर्मा उज्जैन 93.76 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **कक्षा दूसरी** - कु. आकृति मेहता पिता सुनील मेहता उज्जैन 74.50 प्रतिशत से प्रथम व कु. वंशिका नागर पिता अभिलाष नागर उज्जैन 74.12 द्वितीय स्थान पर रहे। **कक्षा तीसरी** - कु. मेघा नागर पिता शैलेन्द्र नागर उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, कु. राजनिधि मेहता डॉ. धर्मेन्द्र मेहता उज्जैन 89.30 प्रतिशत से द्वितीय एवं कु. आस्था जोशी पिता संजय जोशी उज्जैन 84.50 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **कक्षा चौथी** - रचित नागर पिता हिमांशु नागर उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, मंत्र नागर पिता संजय नागर उज्जैन 92.62 प्रतिशत से द्वितीय एवं अथर्व नागर पिता अवनीश नागर उज्जैन 83.14 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **कक्षा पांचवी** - कु. युक्ता मेहता पिता गिरीश मेहता उज्जैन 87.56 प्रतिशत से प्रथम, सौरभ शर्मा पिता लक्ष्मीकांत शर्मा उज्जैन 87.42 प्रतिशत से द्वितीय एवं सहज मिश्रा पिता नवीन मिश्रा उज्जैन 87.40 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **कक्षा 6वीं** - सुयोग्य व्यास पिता सुदीप व्यास उज्जैन 83.90 प्रतिशत से प्रथम, कु. हितेषी शर्मा पिता डॉ. मनोज शर्मा उज्जैन 83.60 प्रतिशत से द्वितीय, कनिष्क मिश्रा पिता मनोज मिश्रा उज्जैन 83.60 प्रतिशत से द्वितीय एवं वैदिक त्रिवेदी पिता संजय त्रिवेदी उज्जैन 79.71 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। कक्षा 7वीं की कु. पूनम व्यास पिता मनोज व्यास उज्जैन 93.77 प्रतिशत से प्रथम, मौलेश नागर पिता डॉ. धर्मेश नागर उज्जैन 88.80 प्रतिशत से द्वितीय एवं कु. प्रियांशी नागर पिता गोविन्द नागर उज्जैन 71.80 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहीं। कक्षा 8वीं की कु. रोशी मेहता पिता राजेश मेहता उज्जैन 95.00 प्रतिशत से प्रथम, कु. प्रियल नागर पिता आलोक नागर उज्जैन 92.40 प्रतिशत से द्वितीय एवं कु. ईशा नागर पिता अवनीश नागर उज्जैन 88.63 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे।

म.प्र. स्तरीय स्व. पं. सत्यनारायण जी त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, उज्जैन द्वारा)

कक्षा 8वीं - कु. चिन्मया पाण्डेय पिता हरीश पाण्डेय मक्सी 98.14 प्रतिशत से प्रथम, कु. रोशी मेहता पिता राजेश मेहता उज्जैन 95.00 प्रतिशत से द्वितीय एवं जय शर्मा पिता ऋषि शर्मा इन्दौर 94.05 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **कक्षा नवीं** - चिन्मय नागर पिता राजेन्द्र नागर शाजापुर 89.30 प्रतिशत से प्रथम, यशदीपव पण्ड्या पिता विजय पण्ड्या रतलाम 87.82 प्रतिशत से द्वितीय एवं अनुज मेहता पिता संतोष मेहता उज्जैन 83.50 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे।

विशिष्ट पुरस्कार

स्व. श्रीमती हेमकान्ता दामोदर मेहता स्मृति मंजूषा (श्री किरणकांत मेहता एवं श्रीमती शशिकला रावल, उज्जैन द्वारा)

1- हाईस्कूल/सेकण्डरी स्तर- कु. अक्षिता मण्डलोई आत्मज श्री राजीव श्रीमती सीमा मंडलोई खण्डवा

2- हायर सेकण्डरी/सीनियर स्कूल स्तर- अक्षित शुक्ल आत्मज श्री जितेन्द्र-श्रीमती शर्मिला शुक्ल, देवास

3- विश्व विद्यालय स्तर- श्रेयस व्यास आत्मज श्री पंकज व्यास, भोपाल

4- विशिष्ट उपलब्धि- कु. कृति नागर आत्मज मनोज रमाकांत नागर, देवास

पं. श्रीकान्त व्यास (इकलेरा माताजी) स्मृति पुरस्कार (श्रीमती शान्ता व्यास द्वारा)

स्नातक स्तर पर सर्वाधिक अंक- श्रेयस व्यास आत्मज श्री पंकज व्यास, भोपाल

स्व. श्री चन्द्रकांत त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार

हाईस्कूल/सेकण्डरी स्तर पर अंग्रेजी में सर्वाधिक अंक-

कु. अक्षिता मंडलोई आत्मज श्री राजीव मंडलोई, खण्डवा

गणकला रजत पदक (स्व. श्री गणगौरीलाल जी मेहता एवं स्व. श्रीमती कलावती मेहता की स्मृति में श्री जगदीश मेहता-श्रीमती रीता मेहता एवं परिवार द्वारा)

5वीं में सर्वाधिक अंक- कु. युक्ता गिरीश मेहता उज्जैन

8वीं में सर्वाधिक अंक- कु. चिन्मया हरीश पाण्डेय मक्सी।

निर्णायक- डॉ. के.पी. नागर, डॉ. कमलकांत मेहता, डॉ. रमाकांत नागर, विष्णुदत नागर उज्जैन।

स्व. मुखिया श्री कृष्णदास जी मेहता स्मृति पुरस्कार (श्रीमती सावित्री मेहता, शाजापुर द्वारा)

कक्षा 10वीं - कु.अक्षिता मण्डलोई पिता राजीव मण्डलोई खंडवा 95.00 प्रतिशत से प्रथम, कु. दक्षता नागर पिता राकेश नागर उज्जैन 91.20 प्रतिशत से द्वितीय, कु.ख्याति मेहता पिता आशीष मेहता इन्दौर 88.83 प्रतिशत से तृतीय, कु.साक्षी पुराणिक पिता विनोद पुराणिक इन्दौर 85.50 प्रतिशत से व कु.शैली शर्मा पिता शलभ शर्मा उज्जैन 85.50 प्रतिशत लाकर प्रोत्साहन स्थान पर रहीं।

स्व. पटेल श्री दुर्गाशंकर जी नागर, स्व. श्रीमती मनोरमा नागर एवं स्व. श्री बद्रीनारायण जी नागर लसुर्डिया ब्राह्मण स्मृति डी.एम.बी. पुरस्कार (श्री अनिल कुमार नागर वन संरक्षक, होशंगाबाद द्वारा)

ग्यारहवीं (वाणिज्य) - शिवेश शर्मा पिता मुकेश शर्मा उज्जैन 80.00 प्रतिशत से प्रथम व कु.आयुषी दवे पिता श्री सुनील दवे रतलाम 68.82 प्रतिशत से द्वितीय स्थान पर रहे। कक्षा **ग्यारहवीं (विज्ञान)** - प्रणव व्यास पिता प्रकाशचन्द्र व्यास उज्जैन 85.60 प्रतिशत से प्रथम, भव्य रावल पिता पंकज रावल भोपाल 82.00 प्रतिशत से द्वितीय एवं कु.नम्रता व्यास पिता मनोज व्यास उज्जैन 69.80 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहीं।

स्व. श्री समरथलाल जी मेहता स्मृति छात्रवृत्ति (श्रीमती श्रृंगारबेन मेहता, उज्जैन द्वारा)

बारहवीं (वाणिज्य) अक्षित शुक्ल पिता जितेन्द्र शुक्ल देवास 94.20 प्रतिशत से प्रथम स्थान पर रहे। **स्व. प्रदीप त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार बारहवीं वाणिज्य** - कु.अवनि शर्मा पिता शैलेन्द्र शर्मा रतलाम 81.00 प्रतिशत से द्वितीय स्थान पर रहीं। **बारहवीं (विज्ञान)** - महिम्न भट्ट पिता प्रवीण भट्ट रतलाम 92.20 प्रतिशत से प्रथम, कु.सलोनी व्यास पिता जय व्यास इन्दौर 92.00 प्रतिशत से द्वितीय एवं कु.जूही शर्मा पिता ऋषि शर्मा इन्दौर 91.40 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहीं। ए.आय. पीएमटी के रामकृष्ण नागर पिता डॉ.राजेन्द्र नागर उज्जैन 66.38 विशेष, संगीत कला प्रवेशिका के मंत्र नागर पिता संजय नागर उज्जैन 70.76 प्रथम एवं कु. मुक्ता नागर पिता महेश नागर उज्जैन 60.92 द्वितीय स्थान पर रहीं। **कु. सीमा त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार** (श्री कृपाशंकर त्रिवेदी धार द्वारा) **बीएस.सी.** - कु. स्वाति नागर पिता संजय नागर शाजापुर 78.17 प्रतिशत से प्रथम एवं कु. शुभ्रा त्रिवेदी पिता महेश त्रिवेदी उज्जैन 68.65 प्रतिशत से द्वितीय स्थान पर रहीं। बी.कॉम की कु. कल्याणी नागर पिता राजेन्द्र नागर उज्जैन 70.62 प्रतिशत से प्रथम स्थान पर रहीं। बी.कॉम ऑनर्स की कु. नुपुर रावल पिता पंकज रावल भोपाल 74.66 प्रतिशत से प्रथम स्थान पर रहीं। **स्व. डॉ. चुन्नीलाल जी शर्मा एवं स्व. श्रीमती अन्नपूर्णा शर्मा स्मृति पुरस्कार** (श्री विजय शर्मा, उज्जैन द्वारा) **बी.फार्मेसी** की कु. नेहा शुक्ल पिता लोकेश शुक्ल उज्जैन 69.56 प्रतिशत से प्रथम स्थान पर रहीं। एमबीबीएस की कु. अपूर्वा दवे पिता संजय दवे रतलाम 62.62 प्रतिशत से प्रथम, बीएचएमएस की कु. भक्ति रावल राजेन्द्र रावल खाचरौद 64.37 प्रतिशत से प्रथम, बीबीए की कु. पंखुरी मेहता पिता समीर मेहता इन्दौर 66.30 प्रतिशत से प्रथम स्थान पर रहीं। **स्व. संजय व्यास स्मृति पुरस्कार** (श्री आशीष कृष्ण गोपाल व्यास उज्जैन द्वारा) **बी.ई.** - श्रेयस व्यास पिता पंकज व्यास भोपाल 87.80 प्रतिशत से प्रथम, अर्पित नागर पिता कैलाशचन्द्र नागर उज्जैन 79.70 प्रतिशत से द्वितीय, श्रेयांश शुक्ल पिता कमलेश शुक्ल उज्जैन 75.20 प्रतिशत से तृतीय व अंशुल मेहता पिता सुरेश मेहता उज्जैन 75.20 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **बीएड** - श्रीमती प्रीति व्यास शाजापुर 85.07 प्रतिशत से प्रथम, अनुराग त्रिवेदी पिता नवीन त्रिवेदी उज्जैन 73.66 प्रतिशत से द्वितीय एवं ऋतुबाबा मेहता पिता भेरूलाल मेहता शाजापुर 72.66 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहीं। एआय प्रि पीजी एमडीएस की कु.सोनम नागर पिता डॉ. राजेन्द्र नागर 61.75 प्रतिशत से विशेष स्थान पर रहीं। **स्व. श्री भगवंतरावजी मण्डलोई (पूर्व मुख्यमंत्री म.प्र.) स्मृति** स्नातकोत्तर पुरस्कार (श्री अमिताभ मंडलोई, खंडवा द्वारा) **एम.ए. संगीत** - संजय शुक्ल पिता पं. कृष्णकांत शुक्ल इन्दौर 64.87 प्रतिशत से प्रथम, एमबीए कु. मोनिका नागर पिता श्री मोहन नागर उज्जैन 77.90 प्रतिशत से प्रथम, राकेश कुमार मेहता पिता एस.सी. मेहता रतलाम 65.53 प्रतिशत से द्वितीय, शुभम मण्डलोई पिता प्रदीप मंडलोई उज्जैन 61.16 प्रतिशत से तृतीय स्थान पर रहे। **एम. फार्मेसी** - कु. प्रिया मेहता पिता लव मेहता उज्जैन 80.30 प्रतिशत से प्रथम, पीजीडीसीए की छात्रा प्रगति मण्डलोई पिता शैलेष मंडलोई नागदा 71.50 प्रतिशत से प्रथम स्थान पर रहीं। पीएचडी वाणिज्य प्रबंधन के डॉ. नवीनकुमार मेहता पिता नरेन्द्र कुमार मेहता उज्जैन पूर्व में अंग्रेजी विषय में पीएचडी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। **पीएचडी रसायन** से श्रीमती अलका मेहता प्रो. नमीष मेहता भोपाल, पीएचडी ड्राइंग एण्ड पैंटिंग श्रीमती नीता जोशी संजय जोशी भोपाल, पीएचडी गणित श्रीमती हर्षा मेहता विश्वास मेहता रतलाम। मिलेनियम नेशनल स्कॉलरशिप परीक्षा में आराध्य व्यास पिता संजय व्यास उज्जैन, हेमांग नागर पिता राहुल नागर उज्जैन एवं अथर्व व्यास पिता शैलेन्द्र व्यास उज्जैन विशेष स्थान पर रहे। इंटरनेशनल ओलम्पियाड परीक्षा गणित, विज्ञान व अंग्रेजी के अथर्व व्यास पिता शैलेन्द्र व्यास उज्जैन विद्यालय में (विशेष) प्रथम स्थान पर रहे।

दिन बदल गए!

बंता: यार संता तुम्हें पता है मैं और प्रीतो तलाक ले रहे है।

संता (हैरान होते हुए): क्यों क्या हो गया? तुम दोनों तो बहुत अच्छे से रहते हो।

बंता: जब से हम लोगों ने शादी की है तब से प्रीतो मुझे बदलने की कोशिश में लगी हुई है। सबसे पहले उसने मुझे शराब पीने से रोका, फिर सिगरेट फिर इधर-उधर आवारा घूमने से।

उसने मुझे सिखाया कि अच्छे कपड़े कैसे पहनते है, उसने मुझे संगीत और कला के प्रति रूचि आदि सब सिखाये और स्टॉक मार्केट में कैसे निवेश करना है ये सब भी उसी ने सिखाया।

संता ने कहा, क्या तुम बस इसलिए नाराज हो कि उसने तुम्हें बदलने के लिए ये सब किया।

बंता: अरे मैं नाराज नहीं हूँ, मैं अब काफी सुधर चुका हूँ तो अब वो मुझे अपने लायक नहीं लगती।

भगवान-हाटकेश को लगा अन्नकूट का भोग

अतिथियों ने अपने उद्‌बोधन में कहा

भव्य आयोजन के लिए आयोजन समिति साधुवाद की पात्र

उज्जैन। नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास (हरसिद्धिपाल) एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्नकूट कार्यक्रम में अतिथिजनों ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि इस भव्य एवं ऐतिहासिक आयोजन के लिए, अन्नकूट महोत्सव समिति साधुवाद की पात्र है, इस प्रकार से नवीन आयोजन से समाजजनों के मिलन का एक नया अवसर मिला है, हमारी ऐसी कामना है कि यह आयोजन जल्द से जल्द नगर के साथ ही प्रदेश में भी ख्याति प्राप्त करें।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रातः इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर का पूजन अभिषेक न्यास अध्यक्ष सुरेन्द्र मेहता सुमन एवं श्रीमती ज्योति-ललित नागर, श्रीमती प्रेरणा-किरणकांत मेहता के द्वारा किया गया। पूजन अभिषेक पं. सतीश नागर, पं. अंकित नागर द्वारा सम्पन्न करवाया गया। पश्चात समाज के युवा गायक गजेन्द्र नागर ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी। इसके पश्चात भगवान हाटकेश के मुखौटे के सम्मुख पंडितों द्वारा स्वरित वाचन के साथ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी प्रेमनारायण जी नागर (शिवपुरी) न्यास के अध्यक्ष, सुरेन्द्र मेहता सुमन, डॉ. जी.के. नागर, न्यास के सचिव, संतोष जोशी, मनुभाई मेहता, न्यास के कोषाध्यक्ष रामचंद्र नागर, दिलीप त्रिवेदी, म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष राजेश त्रिवेदी टमटा, परिषद की महिला अध्यक्ष श्रीमती आभा मेहता, महासचिव लव मेहता, युवा परिषद अध्यक्ष हेमन्त व्यास, म.प्र. ना.परिषद अध्यक्ष उज्जैन इकाई डॉ. प्रदीप व्यास, दीपक शर्मा जय हाटकेशवाणी, रमेश मेहता प्रतीक अध्यक्ष प्रतिभाशाली छात्र प्रो. समिति, कुश मेहता हाटकेश समाचार, सूरज मेहता दैनिक अवंतिका, नीलेश नागर ब्रह्म समन्वय, मोहन जी शर्मा सक्रिय युवा कार्यकर्ता देवास ने समाजजनों को अन्नकूट महोत्सव की हार्दिक बधाई प्रदान की। इस अवसर पर गजेन्द्र नागर ने गणेश वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम में स्वागत भाषण अन्नकूट महोत्सव समिति के संयोजक गोविंद नागर ने दिया। न्यास एवं श्री हाटकेश्वर धाम निर्माण की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी न्यास के सचिव संतोष जोशी ने तथा अन्नकूट महोत्सव की विगत दो वर्षों की उपलब्धि की जानकारी न्यास के सहसचिव दीपक शर्मा द्वारा प्रदान की गई, पश्चात इष्टदेव भगवान हाटकेश को अर्पित कर 151 दीपकों से समाजजनों एवं माता-बहिनों ने महाआरती कर महाप्रसादी का लाभ प्राप्त किया। अन्त में आभार समिति के युवा कार्यकर्ता संजय जोशी ने प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन न्यास के सचिव संतोष जोशी ने किया।

- अन्नकूट कार्यक्रम में न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मेहता सुमन ने अपने माता-पिता स्व. श्रीमती बसंतीबाई मेहता- स्व. श्री गोवर्धनलाल मेहता की स्मृति में 21000/- रु. का सहयोग प्रदान किया।
- अगले वर्ष 2015 अन्नकूट कार्यक्रम के लिए न्यासी सदस्य विजयप्रकाश जी मेहता ने सहयोग राशि 21000/- देने की घोषणा की।
- कार्यक्रम की मुख्य विशेषता यह रही कि समाज की माता-बहिनों में इस कार्यक्रम के लिये अपार उत्साह था, 56 भोग के लिए अपने नाम कई दिनों पूर्व ही दे दिये थे, छप्पन भोग उज्जैन के अलावा-इंदौर-खजराना, राऊ, नागदा, तराना से भी आया था।
- माता-बहिनों एवं बच्चियों द्वारा धर्मशाला प्रांगण में आकर्षक विभिन्न प्रकार की रांगोली एवं

फूलों की रांगोली बनाई गई थी। इन्हीं के द्वारा ही महाप्रसादी के टेबल काउन्टर की व्यवस्था भी सुचारू रूप से की गई थी।

अन्नकूट भोग की व्यवस्था पं. निति नागर, पं. सुनील नागर, पं. अरविंद नागर, पं. सतीश नागर, पं. कन्हैयालाल मेहता द्वारा की गई।

अन्नकूट भोग प्रसादी का वितरण युवा टीम द्वारा व्यवस्थित तरीके से किया गया।

पं. जमनाप्रसादजी पाठक ने प्रसाद हेतु समस्त शक्कर एवं नमक अन्नकूट में प्रदान किया।

सन् 2015 अन्नकूट (56 भोग) की पूरी व्यवस्था विकास रावल द्वारा करने की घोषणा की गई।

कार्यक्रम में डॉ. नरेन्द्र नागर, सुरेश रावल, राकेश नागर, विजय प्रकाश मेहता, गिरिजाशंकर नागर, शिवजी जोशी, राजेन्द्र शर्मा, अशोक नागर (राऊ), आदर्श रावल, अंकित नागर इंदौर, चन्द्रकांत व्यास, अभिमन्यु त्रिवेदी (गड़बड़ नागर), दिलीप मेहता, विजय नागर, योगेन्द्र त्रिवेदी, अजय प्रकाश मेहता, पं. जमना प्रसाद पाठक, डॉ. ललित नागर, मनीष मेहता, संजय जोशी, अतुल मेहता, अमित नागर, कन्हैयालाल मेहता, विशाल नागर, देवेन्द्र मेहता, मुकेश शर्मा, योगेन्द्र नागर, शुभम रावल, दिनेश रावल, प्रमोद नागर, गौरव नागर, विकास नागर, आलोक नागर, महेश नागर, विनोद नागर इंदौर, डॉ. प्रकाश जोशी, प्रमोद त्रिवेदी मामाजी, कृष्णकांत शुक्ल, जगदीशचंद्र नागर, सुदीप मेहता, कैलाश नागर, हेमन्त नागर, सन्दीप मेहता, कैलाश नागर, ओमप्रकाश नागर करण, महेन्द्र शर्मा माकडोन, रमेश परोत नागर, विष्णुदत्त नागर, शांतिलाल नागर, सुरेश नागर, संजय नागर, मनोज शर्मा बेरछा, राजीव त्रिवेदी, राजेन्द्र नागर, महेन्द्र नागर, कमलकांत मेहता, मनोहरलाल शुक्ल, प्रकाशनाथ नागर, मनोहर नागर एवं श्रीमती अनामिका मेहता, श्रीमती वंदना जोशी, श्रीमती नेहा मेहता, श्रीमती सलोनी, श्रीमती प्रीति शर्मा, श्रीमती मंजू नागर, श्रीमती राधा नागर, श्रीमती रुपाली नागर, श्रीमती कविता मेहता, श्रीमती शान्ती मेहता, श्रीमती दीपिका मेहता, श्रीमती तृप्ति मेहता, श्रीमती सुशीला जोशी, श्रीमती शकुन्तला नागर, श्रीमती मनीषा शर्मा, श्रीमती अजंना नागर, कु. अवनी जोशी, कु. जया रावल, कु. रचना रावल, कु. आस्था, कु. प्रियांशी, कु. सलोनी एवं समाजजनों ने कार्यक्रम को सफल बनाया। ***प्रेषक- संतोष जोशी, उज्जैन***

डॉ. महेन्द्र नागर को अवार्ड

डॉ. महेन्द्र नागर को 26 नवम्बर 2014 को हरियाणा में संविधान निर्माण दिवस के अवसर पर चौधरी रणबीर सिंह हुडा इंटरनेशनल पीस एंड हार्मोनी अवार्ड प्रदान किया गया।

आमोद नागर रीजनल बिजनेस हेड बने

भोपाल। श्री आमोद नागर देश की अग्रणी टेलीकॉम कम्पनी रिलायंस जिओ इन्फोकॉम में रीजनल बिजनेस हेड नियुक्त हुए हैं। उन्होंने भोपाल में अपने नये पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। इससे

पूर्व श्री नागर पुणे में तिकोना डिजिटल नेटवर्क में सर्किल हेड थे। पूर्व में वे एयरटेल, रिलायंस इन्फोकॉम, एल्काटेल ल्यूसेंट एवं इन्डस टावर्स जैसी अग्रणी टेलीकॉम कम्पनियों में इन्दौर, चैन्नई, नागपुर, पुणे में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। बेस्ट परफारमेंस के आधार पर उन्हें कम्पनी की ओर से सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, श्रीलंका आदि देशों की यात्रा का अवसर भी मिला। ज्ञातव्य है कि श्री आमोद नागर स्वर्गीय श्री रामवल्लभ नागर एवं श्रीमती मधु नागर राजस्व कालोनी उज्जैन के सबसे छोटे पुत्र हैं।

श्री नागर रायपुर से देवास

श्री कृष्णकांत नागर वरिष्ठ प्रबंधक बैंक ऑफ महाराष्ट्र केरन बाजार रायपुर (छ.ग.) शाखा का स्थानान्तरण शाखा प्रबंधक देवास के पद पर हो गया है। उन्होंने अपना कार्यभार सम्भाल लिया है।

अविनाश जोशी को पुरुस्कार

श्री अविनाश जोशी (सुपुत्र श्री सिद्धनाथ जी जोशी) **सनावद** को श्रीराम फर्टिलाइजर एंड केमिकल्स के फिल्ड असिस्टेंट के रूप में कंपनी का प्रोडक्ट एनर्जी सर्वाधिक बिक्री करने पर करनाल (पंजाब) में आयोजित समारोह में एक्जीक्युटिव डायरेक्टर एवं बिजनेस हेड श्री सोवन चक्रवर्ती एवं श्री नरसिम्हाराव ने मंजूषा, प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया, आपको इस उपलब्धि पर नैनो कार भेंट की गई। श्री जोशी सनावद एवं बेड़िया क्षेत्र में कंपनी का काम देखते हैं।

कु. सौम्या को प्रथम अवार्ड

कु. सौम्या सुपुत्री-अमित जोशी देहली इंटरनेशनल स्कूल की कक्षा दूसरी की छात्रा ने अल्पायु में अंतरराष्ट्रीय नृत्य स्तर पर प्रयास के प्रति समर्पित भावना लिए वर्ष 2013-14 के पूर्ण सत्र में सर्वांगीण श्रेष्ठ नृत्य प्रदर्शन की उपलब्धि हेतु प्रथम पुरुस्कार से सम्मानित हो, मंजूषा प्राप्त की। यह स्वयं परिवार एवं समाज के गौरव में वृद्धि करने का नन्हा कदम है। बधाई।

प्रस्तुति- पी.आर. जोशी, उषा नगर इंदौर

कु. निधि नागर का सुयश

कु. निधि नागर (सुपुत्री. गिरीशचंद्र सौ. संध्या नागर) सुपौत्री स्व. श्री रमाकांत जी भट्ट स्व. श्रीमती शारदा देवी नागर कम्प्यूटर साइंस इंजीनियर कामनीजेंट पूना द्वारा पदोन्नति कर मेन चेस्टर (इंग्लैंड) भेजा गया। वे 6 नवम्बर 2015 तक मेनचेस्टर यू.के. में अपनी सेवाएं देंगी।

- जी.सी. नागर 9425076541

'माय एफ.एम. के रंगरेज' बने कार्तिक व्यास

कार्तिक व्यास (सुपुत्र श्री हेमेन्द्र व्यास) ने 'माय एफएम के रंगरेज' प्रतियोगिता में भाग लिया। जो कि पूरे इंदौर शहर के विभिन्न स्कूलों में आयोजित की गई। प्रतियोगिता के अंतर्गत भाग लेने वाले 2500 बच्चों में से टॉप 12 को चुना गया। इन चुनिंदा बच्चों की पेंटिंग माय एफएम के वार्षिक कैलेण्डर का हिस्सा बनेंगी। कार्तिक व्यास की पेंटिंग उनमें से एक होगी। इस अवसर पर कलेक्टर आशीष त्रिपाठी के द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनको समस्त व्यास, मेहता एवं भागवत परिवार की ओर से ढेरों शुभकामनाएं एवं आशीष।

- हेमेन्द्र व्यास

प्रेम करने वाले व्यक्ति के अन्दर भय, द्वेष आ ही नहीं सकता, क्योंकि प्रेम, स्वयं 'अभय' है।

HAPPY-BIRTHDAY

जन्म दिन दिसम्बर 2014
श्रीमती अलका जोशी 8
श्री आशुतोष पी. जोशी 10
श्री अमित पी. जोशी 14
कुमार ऋषित सौरभ नगर उदयपुर 21
श्री प्रदीप जाधव 24
श्री रक्षित शर्मा 26

प्रस्तुति-
पी.आर. जोशी,
इंदौर

अक्षत शर्मा (पुणे) 1 दिसम्बर
यश शर्मा (खंडवा) 9 दिसम्बर
स्मृति शर्मा (नासिक) 11 दिसम्बर
सुषमा नागर (इंदौर) 19 दिसम्बर
शरद शर्मा (नासिक) 22 दिसम्बर
नरेन्द्र मेहता 25 दिसम्बर
ईशु त्रिवेदी 25 दिसम्बर
शैला देसाई अहमदाबाद 2 दिसम्बर

प्रस्तुति-गायत्री मेहता
9407138599

योशिता पंड्या

10 दिसम्बर 2007

शुभाकांक्षी-मम्मी-पापा, दादा-दादी, नाना-नानी पंड्या एवं व्यास परिवार ऋषि नगर उज्जैन, 0734-2517824

अनमोल याज्ञिक

(सुपुत्र दीप एस. याज्ञिक)
5 दिसम्बर 1998
शुभाकांक्षी- माताजी अणिमा दीप याज्ञिक एवं परिवार
कोलकाता (पं. बंगाल)

वैष्णवी व्यास

(सुपुत्री. आवेश-सौ. सुषमा व्यास)
द्वितीय वर्षगांठ-18 दिसम्बर
दादा-दादी (नरेन्द्र सौ. मालती व्यास)
नाना-नानी (शरद सौ. विद्या व्यास)

आंचल रावल

सुपुत्री अजय कुमार-सौ. उमा रावल
14 दिसम्बर 2004
रावल एंड रावल परिवार
बड़ावदा और जावरा
9630013158, 9826052773

पूनम नागर

(सुपुत्री बालकृष्ण-सौ. शीतल नागर)
3 दिसम्बर
स्टेशन रोड, मक्सी

अंकुश त्रिवेदी (9 दिसम्बर 2014)

शुभाकांक्षी-कमलेश-उषा त्रिवेदी एवं समस्त त्रिवेदी परिवार उज्जैन
9977891389

विवाह वर्षगांठ

सौ. देवयानी-ऋषि इलाहाबाद
18 दिसम्बर

सौ. नताशा-अपूर्व वोरा मुंबई
25 दिसम्बर

सौ. प्रतिभा दिनकर वोरा मुंबई
25 दिसम्बर

सौ. भावना-जनक मुंबई
28 दिसम्बर

शुभाकांक्षी-
गायत्री मेहता
इंदौर
मो. 9407138599

MARRIGE-ANNIVERSARY

कृष्णचंद्र सौ. वीणा नागर
10.12.1974
40वीं वर्षगांठ पर बधाई
शुभाकांक्षी- आलोक नागर-सौ. ज्योति नागर, प्राची-शली नागर (पोतिआं)

सौ. पूजा-अर्पित मेहता

30 नवम्बर
शुभाकांक्षी- मेहता एवं नागर परिवार।

शुभकामनाएं आपको साथ-साथ

देखकर प्यारी सी छवि, जीजाजी ने मांगा था दीदी का हाथ
हाथ बढ़ाकर दीदी ने भी दिया निभाने का जीवनभर साथ
और बंधे जब परिणय सूत्र में, आशीर्वाद था बड़ों का साथ
बढ़ चले फिर जीवन पथ पर थामकर एक दूजे का हाथ
नन्हें-नन्हें कदमों से जब किसी के आने का आभास था
कुछ ओर नहीं ये तो और गहरे रिश्ते का आगाज था
छोटी-छोटी खुशियां थी और मीठी-सी तकरार भी साथ
हंसना-रोना, रूठना-मनाना भी चल रहे थे साथ ही साथ
गम के बादल छा रहे हो, या हो रही हो खुशियों की बरसात भी साथ
थामे रहे एक दूजे को और निभाया वो वचन जो लिया था फेरों के साथ
चाहे बड़ा हो या हो कोई छोटा आपको सबका ख्याल था
इसलिए तो सबके दिलों में आपका अलग ही मुकाम था
बिदा हुआ इस तरह आपके विवाह के 25 वर्ष का साथ
खिलता रहे यूं ही जीवन दोनों का, बना रहे सात जनमों का साथ
विवाह वर्षगांठ की शुभकामनाएं दे रही श्रद्धा बाबुल के साथ

आपकी - गुड्डी
9424011687

जीवन में जानना तो बहुत आसान है, किन्तु उसे जानकर आत्मसात करना बड़ा कठिन है।

रामजी की लीला है न्यारी...

भगवान श्रीरामजी की लीला होती ही न्यारी है कि लंका में जब पुल का निर्माण हो रहा था तो राम का नाम पत्थरों पर लिख देने से ही पत्थर तैरने लगे थे, उसी तरह जब इंदौर के प्रसिद्ध खजराना गणेश मंदिर में पं. अजय व्यास की 9 दिवसीय रामकथा के आयोजन रखा गया तो देखते ही देखते सारी व्यवस्थाएं जुटती गईं। सिख मोहल्ला के व्यास परिवार में नरेन्द्र जी व्यास के यहां जन्मे पं. अजय व्यास ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छी नौकरी भी कर ली थी। लेकिन प्रभु श्रीराम की भक्ति के चलते उन्होंने जय हाटकेशवाणी परिवार के सामने अपनी नौकरी छोड़ कर रामकथा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। जय हाटकेशवाणी परिवार ने खजराना गणेश मंदिर के पुजारी पं. अशोक भट्ट से सम्पर्क किया और गणेश दरबार में श्रीराम कथा की योजना बताई तो वे अभिभूत हो गए और उन्होंने मंदिर परिसर में श्रीरामकथा के आयोजन के लिए मंदिर की प्रबंध समिति से अनुमति दिलवा दी। साथ ही टेंट के खर्च का भुगतान भी किया। खजराना के पं. कन्हैया मेहता द्वारा कथा आयोजन को लेकर पूरे खजराना में पं. श्री व्यास को लोगों से मिलवाया गया। लोगों ने कथा में पूर्ण सहयोग किया। लड्डू पैनल के पं. चन्दू नागर ने मंच का डेकोरेशन करवाया। कथा के यज्ञ में सहभागी बनने के लिए पाटीदार समाज ने भी अहम योगदान दिया। नागर समाज के युवा समाजसेवी पं. भावेश शुक्ला ने बहुत ही नाममात्र के शुल्क पर साउण्ड सिस्टम उपलब्ध करवा दिया। पं. हरि मेहता ने पूरे आयोजन के दौरान सहयोग किया। नागर समाज के मक्सी निवासी बालकृष्ण जी नागर अपने साज एवं दो साथियों के साथ कथा में आ गए। जयहाटकेशवाणी परिवार द्वारा कथा में पूर्ण सहयोग एवं नगद राशि भी भेंट करने के अलावा प्रचार सामग्री में सहयोग किया गया। पं. अजय व्यास रामकथा के विशेषज्ञ माने जाते हैं और उन्होंने नौ दिनों तक अपनी वाणी से भक्तजनों पर अमृत वचनों की वर्षा की। देशभर में नागर समाज के जो भी परिवार श्रीरामकथा का आयोजन करवाना चाहते हैं, वे अवश्य सम्पर्क करें।

चित्त की प्रसन्नता, मन की शान्ति व हृदय का प्रेम ही स्वास्थ्य की अचूक औषधि है

बायपास रोड बनाम बायपास सर्जरी

बायपास सर्जरी का प्रिंसिपल बायपास रोड पर लागू होता है, जैसे बायपास रोड पकड़कर हम शहर जल्दी पहुंच जाते हैं, और यदि बायपास न हो तो शहर में किसी गंतव्य पर पहुंचने के लिए अनेक अवरोधों- रुकावटों का सामना करना पड़ता है, जिसमें दुर्घटना होने की संभावना भी रहती है। इसके विपरीत बायपास रास्ते में कोई रुकावटें नहीं होती। हां, इतना जरूर है कि बायपास रोड की भी समुचित देखभाल न हो, मेन्टेनेंस न हो तो सड़क भी उबड़-खाबड़ हो जाती है और रास्ते में अवरोध पैदा कर देती है। इसी तरह हृदय की बायपास सर्जरी में नई जोड़ी हुई नसों से रक्त, हृदय की पम्प करने वाली मांसपेशियों में जल्दी पहुंचता है, लेकिन बायपास सर्जरी पश्चात भी उसका मेन्टेनेंस की जरूरत होती है, खान-पान एवं अन्य सावधानियां बरतनी पड़ती है, आपकी जरा-सी लापरवाही शरीर के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

बायपास सर्जरी के बारे में सामान्यत: सभी जानते हैं क्योंकि यह बहुत सामान्य हो गई है तथापि बायपास क्यों किया जाता है? कैसे किया जाता है? यह जानना नितांत आवश्यक है- हृदय मांसपेशियों का बना होता हैं। यह शरीर को ऊर्जा और प्राणवायु पहुंचाता है। कहते है हृदय चोबीस घंटों में एक लाख बार धड़कता है। इसकी मांसपेशियों को निरंतर काम करने के लिये ऑक्सीजन युक्त खून लगता है, यह खून विशेष प्रकार की नलियों से मिलता है जिन्हें कोरोनरी आरटरिज कहते हैं - ये दो होती है, एक बायीं और दूसरी दायीं हृदय की बीमारियों की जांच कई प्रकार की होती है लेकिन मुख्य रूप से ई.सी.जी. है इसमें कुछ बदलाव आना कोरोनरी आरटरिज डिसीज के बारे जानकारी देता है और इसी से आगे का इलाज निर्धारित होता है। हृदय की बीमारियों की जांच एन्जियोग्राफी के द्वारा होती है।

हृदय की धमनियों एवं नली के अवरोधों का पता इसी से लगाया जाता है तत्पश्चात ही डाक्टर्स कोई निर्णायक स्थिति में पहुंचते हैं इस अवरोध से धमनी कमजोर हो जाती है। हृदय की धमनियों की बीमारी का मुख्य कारण गलत आदतें जीने के अस्वस्थ तौर तरीके- धुम्रपान, तम्बाखू, अल्कोहल, जंक फूड उक्त रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा और सबसे महत्वपूर्ण तनाव है जो आज के युवाओं के लिय चेतावनी है और आज का युवा जानते हुए भी कि यह शरीर के लिए हानिकारक है और यह भी जानते हुए कि आज उस पर पूरे परिवार की जवाबदारी है आपकी जरा-सी लापरवाही शरीर को तो नुकसान पहुंचाती है तथा साथ ही धनाभाव के कारण आप कर्ज में भी हो जाते हैं, जिससे आप कभी उभर नहीं पाते। तो क्यूं न हम अपनी दिनचर्या में सावधानी बरतें?

बायपास सर्जरी भी दो प्रकार की होती है एक तो वह जिसमें हृदय को खाली करके एवं कुछ दवाइयां देकर कुछ देर के लिए रोककर बाईपास सर्जरी की जाती है एवं दूसरी बीटिंग हार्ट सर्जरी इसमें हृदय को रोका नहीं जाता है हृदय धड़कता रहता है और इसमें हड्डी को काटकर हृदय तक पहुंचा जाता है और धड़कते हुए दिल में नसों को जोड़कर बायपास सर्जरी की जाती है, इसमें शरीर के किसी भाग से नस निकालकर उसे हृदय की धमनी से जोड़ा जाता है। यही प्रिंसीपल बायपास रोड पर लागू होता है। मरीज की सफल सर्जरी उसकी इच्छा शक्ति पर निर्भर करती है और वह प्रबल होना चाहिए। इस दौर से हाल ही में मैं गुजर चुका हूं। इस दरमियान विचारों का आदान-प्रदान नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों चलते हैं। जीवन शंकास्पद लगने लगता है अब क्या पता कितने दिन अथवा साल की वारंटी है। कई बार भरा-सा लगने लगता है। लेकिन कहते हैं दवा से ज्यादा दुआ काम आती है आपके चित परिचित लोग आपको शुभकामना भी देते हैं। हिम्मत दिलाते हैं बड़ों का आशीर्वाद आपके साथ होता है और पत्नि बच्चों की सतत् ईश्वर से प्रार्थना आपका बेड़ा पार लगा देती है, वैसे समय में वक्त का पता नहीं चलता, अपनों के साथ, पर अपनों का पता चलता है वक्त के साथ। ऐसे समय में मालूम पड़ जाता है कि आपके कितने शुभचिंतक हैं, कितने लोग आपकी इस विषय परिस्थिति में आपके साथ खड़े रहे- मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मैंने अपनों का आंकलन कर लिया और उसी दिन से सोच लिया-

बहुत जी चुके उनके लिये, जो मेरे लिये सब कुछ थे,

अब जीना है उनके लिये जिनके लिए मैं सब-कुछ हूं। इस लेख के माध्यम से मैंने अपने विचार, अनुभव आपसे साझा किए हैं- शायद आपको ठीक लगे।

- दिलीप मेहता, इन्दौर
9425348497

मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण निर्देशिका 2015/इन्दौर

नाम	पता	सम्पर्क नं.	कार्यरत	ब्लड ग्रुप
नागर विजयकुमार	111, वैभव नगर, सेक्टर-बी, कनाड़िया रोड़-452016	98275-00825	से.नि.बैंक अधिकारी	B+

नि:शुल्क प्रविष्ठि

हाइटेक होगा मध्यप्रदेश नागर समाज

संभवत: फरवरी 2015 के पश्चात मध्यप्रदेश में नागर ब्राह्मण समाज को किसी कार्यक्रम हेतु निमंत्रण पत्र छपवाने एवं भेजने की जरूरत नहीं रहेगी। मासिक जय हाटकेश वाणी द्वारा एक ऐसी निर्देशिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें समाज के सभी सज्जनों के मोबाइल नम्बर उपलब्ध रहेंगे, अत: किसी भी आयोजन सुख, दु:ख की खबर एसएमएस से दी जा सकेगी। साथ ही इस निर्देशिका में कार्यक्षेत्र, अर्थात समाजजन क्या कारोबार अथवा नौकरी कर रहे हैं? उनका ब्लड ग्रुप आदि भी प्रकाशित किए जाएंगे। मध्यप्रदेश में यह अपने तरह का प्रथम प्रयास है, जिसके द्वारा भविष्य में निमंत्रण पत्र छपवाने एवं उन्हें भेजने के बोझ से बचा जा सकेगा। सारी सूचनाओं का तुरन्त आदान-प्रदान हो सकेगा।

परिवार की फोटो सहित सम्पूर्ण जानकारी का प्रकाशन निम्न साइज में 1000/-

डॉ. नरेन्द्र नागर (सेवानिवृत्त प्रोफेसर, संचालक एसजीएसआयटीएस) ब्लड ग्रुप B+
डी.एच. 124, स्कीम नं. 74-सी, विजय नगर-452010, 0731-4060123, 98934-96123
धर्मपत्नी-**श्रीमती माधुरी नागर** "होममेकर" ब्लड ग्रुप A+
सुपुत्र-**अनुराग नागर** (बी.ई.एम.एस.) कार्यरत-पेरिस (फ्रांस)
सुपुत्री-**श्रीमती अस्मिता उपाध्याय** (एम.बी.ए.) निवास : वाशिंगटन डी.सी. (यु.एस.ए.)
Email : asmi06@gmail.com

जन्मदिन
पर
शुभाशीर्वाद
यशस्वी
24 दिसम्बर
मिष्ठी
29 दिसम्बर
समस्त शर्मा
जय हाटकेश वाणी
एवं चैतन्य लोक परिवार
94250 63129/98260 95995/99262 85002

स्व. दादा श्री शंकरलालजी नागर तृतीय पुण्य स्मरण
दि. 07-12-2014
आपने सबको दिया दुलार, आपकी स्मृतियां है अपार
आपके कर्म हमारी प्रेरणा है, आपका व्यवहार है हमारा सूत्रधार
आप ही हमारा विश्वास हो, जिसे कभी ना भूल पायेंगे वो प्यारा अहसास हो
स्व. दादा
श्री शंकरलालजी नागर
महेन्द्र (प्रिंस) सौ.कनुप्रिया नागर
विजेता (ईशा) नागर, सौ. श्वेता-श्री सौरभ दवे
एवं समस्त नागर, व्यास, शर्मा एवं दवे परिवार
सादर
श्रद्धा
नमन
सौ.सुशीलादेवी नागर
सौ.रंजना-सुशील नागर
सौ.सुमन-सतीश नागर

मेरे पम्प की वारण्टी तो 2 साल की है। और आपकी ?
1956 से मेरे पम्प के निर्माता TEXMO INDUSTRIES है। और आपके ?
प्रो. रविशंकर नागर
Taro
बोरवेल सबमर्सिबल
TEXMO
ओपनवेल सबमर्सिबल
(3 Phase, Above 1.0 HP)
अधिकृत विक्रेता
पम्प डिस्ट्रीब्यूटर
जी-1, बाबादीप कॉम्प्लेक्स, सियागंज, इन्दौर फोन: 9301530015

आठवें जन्मदिन पर हार्दिक-हार्दिक बधाईयाँ

फूलों से चेहरे पर
गुलाब की पंखुड़ी सी
मुस्कान सदा बनी रहे,
जीवन बीते सुख से सारा
खुशियों की ना कमी रहे...

कु. कनिष्का
6 दिसम्बर

बधाईकर्ता-
श्रीमती कमलाबाई शर्मा (पर नानी), दिनेश-किरण शर्मा (नाना-नानी),
शान्तीलालजी-मन्जु शर्मा (दादा-दादी), मनीष-अमिता शर्मा (पापा-मम्मी),
दिनेशजी-परिणीता नागर (मौसाजी-मौसीजी), अभिषेक शर्मा (मामाजी)
गोविन्द शर्मा (चाचाजी), कार्तिक शर्मा (भाई) एवं समस्त शर्मा परिवार
प्रतिष्ठान : शर्मा विडियो विजन, 'हिंग्लाज मेन्शन' (दूसरी मंजिल)
79, अहिल्या पल्टन, इन्दौर मो. 77468 05812

पं. यश मेहता को जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

सज्जनजी वर्मा
रिकु वर्मा
जय वर्मा

पं.यश मेहता
21 दिसम्बर

बधाईकर्ता :
धर्म के माता-पिता-ओमप्रकाशजी-राजश्री, सुनीता वर्मा
गायत्री मेहता (मम्मी) अतुल-सीमा वर्मा (मामा-मामी)
हरिश-मेघा नागर (जियाजी-जीजी), दीक्षाशी, निखिलेश (भांजा-भांजी)
माँ अन्नपूर्णा टिफीन सेन्टर, 120, गणेशपुरी, खजराना, इन्दौर
97538 77314, 77480 17100

GMP CERTIFIED

दाद, खाज, खुजली से परेशान हैं?

चंद्रश्री

गज़ब

लोशन एवं मल्हम लगाइये

A SYMBOL OF QUALITY

CHANDRASHREE LABORATORIES & FARM PRODUCTS P. LTD., RAO (INDORE) 453 331
13, Janki Nagar, Indore Mo. 98260 46013

श्री सांई नाथाय नमः
आनन्दपूर्वक विवाह के 25 वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ
8 दिसम्बर
Happy 25th Anniversary
कमलेशजी-सौ.उषा नागर
09460477348
आशीषजी-सौ.नेहा मेहता
094794 45626
शुभाशीष
एवं
बधाई कर्ता
विद्यादेवी स्व. नारायणप्रसादजी शुक्ल
शकुन्तलादेवी स्व. नटवरलालजी मेहता
श्रीमती इन्दु-लालशंकरजी मेहता
बाबुल-सौ.श्रद्धा मेहता, आशीष-सौ.मोना मेहता,
गौरव-सौ.प्रीति मेहता, सुशीलजी-सौ.अनिता नागर,
सुनीलजी-सौ.रेणु पौराणिक, प्रखर, पूर्वा, रक्षा, पंखुरी, समर्थ,
साक्षी, अक्षिता, सार्थक, अर्चित, रचित, अवनि, शुभ, शौर्य, सोहम
प्रतिष्ठान : समर्थ ज्वेलर्स, उषा नगर, इन्दौर

प्रथम विवाह
वर्षगाँठ
पर
बधाईयाँ
पं. विनोद-सौ. तरुणा नागर
(दिनांक 10 दिसम्बर 2014)
शुभाकांक्षी-
पं. रामप्रसाद-श्रीमती कला नागर (पिताजी-माताजी)
संजय-सौ.अनिता नागर, इन्दौर, शैलेन्द्र-सौ.नंदनी मेहता, पटलावद
सौ.शोभा-सतीशजी व्यास, हाटपीपल्या, सौ.रेखा-विमलजी व्यास, लसुर्डिया ब्राह्मण
सौ.सीमा-गोपालजी शर्मा, खड़ी (शाजापुर) एवं समस्त नागर परिवार
313, सुखदेव नगर, इन्दौर मो. 99777 77531 /78799 98659

यह कैसी आत्मा की शांति..?

हिन्दू धर्म में ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के पश्चात आत्मा तेरह दिनों तक घर में ही रहती है तथा समस्त क्रिया कर्म पूर्ण होने के पश्चात अर्थात् तेरहवां (पगड़ी रस्म) आदि होने के बाद ही परमधाम को जाती है, परन्तु बड़े दुःख के साथ यहां लिखने में आता है कि समाज में जहां-जहां भी तेरहवां कर्म होता है तथा जिसमें समाजजन एवं परिचित एकत्र होते हैं, वहां पुरुष वर्ग तो ठीक है परन्तु महिलाएं जोर-जोर से आपसी चर्चाएं करती हैं, कई जगह तो आत्मा की शांति के लिए किए जा रहे मौन के बीच भी आवाजें गूंजती रहती हैं। मान्यता के अनुसार उस दिन आत्मा परमधाम की ओर जाने वाली होती है तथा उसकी शांति के लिए सब एकत्र होते हैं ऐसी स्थिति में हल्ला-गुल्ला करना दुर्भाग्यपूर्ण है। कई स्थानों पर इसी अवसर पर समाज के प्रबुद्धजन शब्दांजलि भी प्रस्तुत करते हैं, वे दिवंगत के जीवन परिचय के साथ ही समाज में चल रही

रचनात्मक गतिविधियों की चर्चा भी यहीं करना चाहते हैं। और देखा जाए तो यह इसके लिए बहुत अच्छा अवसर भी होता है। कई बार समाज के इन प्रबुद्धजनों की आवाज नक्कारखाने में तुती की आवाज जैसी हो जाती है, क्योंकि महिलाओं की आवाज इस समय भी गूंजती रहती है, वे न तो स्वयं सुनना चाहती है, न सुनने देती हैं। यह यक्ष प्रश्न है कि क्या हम तेरहवें के अवसर पर अपनी-अपने घर की चर्चा करने आए हैं अथवा मृतात्मा के बारे में चर्चा करने, उसकी शांति पूर्ण विदाई के लिए आए है। आप देखिए कि समाज में जितने भी आयोजन होते हैं उनमें इस तरह के एकत्रीकरण या भाषण नहीं होते हैं। विवाह समारोह में भी सब एकत्र होते हैं परन्तु क्या वह भाषण का अवसर होता है? या परिचय सम्मेलन आदि वहां तो भाषण सजा की तरह होते हैं। केवल एक ही सामाजिक कार्यक्रम तेरहवां (पगड़ी रस्म) का होता है जहां समाजजन एकत्र होते हैं तथा समाज के बारे में चर्चा कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में महिलाओं का व्यवधान बड़ा नागवार गुजरता है। पिछले दिनों कुछ समाजजनों ने यह मुद्दा मुखरता से उठाया कि सामाजिक पत्रिका को इस विषय में जनमत तैयार करना चाहिए, जय हाटकेश वाणी की पाठक महिलाएं प्रमुख रूप से हैं अतः हम उनसे विनम्र निवेदन करते हैं कि आत्मा की शांति के लिए जहां आप जाती है वहां स्वयं भी शांत रहने का प्रयत्न करें। प्रबुद्धजनों की बातों को ध्यान से सुने तथा उन्हें गुनें। क्योंकि समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने के विचार-विमर्श का यह अच्छा अवसर होता है। इस सम्बन्ध में अपने विचार 25 दिसम्बर 2014 तक अवश्य भिजवा देवें। इन्हें आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

- सम्पादक

धन से शैय्या खरीदी जा सकती है, नींद नहीं।
धन से पुस्तकें खरीदी जा रही हैं, ज्ञान नहीं।
धन से भोजन खरीदा जा सकता है, भूख नहीं।
धन से दवाएं खरीदी जा सकती हैं, स्वास्थ्य नहीं।
धन से मकान खरीदा जा सकता है, घर नहीं।
धन से विलासिता खरीदी जा सकती है सभ्यता नहीं।
धन से आमोद-प्रमोद खरीदा जा सकता है, खुशी नहीं।
धन से प्रसाधन खरीदे जा सकते है, सुन्दरता नहीं।
धन से नौकर खरीदा जा सकता है, मित्र नहीं।
धन से शक्ति खरीदी जा सकती है, प्रभाव नहीं।
धन से इंसान खरीदे जा सकते हैं, इंसानियत नहीं।

- जे.पी. नागर
बनेया, जिला - टोंक, राजस्थान 9694318780

सेर पे सवा सेर!

एक छोरा नया नया ब्याहा था, पहली बार ससुराल गया। उसनै घणा बोलण की आदत थी, चुपचाप ना रहया जाया करता। उसकी सासू भी कुछ कम ना थी, सारा दिन फिजूल की बात करती रही।

सांझ नै सास परेशान होगी, छोरा तै उसतै भी घणा बोलै था। वा आपणे उस बटेऊ तै बोली, बेटा, सुसराड़ में घणा ना बोल्या करते।

छोरे नै फट जवाब दिया, तू के आपणी बूआ कै आ रही सै? तेरी भी तै ससुराड़ सै!!

विषय - प्यार कर देता है पार

ईश्वर और इश्क को पाना एक समान

जी हां प्यार कर देता है पार, यह सत्य है, पर इस मंजिल को पाना बड़ा ही कठिन है। यह योग ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होता है। प्यार करना और पाना इतना आसान नहीं जितना दिखाई देता है। गालिब ने कहा है-

'ये इश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लीजिए,
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है'

हम ये समझ सकते हैं कि प्यार कितना कठिन कार्य है। ईश्वर को पाना और इश्क को पाना मेरे विचार से समान ही है। ईश्वर को पाना और इश्क को पाना, मेरे विचार से समान ही है। वैसे ही प्यार पाना भी बड़ा ही मुश्किल कार्य है, कदम-कदम पर अनेकों अवरोधों को सामना करना पड़ता है। कहां है :-

बाबूजी धीरे चलना, प्यार में जरा सम्भलना, बड़े धोखे हैं, हां बड़े धोखे हैं, इस प्यार में, बाबूजी धीरे चलना, जरा...

आज के समय में सच्चा प्यार जिसे प्राप्त हो जाए वह तो निश्चित रूप से मुकद्दर का सिकन्दर ही कहा जाएगा, किसी सुन्दर स्त्री या अति सुन्दर स्त्री को देखकर उसके पीछे पड़ जाना उसको परेशान करना तथा किसी भी तरह से उसको अपने जाल में फंसाकर प्यार करना या विवाह करने के लिए मजबूर करना ऐसा प्यार और विवाह कर लेना पुरुष को कभी भी सुख नहीं दे सकता। क्योंकि जिस प्यार या विवाह की बुनियाद ही धोखा या फरेब पर आधारित होगी, वह करने वालों को कभी सुख नहीं दे सकता। प्यार के मार्ग पर चला जाना आसान नहीं।

कहा है :- मुहब्बत कि राहों में चलना सम्भल के,
यहां जो भी आया गया हाथ मल के, मुहब्बत की राहों में...
न पाई किसी ने मोहब्बत की मंजिल,
कदम डगमगाए जरा दूर चलके, मुहब्बत की ...

इस प्रकार हम जान सकते हैं कि प्यार की राहें बड़ी ही कठिन और कांटों भरी होती है। ईश्वर की कृपा से ही सच्चा प्यार, जो पार लगा दे प्राप्त हो सकता है, अन्यथा पार लगाने वाला प्यार दुर्लभ ही है :- प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है।

इसी प्रकार विवाह के बारे में भी कहा जाता है कि जोड़ी तो ऊपरवाला ही बनाता है। कोई इस बात को सही मानता है कोई नहीं मानता। जो भी हो परन्तु किसी को भी धोखा देकर, डरा धमकाकर, किसी भी तरह अपने जाल में फंसाकर अन्याय पूर्ण तरीके से मजबूर करके प्यार या विवाह करना कभी सुख नहीं दे सकता। क्योंकि प्रकृति का नियम है- जैसा करोगे वैसा ही भरोगे। छल कपट द्वारा किया गया प्यार या विवाह भविष्य में कभी भी शुभ फल नहीं देगा, हो सकता है भविष्य में हत्या या आत्महत्या तक पहुंचा दे। क्योंकि जिस प्यार या विवाह का प्रारम्भ ही बुराई व फरेब से होगा उसका अन्त भी बुराई से ही होगा। कहावत है :- फर्स्ट इम्प्रेशन इन दि लास्ट इम्प्रेशन। अतः सोच विचार कर ही कदम बढ़ाना चाहिए। अन्यथा इस संसार सागर में हमें डूबने से कोई नहीं बचा सकता। हमें अपने आपको डूबने से बचाना होगा।

पूर्व समय में माता-पिता बचपन में ही शादी सम्बन्ध कर देते थे। उससे यह लाभ होता था कि लड़के और लड़की का लक्ष्य निर्धारित हो जाता था, भटक जाने की सम्भावना बहुत ही कम होती थी और गृहस्थियां चला करती थी। परन्तु आज का समय अलग है, आज आप स्वयं अपना भला-बुराकर समझकर अपना जीवन साथी चुन सकते हैं। एक दृष्टि से देखा जाए तो यह समय अच्छा भी है, अपने भविष्य को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए अपना मन पसंद जीवन साथी चुन सकते हैं। परन्तु ऐसा न होकर युवक-युवती अपना भविष्य परेशानी भरा बना लेते हैं और ऐसा होता है भौतिकता से लगाव के कारण, आपस में एक-दूसरे के अहं (अहम्) टकराने के कारण, जिस सुनहरे जीवन को हंसी-खुशी से व्यतीत करना होता है, वह जीवन लड़ाई झगड़ों कोर्ट कचहरी, तूतू-मैं-मैं और टेंशन में व्यतीत होता दिखाई पड़ता है। अपने जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास करना चाहिए। संसार में समझ आने पर हम कई प्रकार के सपने देखते हैं, लेकिन हमारे ही द्वारा परिस्थितियों का ऐसा निर्माण हो जाता है कि हमारे द्वारा देखे गए सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं। जो युवक-युवती गृहस्थ संसार में प्रवेश करने वाला है या जो भविष्य में पर्दापण करेंगे वे अत्यन्त ही सोच विचार कर अपने कदम आगे बढ़ाएं, जीवन भर रोना है या हंसना है। जीवन तो रोते-रोते भी बीत जाता है और हंसते-हंसते भी निर्णय आपको ही करना है। इस अनमोल जीवन को नासमझी में न गंवा देना। मान लो आपको अपने लिए कोई गाड़ी खरीदना है तो गाड़ी चलाना आना चाहिए। गाड़ी कन्ट्रोल करना आना चाहिए अन्यथा हमेशा एक्सीडेंट की सम्भावना बनी रहेगी, जब तक आप उसका ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते। मान लो गाड़ी चलाना आपको आ भी गया तब भी गाड़ी को कन्ट्रोल करना भी तो आना आवश्यक है। विवाह में भी ऐसा ही है, विवाह के बाद स्त्री पुरुष को अपना व्यवहार, दृष्टिकोण आदि बहुत कुछ बदलना पड़ता है, तभी सामंजस्य बैठ पाता है। पुरुष ब्रह्म है और स्त्री माया, अतः माया का ही यह मायावी संसार है। जब तक पुरुष ब्रह्म ज्ञान से अपने को सक्षम नहीं बनाएंगे। हर मोड़ पर माया से हारना है। समाज में किसी प्रकार की स्वयं के कारण गन्दगी न फैले ऐसे प्रयास करना चाहिए। समाज में अच्छे विचार फैले, अच्छे कार्य की प्रेरणा मिले ऐसा प्रयास करना चाहिए। यही समाज के प्रति उन्नति में हमारा योगदान सर्व श्रेष्ठ होगा।

धन्यवाद

- सुरेन्द्र शर्मा
देवास

प्यार केवल धरोहर नहीं, पार कराने का सशक्त साधन भी

पांच शब्दों से बने इस वाक्य का रहस्य जानने से पूर्व सर्वप्रथम हम वाक्य के प्रथम शब्द प्यार की कुछ बात करें - संत कबीर ने प्यार के बारे में कहा था- यह प्रेम को पंथ कराल महा, तलवार की धार पे धावनो है। प्यार की डगर अत्यंत कठिन है- वैसे ही जैसे तलवार की धार पर चलना। महान कवि बोधा ने कहा- हम कौन सों पीर कहें अपनी, दिलदार तो कोऊ दिखावत् नाहीं।। मीरा ने कहा- माईरी मैं का से कहूं-पीर अपने जिया की। महादेवी वर्मा ने संधिनी में कहा- तुमको पीड़ा में ढूंढा तुममें ढूंढूंगी पीड़ा। अर्थात प्यार एक पीर भी है। सत्य सांई बाबा ने कहा- प्यार देने में और क्षमा में रहता है, स्वार्थ लेने में और लेकर भूल जाने में रहता है। अर्थात प्यार जहां स्वार्थ-विहिन होता है वहीं स्वार्थ में प्यार-विहीनता निहित है।

क्या कभी पेड़ का साया पेड़ का काम आया? उसने तो फल भी सदा दूसरों के लिए पैदा किए, वैसे ही नदी में अपना नीर और धेनु ने अपना क्षीर सदा दूसरों को ही दिया। अत: सदा दूसरों के लिए जीना भी प्यार का ही एक स्वरूप है।

प्यार उस परिस्थिति को भी कहा गया जिसमें दूसरों की खुशी अपनी स्वयं की खुशी से ज्यादा महत्वपूर्ण समझी जाती है (रॉबर्ट हेनली)

प्यार को विश्वास की तरह भी माना गया, इनमें एक समानता है कि इन दोनों में कोई भी जबरदस्ती पैदा नहीं किया जा सकता। विश्वास बनाए रखने के लिए इन तीनों बातों का निर्वहन अत्यावश्यक है। वादा निभाना, पारदर्शिता और जिम्मेदारी निभाना, सच्चा प्यार भी इन्हीं पर टिका रहता है। प्यार को लाल मिर्च की तरह भी बताया जाता है जिसमें सिजलिंग तो होती है वह आंखें भी नम कर देता है। थॉमस फुलर ने प्यार के बारे में क्या खूब विचार व्यक्त किया है- प्यार को धीरे-धीरे परवान चढ़ने दो जल्दबाजी में उसकी सांसे टूटने का खतरा बना रहता है। जिन लम्हों की उंगली थाम कर प्यार एक टहनी से एक घने वृक्ष में तब्दील होता है, उन लम्हों को संजोने की प्रक्रिया प्यार की गहराई और उष्णता बढ़ाती है और फिर जीवन मानो संगीतमय हो जाता है, प्यार की गहन अनुभूति तभी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच पाती है, इससे ही सच्चे प्यार की संज्ञा दी गई है।

लैला-मजनू... हीर-रांझा... जैसे प्रेमी लुप्त हो गए किन्तु प्यार लुप्त नहीं हुआ। वह आज भी शाश्वत है- उसकी खुशबू, उसका परिमल आज भी ताजा है। अब बात करते हैं प्यार कर देता है पार के अंतिम शब्द पार की। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट की परी एलीनर रूजवेल्ट के अनुसार नारी एक टी-बैग की तरह होती है वह कितनी स्ट्रांग है यह तभी कहा जा सकता है जब वह हॉट वाटर (मुसीबत) में न पड़ जाए। बेट डेविस ने तो यहां तक कह डाला कि केवल एक स्ट्रांग महिला ही एक वीक पुरूष से विवाह कर सकती है। पतियों की सृष्टि करते समय भगवान ने नारी जाति को यह वचन दिया कि अच्छे और आदर्श पति अब दुनिया के हर कोने में उपलब्ध होंगे लेकिन फिर भगवान ने दुनिया ही गोल बना दी। अत: अच्छा पति ढूंढना एक कला बन गया और फिर उसे संभालकर रखना नारी का एक कर्तव्य हो गया।

नारी को नर मानवता की दुनिया के दो पंख कहे गए हैं- जब तक ये दोनों बराबर नहीं होंगे, तब तक मानवता का पंछी उत्तांग ऊंचाईयों को कैसे छू सकेगा। नारी की करुणा, दया और प्यार असीम होते हैं। अत: उसी में सुख-शांति स्थापित करने की क्षमता होती है। प्यार केवल एक धरोहर ही नहीं है वह मुक्त कराने, पार कराने का एक सशक्त साधन भी है- टैगोर ने भी यही कहा था।

प्यार का एक छोर जहां इनफिनिटी (अनंत) पर है वही दूसरा छोर इंटरनिटी (शाश्वतत्व) पर होता है- अत: प्यार करने वाले अन्वेषक अवश्य ही जन्ममरण की श्रंखला से मुक्त हो जाते हैं, प्यार में इतनी ताकत है।

हमारे संतों (तुलसी, सूर, कबीर, मीरा, नरसी मेहता...) ने प्यार की इस ताकत को पहचाना और इसी के जरिये वे इस भव सागर से पार हो गये।

कबीर ने तभी कहा-

कहत कबीर सुनो भाई साधो,
पार उतर गये संत जना रे।

-मोरेश्वर मंडलोई, खंडवा

हिन्दू विवाह एवं दहेजप्रथा

हिन्दू धर्म में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक माना गया है। विवाह शब्द, वि+वाह से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- विशेष रूप से (उत्तरदायित्व को) वहन करना। हिन्दू धर्म में इसे पाणिग्रहण संस्कार के रूप में भी जाना जाता है। अन्य धर्मों में विवाह पति एवं पत्नी के बीच एक प्रकार का करार होता है जिसे विशेष परिस्थितियों में तोड़ा भी जा सकता हैं परन्तु हिन्दू-विवाह पति एवं पत्नी के बीच जन्म जन्मान्तरों का सम्बन्ध होता है। अग्नि के सात फेरे लेकर दो तन, मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। हिन्दू विवाह पति-पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध से अधिक आत्मिक सम्बन्ध होता है इसी कारण इसे अत्यंत ही पवित्र माना गया है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार चार आश्रमों में से ग्रहस्थ आश्रम के लिए पाणिग्रहण संस्कार (विवाह) नितांत आवश्यक हैं। हिन्दू विवाह के निम्नांकित आठ प्रकार हैं :-

1- **ब्रह्म विवाह-** वर तथा वधु की सहमति से समान वर्ग के सुयोग्य वर से कन्या का विवाह निश्चित कर देना। (प्रचिलित अरेन्ज्ड मेरेज इसी श्रेणी का है)।

2- **दैव विवाह** - किसी सेवाकार्य विशेषत: धार्मिक अनुष्ठान के मूल्य के रूप में अपनी कन्या को दान में दे देना।

3- **आर्श विवाह** - कन्या पक्षवालों को कन्या का मूल्य (गाय या बैल) देकर कन्या से विवाह कर लेना (आदिकाल)

4- **प्रजापत्य विवाह** - कन्या की सहमति के बिना उसका विवाह अभिजात्य वर्ग के वर से कर देना।

5- **गन्धर्व विवाह-** परिजनों की सहमति के बिना वर तथा कन्या का बिना किसी रीति-रिवाज के आपस में सम्बन्ध स्थापित कर लेना। (जैसे-दुष्यंत-शकुन्तला का विवाह)।

6- **असुर विवाह-** कन्या को खरीद कर (आर्थिक रूप से) विवाह कर लेना।

7- **राक्षस विवाह** - कन्या की सहमति के बिना उसका अपहरण कर जबरदस्ती विवाह कर लेना

8- **पिशाच विवाह** - कन्या की मदहोशी (गहन निद्रा, मानसिक दुर्बलता आदि) का लाभ उठाकर उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाकर, तदुपरांत विवाह करना।

यहां यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि परिवर्तन जीवन का शाश्वत सत्य हैं। समय काल परिस्थिति अनुसार परम्पराएं तथा रीतिरिवाज को बदलना स्वाभाविक हैं। वे परम्पराएं, वे रीति-रिवाज जो मानवीय मूल्यों पर कुठाराघात करती हो उनको भूलना अथवा बदलना ही मानव जाति के कल्याण के लिए अत्यावश्यक हैं।

दहेज प्रथा :- विवाह के समय माता-पिता द्वारा अपनी सम्पति में से कुछ हिस्सा धन, आभूषण वस्त्र इत्यादि के रूप में देना दहेज कहलाता हैं। सामान्यत: हर माता-पिता अपनी बेटी का विवाह पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार कर, प्रसन्नता पूर्वक कुछ वस्तुएं सहजता से बिना किसी मानसिक अथवा आर्थिक दबाव के वरपक्ष को प्रदान करता है, जिसे वरपक्ष सहजता से प्राप्त कर, दो परिवारों के मिलन को प्रफुल्लित मन से स्वीकार करता है। फलस्वरूप समारोह गरिमामय सम्पन्न हो जाता है। परन्तु कुछ समय में विवाह जैसा पवित्र संस्कार कलुषित हो गया है। विवाह के पूर्व ही वरपक्ष द्वारा वधू के माता-पिता के सम्मुख कुछ शर्तें रख दी जाती हैं, जिसे पूर्ण करना उनके लिए दुष्कर होता है। ये शर्तें ही वधू के माता-पिता के मानसिक, आर्थिक, सामाजिक संताप का कारण बनती हैं। यही कारण है कि कन्या के जन्म को ऐसे परिवारों में सहजता से स्वीकार नहीं किया जाता हैं तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसा महापाप दृष्टिगत होता है। अनेक समाचार माध्यमों से ज्ञात होता है कि किसी महिला द्वारा की गई आत्महत्या, विवाह-विच्छेद या शारीरिक-मानसिक प्रतारणा के मूल में ससुराल पक्ष की धन लालसा छुपी होती है। मनुष्य की यह लालसा तृष्णा को जन्म देती हैं और तृष्णा का कोई अंत नहीं होता।

उपवर्णित विभिन्न प्रकार के विवाहों का समग्र रूप से आंकलन करने पर परिलक्षित होता है कि आदिकाल में कन्या के माता-पिता को इस प्रकार के दहेज रूपी दानव का सामना नहीं करना पड़ता था। दहेज प्रथा, आधुनिक भौतिकवादी युग की स्वार्थपरक दैन है, जिसका अनादिकाल की सभ्यता, संस्कृति तथा रीति रिवाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। यही कारण था कि भगवान श्रीराम का सीता-स्वयंवर हो या भगवान श्रीकृष्ण का रुक्मणि-हरण हो या फिर क्यों न द्रोपती का स्वयंवर हो, किसी भी इस प्रकार के विवाह में कन्या के माता-पिता के सम्मुख कोई मांग/शर्त नहीं रखी गयी थी।

दहेज अभिशाप क्यों!

भारत सरकार ने दहेज-प्रथा को अपराध की श्रेणी में समाविष्ट कर दहेज निषेध अधिनियम लागू किया है तथा दहेज प्रतारणा एवं कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध हेतु कठोर सजा का प्रावधान किया है। आध्यात्मिक दृष्टि से इस विषय पर विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि त्रेतायुग में चाहे भगवान श्रीराम का वनवास हो या द्वापरयुग में महाभारत (कुरूक्षेत्र) का युद्ध, दोनों ही के मूल रूप में दहेज के उत्तरदायी हैं, क्योंकि मंथरा, कैकई के दहेज-रूप में अयोध्या आई थी तथा शकुनि, गांधारी के दहेज रूप में हस्तिनापुर आया था। इन दोनों द्वारा किया गया प्रपंच जग जाहिर हैं। इसलिये वर्तमान के कलयुग में दहेज-प्रथा अभिशाप है।

संदेश :- 1- माता-पिता को चाहिये कि वे पुत्री अथवा पुत्र के जन्म को समभाव से देखें तथा उनकी शिक्षा एवं संस्कारों पर समुचित ध्यान देवें, क्योंकि योग्य संतान ही माता-पिता का आभूषण होती हैं। 2- मनोवैज्ञानिक रूप से पुत्री माता-पिता के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। अत: कन्या जन्म को देवी-पदार्पण के रूप में प्रफुल्लित मन से स्वीकार करना चाहिए।

- प्रो. राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु), इंदौर

सुख शांति के बादल छा जाएंगे

1- वृद्धों के प्रति सम्मान, आत्मीयजनों के प्रति कोमलता और स्वयं के प्रति परीक्षण की दृष्टि।
2- स्वयं को जानिये और परखिये। जाने अनजाने में मुझसे कोई गलती तो नहीं हो रही।
3- मेरी वाणी से कोई आहत तो नहीं हो रहा है।
4- मेरे लेनदेन, उठने-बैठने में किसी कार्यकलाप में कोई दोष तो नहीं है।
5- दुनियादारी का कार्य करते हुए भगवान (हाटकेश) की आराधना करें।
6- आराधना करने से दुनिया के बड़े से बड़े हाथ भी तुमको बड़ा नहीं सकते।
7- योजनाएं बनाएं और पुरुषार्थ करें।

सबको सम्मान दें तथा आत्मीयता दें क्योंकि हर आदमी इज्जत चाहता है। हर आदमी बड़ों को सम्मान देने लग जाए तो उनको खुशी तथा संतोष मिलता है। क्योंकि इन वृद्धों के पास श्वासों की थोड़ी सी पूंजी बची रहती है। बची हुई इस थोड़ी से जिन्दगी में ये माता-पिता और बुजुर्ग अपने बच्चों के लिए ईश्वर से खुशियां ही मांगते हैं।

शिवाजी और नेपोलियन को उनकी माताओं की दुआएं और उनके परिश्रम ने ही महान बनाया। गरीबों की मदद किया करें। एक दिन बड़े आदमी बन जाओगे। तुम्हारे दु:ख में जो व्यक्ति शामिल हो या दो बूंद आंसू भी बहाए, ऐसे इंसान को कभी नहीं भूलना। लंका को जीतने के बाद श्रीराम का अयोध्या में राज्याभिषेक होने लगा तो रामजी ने सबको उपहार और आशीर्वाद दिया। राम जी बार-बार किसी के इंतजार में थे कि राज्याभिषेक के पूर्व हनुमान से बोला कि रास्ते में गंगाजी को पार कराने के लिए केवट ने हमें नाव में बिठाया था, उसके लिए जानकीजी ने अंगूठी देनी चाही थी, परन्तु उसने वह अंगूठी वापस कर दी क्योंकि उसने कहा था कि जब आप अयोध्या के राजा बनेंगे तब मैं आपकी भेंट स्वीकार करूंगा। अत: मैं अब उसका कर्ज उतारना चाहता हूं। केवट नहीं मिलने पर गृहराज जो कि छोटे से प्रदेश के स्वामी थे। मूल्यवान रत्नों तथा अन्य कीमती वस्तुओं से भरा थाल देकर श्रीराम ने कहा कि मेरी तरफ से यह भेंट केवट को दे देना। अंतत: गृहराज ने केवट को धन्यवाद दिया कि आपकी वजह से मुझे राम के दर्शन हुए। जब भी आपके जीवन में खुशियां आवें तो याद करना, शायद तेरी दुआओं से आज मेरे घर में खुशियां आई हैं। वेदों में भी यही उपदेश है कि जिन्होंने तुम्हारे लिए थोड़ा-सा भी कुछ किया हो उसके एहसास को ना भुलाना और ईश्वर को खाली समय में याद करने का कष्ट करें।

- डॉ. जयदेव त्रिवेदी इंदौर
9424589430

दो बूंद बंदगी की...

प्रात: काल बिस्तर छोड़ने से पूर्व ईश्वर का नाम सुमिरन एक बूंद बंदगी की है। ज्यादातर व्यक्ति निद्रा से जागृत होते ही अपने इष्टदेव का नाम श्रद्धापूर्वक जपते हैं ताकि सारा दिन खुशहाल बीते और भगवान भी अपने भक्त पर अपनी अमोघ कृपा बरसाते रहते हैं। आज हम जो भी हैं उन्हीं दीन बंधु की परम दया दृष्टि से हैं जो प्रत्यक्ष दृश्यमान हैं। हमारे शरीर को ही देख लीजिये कितने सुन्दर अवयव निर्माण किए हैं। जहां जिस अंग की आवश्यकता थी, वहां पर लगाकर देव दुर्लभ नर तन और बगैर किसी याचना के हमें नि:शुल्क सौंप दिया है। अब हमें नाम जप कर अपनी कृतज्ञता का परिचय देना है, हमेशा ध्यान करते हुए सायंकाल फिर एक बूंद बंदगी की। नाम जप भी बड़ा यज्ञ ही है। नाम अविनाशी है, यह शरीर तो क्षणभंगूर है। अत: हमारे ऋषि मुनियों ने नाम जप का महत्व प्रतिपादित करते हुए रामचरित मानस में कहा है (राम एक तापस तियतारी) रामजी ने केवल एक अहिल्या का ही उद्धार किया परन्तु राम के नाम से अनेक जीव जो पतित थे, पावन हुए हैं। ऐसा मनोहारी पवित्र नाम जो सदा भजते रहते हैं, वो प्रेम रस भरी दो अमृत बूंद से कम नहीं है। वाह क्या आनंद है इस बंदगी का जिंदगी में। इन्हीं दो बूंदों को पीने वाला माया मुक्त होकर जीवन मुक्त होता है। तथा उन्हीं परमपिता की कृपा से जीवन पथ में आने वाले अनिष्ट बर्फ की भांति पिघल कर रास्ते में ही नष्ट हो जाते हैं। अतएव चातक की भांति स्वाती का इंतजार कीजिए, कोई बूंद मुख में गिरे धन्य हो गया जीवन। ऐसे राम नाम रूपी धन का बैलेंस बढ़ाते चले जाइये। बूंद-बूंद से घड़ा भी भर जाता है, अपने धर्मखाते में नाम रूपी धन जमा करते रहने से प्राणी निहाल हो जाता है। राम नाम से बड़ा कोई धन नहीं (पायोजी मैंने राम-रतन धन पायो) जिसे हरि भक्ति मिल गई उसके लाभ का कोई पारावार नहीं... तो बस पीते रहिए दो बूंद बंदगी की...।

- ईश्वरलाल नागर, छापरी
8964882281

श्रद्धा तो 'गुलाब' के फूल की तरह कोमल होती है, यह जहां भी होगी वहीं अपनी सुगंध फैलाएगी।

इंजीनियरिंग की पूरी जानकारी एक एप्लिकेशन में

अगर आप इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहे है, या किसी इंजीनियरिंग कॉलेज अथवा कोर्स से अध्ययन कर रहे है, तो इंजीनियरों और इंजीनियरिंग क्षेत्र को ध्यान मे रखते हुए इंजीनियरर्स पोइंट (Engineers Point) नाम की इस एप्लिकेशन को गूगलप्ले स्टोर (google play store) और नोकिया एन्डरोइड (Nokia Android) उपयोगकर्ता नोकिया प्ले स्टोर से सिधे मुफ्त डाउनलोड कर सकते है, इस आवेदन के सह संस्थापक [Director of Orionitech Solutions Pvt. Ltd. Jaipur (Raj.)] श्री हर्षित नागर है, सभी इंजीनियर शाखाओं की संबंधित पुस्तकें, चित्र, सूत्र, और पिछले वर्ष के पेपर भी उपलब्ध है, बी टेक, एम. टेक, पीएचडी, के लिए प्रवेश, रोजगार, कॉलेज, संस्थान, कंपनी, के साथ- साथ गेट (Gate), आई.ई.एस(IES), पी.एस.यू (P.S.U) से जुड़ी प्रत्येक छोटी बड़ी सूचना और कट-ऑफ (Cut-off) एवं महत्वपूर्ण Article | Projects की जानकारी भी इसमे उपलब्ध कराई गई है, इंजीनियरिंग एवं

उच्च इंजीनियरिंग की समय सारिणी (Time Table), परिणाम (Result) एवं उनमे होने वाले बदलावों का ध्यान रखते हुऐ सिनियर्स एवं जुनियर्स इंजीनियरों को जोड़ने एवं अपने अनुभव को शेयर करने के लिए एक अनुठा प्रयास किया गया है इसके चर्चा मंच सेक्शन (Discussion Forum Section) द्वारा, अत: अपनी इंजीनियरिंग का ज्ञान शेयर करने एवं ज्ञान लेने हेतु इस एप्लिकेशन को हर इंजीनियरर्स को उपयोग करनी चाहिए । बिल्कुल नि:शुल्क नवीनतम एप्लिकेशन डाउनलोड करना होगा। इंजीनियर्स के लिए आसान, टाइप करे इंजीनियरर्स पोइंट अपने एन्डरोइड मोबाइल में। अत: समाज के सभी टेक्निकल पर्सन जो वेब और मोबाइल एप बिजनेस और प्रोफाइल से जुड़े है अथवा वो स्टूडेंट्स जो किसी न किसी यूनिवर्सिटी या कॉलेज में अध्ययन कर रहे हैं अगर अपनी क्षमता और नॉलेज के बेस पर इस नेशनल लेवल प्रोजेक्ट से जुड़ना चाहे या इस मोबाइल एप को और बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव देना चाहे तो आपका स्वागत है समाज के कंप्यूटर साइंस से बीएससी/बीसीऐ/बीटेक/डिप्लोमा स्टूडेंट फ्री समर ट्रेनिंग/इंटर्नशिप और एक्सपेरिएंस कैंडिडेट्स एंड्राइड एक्सपर्ट जॉब के लिए अप्लाई करें।

- हर्षित नागर

Scan This Code For Fast Downloding.
Regards & Thanks ,
Orion iTech Solutions Pvt. Ltd.
Jaipur (Raj.)
E-mail :
contact.oriongroup@gmail.com
Mob.+91-982869791, +91-141-3950261/222.orionitech.com

अर्जुन सदृश लक्ष्य साधें- सफलता के सूर्योदय हेतु

जिस तरह कोई राहगीर समुद्र के किनारे बैठकर समुद्र की लहरों को देखता है, उसी तरह मैं भी जीवन के किनारे बैठकर जीवन को निहारा करता हूं। जीवन चाहे मेरा हो या किसी और का, जीवन तो जीवन ही होता है। हर जीवन के साथ एक जैसी ही प्राण धारा बहती है। सभी व्यक्ति जीवन के तयशुदा रास्तों से गुजरते हैं। जिस रास्ते से महावीर और बुद्ध, राम और रहीम, मीरा और मंसूर गुजरे थे, उसी रास्ते से हम भी गुजर रहे हैं। आइंस्टीन और एडीसन, शेक्सपियर और मैक्समूलर, अल्फ्रेड नोबल और नेल्सन मंडेला भी आखिर हममें से ही पैदा हुए हैं। जैसे मां की कोख से हम पैदा हुए थे, वैसे ही वे पैदा हुए। जैसे हम खाते हैं, संसार भोगते हैं और मर जाते हैं, ऐसे ही उनके जीवन में घटित हुआ था। आखिर उनके और हमारे जीवन में अंतर क्या है? उनका एक लक्ष्य था, जीवन की सुनिश्चित राह।

प्रकृति देती है प्रतिफल

हमारे तो सर्वांग सम्पन्न हैं, मैं उन लोगों को भी देख रहा हूं, जो शरीर से अपूर्ण या अपाहिज होते हुए भी सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचे और उन्होंने जीवन का भरपूर परिणाम पाया। प्रकृति के द्वारा दिए गए अभावों के बावजूद जो ऊंचाइयों तक पहुंचे, वे ही तो धरती पर शिखर-पुरुष कहलाते हैं। सूरदास नेत्रहीन थे, पर उनकी काव्य-प्रतिमा की सारी मानवता कायल है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रघुवंश सहाय वर्मा हाथ से लाचार थे, वह पैर से लेखन- कार्य करते थे। क्या यह उदाहरण हमारी सोई हुई चेतना को जगाने के लिए पर्याप्त नहीं है? जब कभी हेलन केलर को पढ़ता हूं, तो हृदय इस बात से अभिभूत हो जाता है कि एक गूंगी, बहरी और अंधी, यद्यपि इस शब्द-प्रयोग के लिए मैं क्षमा चाहता हूं, क्या जीवन की इतनी पारदर्शी गहराइयों तक उतर सकती है।

जीवन का क्षेत्र अत्यंत विस्तीर्ण है और कार्य करने को अनंत। यदि हम किसी भी वस्तु की प्राप्ति की आकांक्षा अपने संपूर्ण मन से करें और उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास और संघर्ष करते रहें, तो प्रकृति हमें सफलता वैसे ही दे देती है, जैसे सूरज से चली किरण और बादल से बरसी बूंद हम तक पहुंच ही जाती है।

जो लोग अपने जीवन में एक लक्ष्य बनाकर जिंदगी के रास्तों से गुजरते हैं, वे अपनी मंजिलों को हासिल कर ही लेते हैं। जो लोग लक्ष्यहीन ज़ीवन जीते हैं, वे संसार की इस पाठशाला में पढ़ने के लिए फिर भेज दिए जाते हैं। आखिर जो यहां नहीं चला, वह और कहीं चल पाएगा। ऐसा कम ही संभव है। जो जिंदगी के रास्ते से गुजरकर जीवन से मुक्त हो जाते हैं, वे सिद्धि और सफलता को प्राप्त कर लेते हैं। जो लोग जीवन के रास्तों से गुजरकर भी जिंदगी के पाठों को पढ़ नहीं पाते, वे संसार की पाठशाला में फिर-फिर लौटा दिए जाते हैं, किसी बैरंग लिफाफे की तरह। मनुष्य के पुनर्जन्म की यही कहानी है।

लक्ष्य बसाएं आंखों में

जिस आदमी को जिन्दगी में अपना लक्ष्य नजर आता है, वह व्यक्ति अपने जीवन की अंतिम सांस तक का उपयोग कर लेता है। जिस आदमी के जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता, वह आदमी न तो जी रहा है और न ही मर रहा है। उस आदमी की स्थिति बिलकुल ऐसी ही हो जाती है, जैसे किसी आदमी को तरल ऑक्सीजन में गिरा दिया जाए। तरलता आदमी को जीने नहीं देती और ऑक्सीजन आदमी को मरने नहीं देती। ऐसी स्थिति हर किसी की है। व्यक्ति इसलिए जी रहा है, क्योंकि मौत अभी तक आई नहीं है। ऐसा व्यक्ति अपनी जिंदगी में कभी कुछ नहीं कर सकता। दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है, जो जीवन को केवल भोग की वस्तु समझते हैं या जिन्हें जिन्दगी के नाम पर केवल मौत ही दिखाई देती है। जो आदमी मौत से भयभीत रहता है, वह अपनी जिंदगी का सही उपयोग नहीं कर सकता।

जीवन के द्वार पर खड़े होकर अपने जीवन के लक्ष्य का निर्धारण वही कर सकता है, जिसे अपनी जिंदगी की मुंडेर पर जीवन का जलता हुआ चिराग नजर आता है। वह व्यक्ति कभी पुरुषार्थ नहीं कर सकता, जिसे हर ओर अंधेरा ही नजर आता है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य का निर्धारण इसलिए नहीं कर पाता, क्योंकि उसका नजरिया निराशावादी है। निराशा और मायूसी में घिरे व्यक्ति का चेहरा देखने लायक होता है। बुझा-बुझा निस्तेज चेहरा, आंखें अंदर धंसी हुई, हंसी-मुस्कान से दूर-दूर का रिश्ता नहीं। आदमी का चेहरा तो हमेशा गुलाब के फूल की तरह खिला-खिला रहे, महकता रहे। निराशा को गले में लटकाए रखने वाले व्यक्ति अकर्मण्य हो जाते हैं, निष्क्रिय हो जाते हैं।

(क्रमशः)

प्रस्तुति-
डॉ. तेज प्रकाश व्यास एवं डॉ. मधु व्यास
धार, 9425491336

भगवान भरोसे न रहे, कर्म करते रहे

जय हाटकेश

एक बार एक भक्त के सपने में भगवान प्रकट हुए। भगवान ने उससे कहा तू सत्य मार्ग पर चलने वाला है मै तेरे आचरण से खुश हूं और तुझे एक वर देना चाहता हूं जो मन में आये मांग ले। भक्त बडा ही सज्जन था उसने सोचा कि भगवान से धन दौलत मांगने का क्या लाभ? इसलिये कुछ ऐसा मांगना चाहिए जिससे हमेशा के लिए ईश्वर का सानिध्य प्राप्त हो जाए। ऐसा सोचकर उसने भगवान से कहा मुझे और न कुछ चाहिए प्रभु! बस जीवन के हर सुख दुख में और परीक्षाओं की घडी में आप मेरे साथ चलते रहे। इस पर ईश्वर तथास्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गयें। इसके बाद उस भक्त की आंखे खुल गई। वह सपने की बात भूलकर अपने दैनिदिन कार्यो में लग गया। इस तरह कई वर्ष बीत गये। इस बीच हर व्यक्ति की तरह उसके जीवन में अनेक विपरित परिस्थितियां आई और उसने उनका सामना हिम्मत और पुरूषार्थ से किया। एक बार वह बहुत बीमार हो गया उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया ।वहां वह अर्धचेतन अवस्था में पड़ा था तो उसके सामने भगवान फिर प्रकट हुए। भगवान को देखते ही उसे वरदान की बात याद आ गई और उसने पूछा प्रभु आप तो मुझे वरदान देकर गायब ही हो गए। मुझे जिंदगी मे न जाने कितनी परेशानियों का सामना मुझे अकेले ही करना पडा आपने मेरा कहीं भी साथ नही दिया। भक्त की बात सुनकर भगवान मुस्कुराए और बोले नहीं वत्स! मै अपने कहे अनुसार जीवन के हर कदम पर तुम्हारे साथ था । इसका क्या प्रमाण है ! भक्त ने भगवान से पूछा । इस पर भगवान ने उससे कहा सामने दीवार पर देखो । तुम्हारे जीवन की सारी कहानी तस्वीरों मे दिखाई देगी। भक्त को सामने की दीवार पर दो व्यक्तियों के पदचिन्हों के रूप में अपने जीवन की सारी घटनाएं दिखाई देने लगी। भगवान ने कहा पुत्र! इनमें से एक पद चिन्ह तुम्हारे है और दूसरे मेरे। देखो, मै हर समय तुम्हारे साथ ही चल रहा था। उसने देखा कि बीच बीच में केवल एक ही व्यक्ति के पद चिन्ह दिखाई दे रहे है। उसे याद आया कि

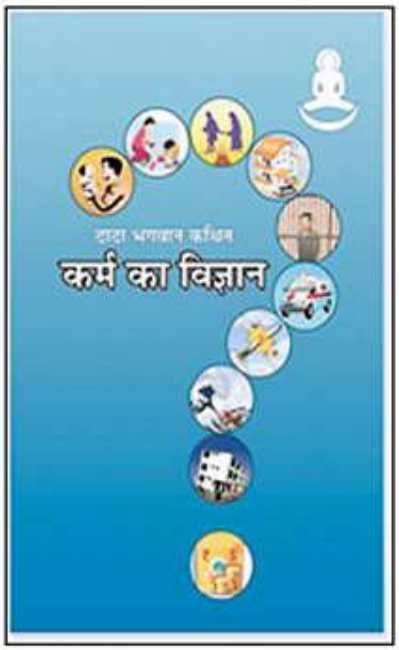

ये पद चिन्ह उन समयों के जब वह कठिन दौर से गुजर रहा था। उसने भगवान से कहा प्रभु! इन पदचिन्हों को देखिए जब-जब मुझे आपकी सबसे ज्यादा आवश्यकता थी, तब तब आप मेरे साथ नहीं थे। भक्त की बात सुनकर भगवान बोले पुत्र! तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो मैंने तुम्हे कभी अकेला नही छोडा। परीक्षाओं की घडियों मे तुम्हे जो पद चिन्ह दिखाई दे रहे है वे मेरे है उस समय मैने तुम्हे मेरी गोद में उठाया था इस कारण तुम्हारे पैरो के निशान वहां नहीं बन पाये। चूंकि तुम उस समय अपने कर्म में इतने डूब गये थे कि तुम्हे यह भान ही नही हुआ कि मैने तुम्हें अपनी गोद मे उठा रखा था। कर्म तो तुम्हे ही करना था इसलिये गोद में रह कर भी तुम कर्म करते रहे और तुम्हारे निष्काम कर्मो का फल मै तुम्हे तुम्हारी सफलता के रूप में देता रहा। इसलिये ईश्वर उन्हीं का साथ देता है जो अपने कर्म में विश्वास रखते है। सवाल यह उठता है कि भगवान ने सदा साथ चलने का वर दिया था तो फिर वे अपनी बात से कैसे पलट सकते थे? फिर वह भक्त चाहे कर्म करे या न करे। इसका उत्तर यह है कि भगवान ने उसे हमेशा साथ चलने का वर दिया साथ देने का नहीं। यदि भक्त कर्म नहीं करता है तो वे उसे गोद में नहीं उठाते सिर्फ वह जीवन के संग्राम मे असफल ही क्यों न हो जाता। इसलिऐ आप यदि चाहते है कि आपकों जीवन मे सफलता मिले तो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत और जोश केसाथ निष्काम प्रयत्न करें क्यों कि आपका अधिकार सिर्फ प्रयत्न करने तक ही सीमित है और फल देने का अधिकार उसका है। ये बाते आध्यात्मिक जरूर है लेकिन बहुत जरूरी है आज का युवा जीवन के हर क्षेत्र जिसे कि पुरूषार्थ के द्वारा ही सफलता प्राप्त की जा सकती है जैसे कि पढाई लिखाई, कैरियर आदि मे भगवान से उम्मीद लगाए बैठा रहता है कि वे आये और उसकी मनोकामनाएं पूरी करे। वह भूल जाता है कि जिस परीक्षा मे वह सम्मिलित हो रहा है उसकी तैयारी का समय से उसने मौज मस्ती मे गंवा दिया और जब परीक्षा की घडी निकट आई तो वह ईश्वर का दरवाजा खटखटाने जा पहुंचता है। ऐसे में जब असफलता मिलती है तो ईश्वर को दोष देने लगता है जबकि ईश्वर अपने बच्चों मे भेद नहीं रखता है, वह तो अपने सपने वाले भक्त की तरह हर व्यक्ति के साथ चल रहा है। इसलिए भगवान भरोसे रहने से काम नहीं चलता, पुरूषार्थ भी करना चाहिए।

संकलनकर्ता
- मधुसूदन नागर
देवास

'कर्म' बंधन का कारण नहीं आसक्ति बंधन का कारण है,
'आसक्ति' किसी कर्म में हो गई तो बंधन होगा, इसलिए यत्नपूर्वक कर्म करो।

साधक आसक्ति रहित हो

किसी भी लक्ष्य को निर्धारित कर उसमें लगा व्यक्ति वास्तव में आम व्यक्ति नहीं, बल्कि यह एक साधक होता है और साधक की

आसक्ति दिव्य शक्तियों के अलावा यदि किसी भी अन्य चीज में होती है तो वह रास्ता भटके बिना नहीं रहता तथा जैसे ही वह रास्ता भटका तो समझो कि वह अपने लक्ष्य से भटक गया और फिर असफलता निश्चित। किसी भी काम का सही और उचित परिणाम प्राप्त करने हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि आप बिल्कुल भी आसक्त न हों। यहां तक कि परिणाम के प्रति आसक्ति भी कई बार हमारे सामने एक अजीब सी स्थिति लाकर खड़ी कर देती है। क्योंकि यदि आपने किसी लक्ष्य को तय किया और दिव्य शक्तियां जो यह जानती हैं कि अमुक काम के लिए पहली बार कार्य करने के बाद ही मिलना है, तो यह निश्चित मानें कि अपने अनुसार पहले ही प्रयास में परिणाम के प्रति आसक्त व्यक्ति मनचाहा परिणाम नहीं मिलने पर पूर्ण रूप से विचलित हो जाएगा और दूसरी बार काम करने की आवश्यकता को बिना समझे ही डर के कारण उस कार्य को टाल जाएगा तथा अंत में नैराश्य को प्राप्त होगा।

अत: लक्ष्य प्राप्ति हेतु कार्य में लगे साधक को सिर्फ लगे ही रहना है तथा वांछित परिणाम मिल जाने पर भी आप से बाहर नहीं होना है। उसे यह बात सदैव अपने मन-मस्तिष्क में रखनी ही होगी कि अमुक काम सिद्ध करने वाली शक्ति कोई और की ही है। मैं तो बस निमित्त मात्र हूं। किसी भी बड़ी सिद्धि कि प्राप्ति हेतु या उच्च स्तरीय से तत्व प्राप्त करने हेतु लोग शायद इसी उद्देश्य से जंगलों और पहाड़ों में जाते हैं, ताकि वे आसक्ति रहित हो सकें। वे हर प्रकार से सांसारिक जीवन को त्याग कर और अपनी मोह माया को छोड़कर ही उस रास्ते पर चले जाने के योग्य हो पाते हैं तथा जो ऐसा नहीं करते वे अक्सर दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं और हमेशा भटकते हुए पथिक के रूप में यहां-वहां दिखते रहते हैं। उन्हें पता नहीं होता कि उनकी मंजिल आखिर है कहां? ऐसी स्थिति में फिर हम यह कैसे मान लें कि ये भटके हुए तथाकथित संत किसी दूसरे को सही मार्ग दिखाने में कामयाब हो पाएंगे।

अनावश्यक रूप से किया गया संग्रह भी कहीं न कहीं आसक्ति का ही उदाहरण है जो कि चहुंओर से शत्रुओं द्वारा घिरे रहने के लिए मजबूर करता है।

- सीमा-मनीष शर्मा
99262-85002

हायटेक जिंदगी में कैसी हाय-हाय?

सुबह होती है मोबाइल के अलार्म के साथ! हाई टेक जिंदगी में सब कुछ हाई टेक! टॉयलेट में भी जाओ तो मोबाइल साथ चाहिए जी! आखिर एक पति, पत्नी के लिए बिना डिस्टरबंस के मेसेजिंग के

लिए इससे बढ़िया जगह क्या हो सकती है? निपट कर बाहर निकलते ही फेसबुक, ट्विटर है ही! आखिर एक जगह पर सभी देवी, देवताओंके दर्शन और कहाँ मुमकिन है? चाय का कप और ढेर सारे लाईक्स न हो तो बात बनेगी कैसे? अनजाने दोस्त, काल्पनिक दुनिया, झूठे सच्चे वादे मगर दिल को तस्सली देती दोस्ती! सोशल नेटवर्किंग की इस दुनिया से दूर रहे भी तो कैसे ? मृगजल सी तृष्णा! सितारों भरी आकाशगंगा! अब फेस टू फेस बात कम, फेसबुक पे बातें ज्यादा! न तो उगते सूरज को देखना है न पंछियों की चहचहाहट को सुनना है! फेस बुक पे सनराइज, सनसेट देखो, ट्विटर पर गुटरगूँ सुनो, वाट्स एप पर मेसैजीग करो और लाईफ को एन्जॉय करो! आखिर लाइफ ही जब हाय टेक हो गयी है तो ये हाय हाय किस लिए? नन्हे फ़रिश्ते ने भी अपनी दुनिया सजा ली है! आँखे मलते मलते ही टी वी का बटन चालू किया और डोरेमोन हाजिर! निंजा हो या किसना, लिटिल कृष्णा हो या मिस्टर मेकर सब का साथ, सब से बात जरुरी! जब तक किसना दूध पीने के लिए नहीं कहेगा, दूध तो गले से नीचे उतरता ही नहीं!!

माँ भी खुश, बच्चा भी खुश! यु ट्यूब से गेम्स, अंग्रेजी कवितायें डाऊनलोड कर दिए, बेबी सिटींग की जरुरत ही नहीं! बच्चा अपनी दुनिया में मगन और माँ बाप अपनी दुनिया में मस्त! नजारा तो तब देखने लायक होता है जब लोड शेडिंग की वजह से बिजली चली जाती है या वाय फ़ाय डिसकनेक्ट हो जाता है! पल भर में शांत शांत नजर आने वाला घर कुरुक्षेत्र बन जाता है! कहीं पति, पत्नी में महाभारत तो कहीं बच्चे का डिस्को डांस! पति, पत्नी में संवाद का माध्यम बन गया है मोबाइल! फेस टू फेस तो संवाद कम, फायरिंग ज्यादा होती है!! क्योंकि दोनों के दिमाग सातवे आसमान पर होते है! थोड़ी कसर बाकि हो तो टेक सेवी बच्चा पूरा कर देता है! परिवार में लोग नहीं रोबोट रह रहे है! घर की खुशियां, सुख चैन ये हाय टेक दस मुंह वाला रावण न चुरा ले इसलिए कोई लक्ष्मण रेखा खींचना जरुरी है ? क्या हम रोबोट बन कर टेक्नोलॉजी के गुलाम बनाना चाहते है? क्या प्रकृति से हमारा नाता जरुरी नहीं है?

अर्पित मेहता, *इंदौर, 9926030958*

क्रोध पर नियंत्रण रहे...

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्।।

धर्म के दस लक्षणों में महत्वपूर्ण है- अक्रोधः - अर्थात् क्रोध न करना या क्रोध पर नियंत्रण रखना। संसार में कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जिसे क्रोध न आता हो। चींटी को दबाइये अथवा कष्ट पहुंचाइए तो वह भी गुस्सा करने लगती है। शास्त्रों में लिखा है व्यर्थ में और अधिक समय तक क्रोध करने से व्यक्ति की बुद्धि और चिन्तन शक्ति समाप्त हो जाती है और वह पतन की ओर अग्रसर हो जाता है।

श्रीमद्भगवत्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है

ध्यायतोविषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधाभिजायते
क्रोधात् भवति संमोहः संमोहात् स्मृतिविभ्रमः
स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशः बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।

विषयों का सतत चिन्तन करने से उनसे लगाव हो जाता है और इससे मन में काम पैदा हो जाता है काम की पूर्ति नहीं होती तो क्रोध आने लगता है क्रोध में सम्मोह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है सम्मोह से बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुद्धि नष्ट होने से विनाश अवश्यभावी है। क्रोध मनुष्य की विवेक शक्ति समाप्त कर देता है।

सामवेद में लिखा है

अक्रोधेन क्रोधम्

अक्रोध से ही क्रोध को जीता जा सकता है। एक व्यक्ति क्रोध करे और दूसरा भी क्रोध करने लगे तो संघर्ष सम्भव है। पहले व्यक्ति को यदि क्रोध आये तो दूसरे व्यक्ति को शान्त रहना चाहिए, इससे पहले का क्रोध भी स्वतः ही शांत हो जाएगा। क्रोधी को शांत करने का सबसे सरल उपाय है क्रोध न करना। वाल्मीकि रामायण में लिखा है

कोपं न गच्छन्ति हि सत्त्ववन्तः।
सत्त्ववान् मनुष्य क्रोध नहीं करते।

कमजोर व्यक्ति ही गुस्सा करते हैं शक्तिशाली तो क्षमा कर देते हैं, कहा गया है क्षमा वीरस्य भूषणम्- क्षमा ही वीर की शोभा है।

शास्त्र में लिखा है

वाच्यावाच्यं प्रकुपितो न विजानाति कर्हिचित्।
नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य नावाच्यं विद्यते क्वचित्।।

क्रुद्ध कभी भी वाच्य और अवाच्य का विवेक नहीं करता। क्रुद्ध मनुष्य के लिए न तो कुछ अकार्य होता है, और न अवाच्य।

रामचरितमानस में समुद्र पार करने के लिए भगवान राम एवं श्री लक्ष्मण समुद्र से मार्ग देने की प्रार्थना करते हैं परन्तु तीन दिन बीतने पर भी समुद्र उनकी प्रार्थना की और ध्यान नहीं देते तब लिखा है

विनय न मानत जलधि जड़ गये तीन दिल बीत
बोले राम सकोप तब भय बिन होहिं न प्रीत

भगवान शिव के समान क्रोध तो किसी को नहीं आया। परन्तु उन्हें करुणावतार कहते हैं क्योंकि उनका क्रोध पलभर में समाप्त हो गया था। कामदेव जब भगवान शिव को बहुत सता रहा था तब भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को जलाकर भस्म कर दिया, यह देखकर कामदेव की पत्नी रति ने भगवान शिव से विनती की तो भगवान शिव ने अपने क्रोध को समझ लिया और तुरन्त कामदेव को जीवित कर दिया और उसे नाम दिया अनंग जिसका अंग ना हो और वरदान भी दिया कि कामदेव बिना अंग के सभी के शरीर में जीवित रहेंगे। यदि व्यक्ति को क्रोध आए तो क्षण में समाप्त हो जाना चाहिए। ऐसा नहीं कि सुबह से शुरू होकर शाम तक क्रोध चलता रहे। ग्रंथों में उल्लेख है

क्रोधः प्राणहरः शत्रुः क्रोधो मित्रमुखो रिपुः।
क्रोधो ह्यसि महातीक्ष्णः सर्व क्रोधोपकर्षति।।

क्रोध प्राणों को लेने वाला शत्रु है,
क्रोध मित्र के रूप में शत्रु है।
क्रोध अत्यन्त तीक्ष्ण तलवार के समान है,
क्रोध सबकी अवनति करने वाला है।

क्रोध पर नियंत्रण के लिए अभ्यास की अत्यंत आवश्यकता है अभ्यास करने से शनैः शनैः क्रोध पर काबू पाया जा सकता है।

सुप्रसिद्ध कवि बाणभट्ट ने हर्षचरित काव्य में लिखा है

अतिरोषण श्चक्षुष्मानप्यन्ध एव जनः

अतिक्रोधी मनुष्य आंख वाला होते हुए भी अंधा ही होता है।

क्रोध किसी भी अवस्था में हितकारी नहीं है।

डॉ. रवीन्द्र नागर
दिल्ली

पुष्पों व फलों से लदी वृक्षों की डालियां अधिक भार से स्वतः ही झुक जाया करती है, अत्यधिक वैभव से स्वतः ही विनम्र हो जाना चाहिए।

मोटापे की महाऔषधि है मिर्च

जर्मनी में अशेन स्थित इंस्टीट्यूट फॉर न्यूट्रीशनल मेडिसिन एण्ड ट्राइटिक्स के अनुसार वजन कम करने हेतु सुबह नाश्ते में और दोनों पल खाने में मिर्च के साथ कड़क कॉफी का भी सेवन करना चाहिए। लाल और हरीमिर्च, कॉफी तथा मिर्च से बने मसाले नियमित सेवन से शरीर से पसीना निकलता है, जिससे ऊर्जा की जरूरत पड़ती है, सो मोटापा कम होता है।

दिन की शुरुआत फल व सब्जियों के जूस से करनी चाहिए। मोटापे में कोशिश शब्द का प्रयोग न करें। उसका अर्थ है असफलता। इसकी जगह अवश्य शब्द अपनायें।

मिर्च में वीआईटीसी की मात्रा काफी पाई जाती है। ब्रॉस्लिटिक्स और सीने की थर्राहट के लिए वीआई+सी का सेवन महत्वपूर्ण है। 100 ग्राम हरी मिर्च में 111 एम.जी. वीआईटीसी होता है। जबकि सूखी लाल मिर्च में 50 एम.जी. वीआईटीसी होता है। लाल मिर्च और शिमला मिर्च सगी बहन है। हरी मिर्च के साथ हर रोज एक शिमला मिर्च रोज खाई जावें तो वीआईटीसी की जरूरत पूरी हो जाती है। सर्दी

जुकाम में भी वीआईटीसी लाभकारी है। हड्डी की चोट पर चुटकीभर लाल मिर्च का चूर्ण गर्म तेल में लेप करने से आराम मिलता है। सीढ़ियां चढ़े, सूप पियें और मोटापा घटायें। रोजाना औसतन 6 मिनिट सीढ़ियां चढ़े व उतरें। आपका कॉलेस्ट्रोल लेवल 10-15 प्रतिशत कम होगा। अधिक मात्रा में रक्त और ऑक्सीजन की आवश्यकता ही नहीं, जिससे हृदय की गति तेज होती है। अधिक मजबूत बनाना है। भोजन के पहले एक कप सूप (सब्जियों का) पीने से 100 कैलोरी ऊर्जा कम मिलती है। सोने के पूर्व रोजाना 20 मिनिट वॉक करें। भोजन के पूर्व सेब, तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी, सलाद आदि भी आप भोजन के पहले खा सकते हैं।

सब्जियों के सूप कभी भी अधिक गर्म सेवन न करें। क्योंकि गर्म सूप पीने से भोजन नली का कैंसर हो सकता है (इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कैंसर)। जो व्यक्ति फलों व सब्जियों का अधिक सेवन करते हैं, उन्हें कैंसर होने की संभावना कम होती है।

- डॉ. जयदेव त्रिवेदी
इंदौर, 9424589430

हर्बल से दूर हो बुढ़ापा

शरीर की कोशिकाओं के केन्द्रक में डीएनए, न्यूट्रिक एसिड के जल्दी ऑक्सीकरण से बुढ़ापा शीघ्र आता है।

मानव कोशिका के अहम भाग मायटोक्रोंडिया के चुना गया, जो कि श्वसन क्रिया का केन्द्र है, यही ऑक्सीकरण होता है। इससे ही शरीर की कोशिकाएं समापन हो जाती हैं और बुढ़ापा आ जाता है। हिप्पोफोरम नाईडिस और पोडाफायलम हैं वजैड्रम हिमालय पर्वत पर पाया गया। यह औषधि सिर्फ बुढ़ापा नहीं वर्ना कैंसर गठिया एचआईवी, डीएनए व तमाम हार्ट डिसीसेज में कारगर है।

हर व्यक्ति को 15 वर्ष की आयु के बाद एंटी ऑक्सीडेंट लेना चाहिए। कच्चे आंवले, तुलसी, खीरा, तरबूज, सेब, पपीता, मौसमी, संतरा, लीची लहसुन, अदरक, मौराया आदि खट्टे फलों में विटामिन ए, सी व ई पाया जाता है।

डॉ. जयदेव त्रिवेदी
118 प्रकाश नगर इन्दौर
9424589430

रामसेतु एवं श्रीरामेश्वर लिंग का माहात्म्य

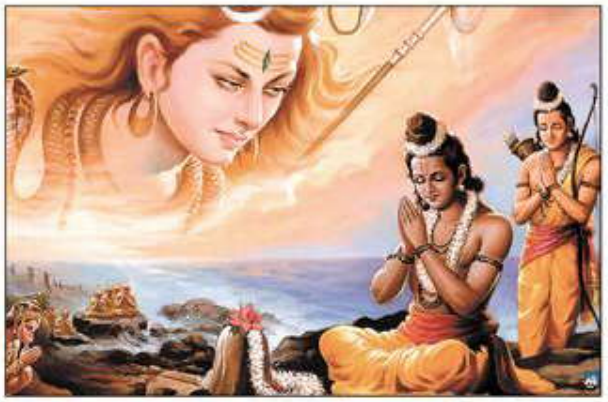

रघुवीरपदन्यासपवित्रीकृतपांसवे।
दशकण्ठशिरश्छेदहेतवे सेतवे नमः।।
केतवे रामचन्द्रस्य मोक्षमार्गकहेतवे।
सीताया मानसाम्भोजभानवे सेतवे नमः।।

- संक्षिप्त श्रीस्कन्द पुराण

श्री रघुवीरजी के चरण मात्र रखने से ही जिसकी धूलि परम पवित्र हो जाती है, जो दशग्रीव के शिरश्छेद का एकमात्र हेतु है, उस सेतु को नमस्कार है। जो मोक्ष मार्ग का प्रधान हेतु तथा श्रीरामचन्द्रजी के सुयश की फहरानेवाला केतु (ध्वज) है और सीताजी के हृदयकमल को विकसित करने के लिए सूर्यदेव के समान है, उस सेतु को नमस्कार है।

श्रीरामजी के सेतुबन्ध की तथा श्रीरामेश्वर जी अनेक प्रचलित कथाएं हमारी ऐतिहासिक एवं धार्मिक विरासत में प्रसिद्ध है। इनके बारे में जितना वैचारिक चिंतन-मनन किया जावे उतना ही कम है। अतः इनकी संक्षिप्त जानकारी यहां देने का एक लघु प्रयास किया गया है।

रामसेतु निर्माण एवं श्रीरामेश्वर जी की स्थापना

चौ.- सैल बिसाल आनि कपि देहीं। कन्दुक इव नल नील ते लेहीं।।
देखि सेतु अति सुन्दर रचना। बिहसि कृपानिधि बोले बचना।।

- रा.च.मा. लंका काण्ड -1-1

वानरगण बड़े-बड़े पहाड़ ला-लाकर देते हैं और नल-नील उन्हें गेंद की तरह ले लेते हैं। सेतु की अत्यन्त सुंदर रचना देखकर कृपासिन्धु श्रीरामजी हंस कर वचन बोले।

परमरम्य उत्तम यह धरनी। महिमा अमित जाइ नहिं बरनी।।
करिहउँ इहाँ सभूं थापना। मोरे हृदयँ परम कलपना।।

-रा.च.मा. लंका काण्ड 1-2

यह (यहाँ की) भूमि परम रमणीय और उत्तम है। इसकी असीम महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। मैं वहां शिवजी की स्थापना करूंगा। मेरे हृदय में यह महान संकल्प है। **सुनि कपीस बहु दूत पठाए। मुनिवर सकल बोलि लै आये।**

लिंग थापि विधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।

- रा.च.मा. लंका काण्ड-1-3

चौ- सिवद्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपने हुं मोहिन पावा।।
संकर विमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़मति मोरी।।

दो- संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुं बास।।

- रा.च.मा. लंका काण्ड-2

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि ममलोक सिधारहहिं।
जो गंगा जलु आनि चढ़ाइहि, सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि।।

- रा.च.मा. लंका काण्ड-2-1

चौ- होई अकाम जो छल तजिसेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि।
ममकृत सेतु जो दरसनु करिही। जो बिनु श्रम भवसागर तरिहि।।

श्रीरामजी के वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने बहुत से दूत भेजे जो सब श्रेष्ठ मुनियों को बुलाकर ले आए। शिवलिंग की स्थापना करके विधिपूर्वक उसका पूजन किया तथा बोले कि शिवजी के समान मुझको कोई दूसरा प्रिय नहीं है।

जो शिव से द्रोह रखता है और मेरा भक्त कहलाता है वह मनुष्य स्वप्न में भी मुझे नहीं पा सकता है। शंकरजी से विमुख होकर या विरोध करके जो मेरी भक्ति चाहता है, वह नरकगामी मूर्ख व अल्पबुद्धि है।

जिनको शंकरजी प्रिय है, किन्तु जो मेरे द्रोही है एवं जो शिव के द्रोही हैं और मेरे दास (बनना चाहते) हैं वे मनुष्य कल्पभर घोर नरक में निवास करते हैं।

जो मनुष्य मेरे द्वारा स्थापित श्रीरामेश्वरजी का दर्शन करेंगे वे शरीर छोड़कर मेरे लोक में जाएंगे। जो पवित्र गंगाजल लाकर इनका अभिषेक करेगा वह मनुष्य सायुज्य मुक्ति पाएगा अर्थात् मेरे साथ एक हो जाएगा।

जो छल छोड़कर एवं निष्काम होकर श्रीरामेश्वरजी की सेवा करेंगे, उन्हें शंकरजी मेरी भक्ति प्रदान करेंगे और जो मेरे बनाए सेतु का दर्शन करेंगे वह बिना परिश्रम ही संसाररूपी समुद्र से तर जाएंगे।

- डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहता
उज्जैन, 9424560115

साफ-सुथरा देश-कनाडा

अरबसागर व एटलान्टिक महासागर को पारकर जैसे ही हवाई जहाज कनाडा के टोरन्टो हवाई अड्डे पर उतरा एक अजीब सी सुखद अनुभूति हुई- मुंबई की आपा-धापी से निकलकर कनाडा के शान्त वातावरण में पहुंचकर एक सुकून की अनुभूति हुई- भारत के 40 डिग्री सेल्शियस से कनाडा के 20 डिग्री सेल्सियस के तापमान में पहुंचकर कैसा लग रहा होगा इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

क्षेत्रफल के हिसाब से कनाडा विश्व का तीसरा बड़ा देश है। इतना विशाल देश होने के बावजूद इसकी जनसंख्या मात्र साढ़े तीन करोड़ है भारत का क्षेत्रफल कनाडा से कहीं कम होने के बावजूद जनसंख्या है 125 करोड़- कहां भारत के हर शहर में भीड़ ही भीड़ वहीं, दूसरी ओर कनाडा के शहरों में इक्का-दुक्का लोग- भीड़ का तो कहीं नामोनिशान नहीं।

हालांकि इससे पहले मैंने इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, थाइलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों की यात्राएं की है पर कनाडा की बत ही कुछ और है-

आज जबकि पूरे देश में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है, मैंने कनाडा में जो देखा वो अपने आप में नायाब है- स्वच्छता की दृष्टि में पूरी दुनिया में कनाडा पहले दस देशों में गिना जाता है- सफाई क्या होती है कोई उस देश के लोगों से सीखो- इस बार मैंने कनाडा में लगभग 14000 कि. मी. की यात्रा सड़क द्वारा की क्या गांव, क्या शहर पूरे के पूरे स्थान एक ड्राइंग रूम भी तरह सजे-सजे नजर आते हैं। कचरे-धूल का कहीं नामोनिशान नहीं- जमीन तो कहीं नजर ही नहीं आती- खाली जगहें हरी-हरी घास से ढकी हुई- बहुत ही नयनाभिराम नजारा होता है घर हो, बाजार हो सब जगह व्यवस्थित तरीके से कचरा उठाने की विधि अपनाई जाती है-

स्वच्छता अभियान को सफल करने के लिए कोई संस्था या सरकार अकेले ही कुछ नहीं कर सकती। हर व्यक्ति को इसमें भागीदार बनना होगा- कचरा उठाने वाले से ज्यादा जिम्मेदारी कचरा करने वाले भी होती है- अगर हर व्यक्ति यह निश्चित कर लें कि कचरा सड़क, गली, मोहल्लों में इधर-उधर न डालकर एक नियत स्थान पर ही डाला जाएगा तो गली-मोहल्लों में होने वाली गन्दगी से बहुत हद तक छुटकारा पाया जा सकेगा।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए कनाडा में कई प्रकार के काम उपलब्ध हैं, जिसमें सफाई मुख्य है- कई वरिष्ठ नागरिक सुबह-सुबह सड़कों की सफाई करते नजर आते हैं- उन्हें कोई भी काम करने पर कोई शर्म नजर नहीं आती- स्कूल कॉलेज के लड़के भी साफ-सफाई के कामों में अपना योगदान देते हैं।

और अंत में मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि इस देश पर प्रकृति की असीम कृपा है- इस पृथ्वी पर 60 प्रतिशत पानी उपलब्ध है उसमें से मात्रा 3 प्रतिशत पानी ही मीठा व पीने योग्य है। उस 3 प्रतिशत में से 20 प्रतिशत पानी सिर्फ कनाडा में है। इस प्राकृतिक चमत्कार से पूरा देश अभिभूत है-

प्राकृतिक सौंदर्य व दर्शनीय स्थलों की तो भरमार है यहां- विश्व प्रसिद्ध नियाग्रा फॉल की छटा तो देखते ही बनती है-

चूंकि मेरा पुत्र डॉक्टर है, अतः वहां के अस्पताल में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उतने साफ सुथरे व व्यवस्थित अस्पतालों की कल्पना करना भी हमारे लिए मुश्किल है- कहने को तो वह ठंडा देश है पर इससे वहां के लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता- बर्फीले वातावरण में भी काम यथावत चलते रहते हैं।

अंत में बस इतना ही कहूंगी- कि जो प्रकृति ने वहां के देश वासियों को दिया है उसे वे अच्छी तरह सहेजना जानते हैं।

प्रेषक- डॉ. श्रीमती कुमुद नागर
इन्दौर
8085518266

महत्वपूर्ण होना अच्छा है...।
किन्तु .... अच्छा होना बहुत महत्वपूर्ण है

हाय-बाय नहीं प्रणाम, चरण स्पर्श कहिये

प्रणाम, दण्डोवत-प्रणाम, चरण स्पर्श, जयराम जी की, जय श्रीकृष्ण, नमस्कार या नमस्ते से अब टाटा, बाय और हाय जैसे सम्बोधन होने लगे हैं पता नहीं आखिर हम भारतीय अपनी संस्कृति और सभ्यता को अंततः कहां ले जाना चाहते है? आखिर इन पछवा हवाओं से हम कैसे और कब बच पाएंगे? यह यक्ष प्रश्न आज सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज के लिए एक पहेली बना हुआ है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वेद, शास्त्र और पुराणों की बात करना तो बेमानी होगी। पर क्या हमारे परिवार में कभी किसी ने हिन्दी का, हिन्दुओं का उत्कृष्ट महाकाव्य रामचरित-मानस कभी नहीं पढ़ा? और यदि पढ़ा तो कभी उसे समझने, समझाने का भी प्रयास किया है? निश्चय ही यह एक चिन्तन-मनन का विषय है। हिन्दी का यह सहज, सरल और सरस महाकाव्य भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है और गृहस्थ जीवन की तो यह एक कुंजी है। बालक-बालिकाओं में संस्कार सृजन करने के लिए मानस के कतिपय प्रसंग यहां प्रस्तुत है। इनसे यह समझाने का प्रयास कया जा रहा है कि प्रणाम और आशीर्वाद का हमारे खास कर बालकों के जीवन में क्या महत्व है। एवं कार्य सिद्धि में प्रणाम और आशीर्वाद कितने कारगार सिद्ध होते हैं। आइये आज हम इस विषय पर थोड़ा चिंतन करें। रामचरित-मानस महाकाव्य के प्रणेता कविकुल चूड़ा मणी तुलसीदास जी महाराज ने मानस रचना की सफलता के लिए सरस्वती, श्री गणेश, गुरू, संत समाज आदि की वंदना, प्रणाम के साथ ही दुष्ट जन को भी वंदना या प्रणाम किया है।

बा हुरि बंदि खलगन सति भाएं, जे बिनु काज दाहिने हु बाएं। इसी प्रकार जिस धनुष को **भूत सहस दस एकहि बारा, लगे उठावन टरहिं न टारा।** को गुरू प्रणाम करके **गुरूपद बंदि सहित अनुरागा, राम मुनिन्ह आय सु मांगा।** लव निवेश में भंग कर दिया। इन लघु प्रसंगों के साथ ही लंका कांड में तो प्रणाम और आशीर्वाद का बड़ा मार्मिक एवं प्रभावशाली प्रसंग है। जो यहां प्रस्तुत

है।

रामानुज लक्ष्मण प्रथम बार जब मेघनाद से युद्ध करने के लिए चले तो दोहे के अनुसार **आयसु मांगिराम पहिं, अंगदादि, कपि साथ, लछिमन चले क्रुद्ध होइ, वान सरासन हाथ।**

अर्थात यहां लक्ष्मण ने अपने अग्रज श्रीराम से केवल आज्ञा मांगी, प्रणाम नहीं किया। इसलिए स्वाभाविक है। श्रीराम ने आज्ञा ही दी, प्रणाम नहीं करने से आशीर्वाद नहीं दिया। दूसरे लक्ष्मण रण भूमि में क्रोधित होकर चले और क्रोध विवेक खो देता है। यही बात लक्ष्मण के प्रति हुई। दुश्मन को बिना समक्ष देखे क्रोध कैसा? यह कहां तक उचित है? परिणामतः लक्ष्मण विवेक से युद्ध न कर सके और मेघनाद की वीर घातिनी शक्ति के शिकार होकर मूर्छित हो गए। यह प्रणाम न करने का प्रतिफल ही तो था। इसके विपरीत दूसरी बार जब लक्ष्मण पुनः मेघनाद से युद्ध के लिए जाने लगे तो उन्होंने क्रोध त्याग कर विवेक पूर्ण भैया श्रीराम को चरण स्पर्श (प्रणाम) किया।

रघुपति चरण नाइ सिर, चलेउ तुरंत अनंत।
अंगद, नील मयंद नल, संग सुभट हनुमंत।।

परिणाम में लक्ष्मण ने मेघनाद का अंत कर दिया। यही प्रणाम एवं आशीर्वाद की शक्ति है।

एक कथा के अनुसार मार्कण्डेय ऋषि का उदाहरण हमारे समक्ष है। बालक मार्कण्डेय की आयु मात्र 5 वर्ष की ही विधाता ने लिखी थी। लेकिन उनकी माता द्वारा मार्ग से गुजरते हर साधु, संतादि को प्रणाम करने की आदत डाल देने पर एक दिन सन, सनातन, सनत तथा सनत कुमार के मार्ग से गुजरने पर स्वभाववश बालक मार्कण्डय ने चारों ऋषियों को प्रणाम किया। ऋषियों ने बालक को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दे दिया। किन्तु जब उन्हें उसकी मात्र 5 वर्ष की आयु होने का ज्ञान प्राप्त हुआ तो उन्होंने मार्केण्डेय को संकट के समय भगवान आशुतोष की आराधना का उपदेश दिया। बालक ने ऐसा ही किया और 5 वर्ष पूर्ण होने पर जब यमदूत उसे लेने आए तो वह शिवलिंग से लिपट गया। अंततः भगवान शंकर द्वारा बालक की रक्षा कर उसे अमर बना दिया। यह प्रणाम का ही प्रभाव था। कहने का तात्पर्य यही है कि हमें बालक-बालिकाओं में टाटा, और हाय संस्कृति से बचाकर प्रणाम या चरण स्पर्श कहने-करने की आदत सृजन करना चाहिये। इससे बालक संस्कारवान बनेंगे जो आगे चलकर श्रेष्ठ नागरिक बनेंगे, जिसकी आज राष्ट्र को अपेक्षा है।

- हरिनारायण नागर (पत्रकार)
अध्यक्ष नागर परिषद शाखा पीपलरावां देवास

नम्रता से जीवन में पात्रता आती है। और 'पात्रता' पूर्णता की पहली शर्त है।

खुश होने के पांच उपाय

जीवन में खुशी कहां से लाएं? कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि खुशी का निर्धारण आनुवंशिकी, स्वास्थ्य और कुछ ऐसे कारणों से होता है, जो हमारे हाथ में नहीं होते। लेकिन हाल ही में हुई एक रिसर्च से पता चला है कि लोग खुद अपनी खुशी खोज सकते हैं और कुछ बातों से इसमें लगातार इजाफा भी कर सकते हैं। आम तौर पर, आम लोगों के दिमाग में पहला सवाल तो यही होता है कि क्या सचमुच हमारे चाहने से हमें खुशी नसीब हो सकती है?

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया की मनोवैज्ञानिक सोंजा ल्यूबोमिर्सी की खोजों से पता चलता है कि खुशी आंशिक तौर पर आनुवंशिकी से तय होती है और कुछ हद तक जीवन की परिस्थितियां भी हमारी खुशी को तय करती हैं। लेकिन इन खोजों के बावजूद खुशी का बहुत बड़ा हिस्सा हम खुद अपने प्रयासों से प्राप्त कर सकते हैं। ल्यूबोमिरस्की ने सेन डिएगो में अमेरिकन असोसएिशन ऑफ एडवांसमेंट ऑफ साइंस की वार्षिक बैठक में खुशी के बार में अपनी नवीनतम रिसर्च की जानकारी दी। ल्यूबोमिरस्की और उनके सहयोगियों ने पिछले साल 51 अध्ययनों की समीक्षा की थी जिनमें विभिन्न किस्म की सकारात्मक सोच के जरिए खुशियां बढ़ाने की कोशिश की गई थी। टीम ने पाया कि इन बातों से सचमुच खुशी बढ़ाई जा सकती है। टीम के निष्कर्ष जर्नल ऑफ क्लिनिकल साइकोलॉजी में प्रकाशित किए गए हैं।

ल्यूबोमिरस्की के मुताबिक यदि हम पांच बातों का ध्यान रखें तो हम अपनी खुशियां को बढ़ा सकते हैं। आइए इन पर गौर करें :

आभार व्यक्त करें : अध्ययन में भाग लेने वाले लोगों से उन लोगों को कृतज्ञता पत्र लिखने को कहा गया, जिन्होंने कभी किसी न किसी रूप में उनकी मदद की थी। अध्ययन में पाया गया कि कृतज्ञता पत्र लिखने वाले लोगों ने अपनी खुशी में बढ़ोत्तरी का अहसास किया। इसमें आश्चर्य की बात यह थी कि जिन लोगों ने कृतज्ञता पत्र संबंधित लोगों को नहीं भेजे, उन्होंने भी पत्र लिखने के बाद खुद को ज्यादा बेहतर महसूस किया। आभार व्यक्त करने के लिए अपने विचार जरूर लखें, लेकिन उस व्यक्ति को वह पत्र भेजना जरूरी नहीं है।

परोपकार करें : यह देखा जाए कि जो लोग दूसरों की मदद करते हैं, वे एक तरह से खुद की मदद करते हैं। जो लोग परोपकार के लिए अपना समय या धन देते हैं अथवा जरूरतमंद लोगों की मदद करते हैं, वे अपनी खुशी के स्तर में सुधार महसूस करते हैं।

आशावादी रहें : आशावादी विचार रखना एक अच्छी आदत है। अध्ययन में भाग लेने वाले लोगों से कहा गया कि वे अपने लिए एक आदर्श भविष्य की कल्पना करें और इसका ब्यौरा नोट करें। ऐसा कुछ हफ्ते तक करने के बाद इन लोगों ने अपने खुशी के स्तर में सुधार होने की बात कही।

अच्छी बातें नोट करें : जो लोग नियमित रूप से हर हफ्ते अपने साथ होने वाली तीन अच्छी बातों को नोट करते हैं, वे अपनी प्रसन्नता में बढ़ोतरी महसूस करते हैं। ऐसा लगता है कि सकारात्मक बातों पर ध्यान केंद्रित करने से उन्हें महसूस करने के कारण याद आ जाते हैं।

गुणों का उल्लेख करें : अध्ययन के दौरान लोगों से कहा गया कि वे अपनी विशेषताओं या खास गुणों की पहचान करें अथवा यह बताएं कि उनकी सबसे बड़ी ताकत क्या है? इन लोगों से यह भी कहा गया कि वे अपनी विशेषता का प्रयोग कुछ नए ढंग से करें। मसलन किसी व्यक्ति को हंसी-मजाक की आदत है, तो वह चुटकुले आदि सुनाकर अपनी ऑफिस मीटिंगों के गंभीर वातावरण को हल्का कर सकता है या दोस्तों का मूड अच्छा कर सकता है।

-संकलन
दुर्गा-पवन शर्मा

बाकी पैसे कहाँ हैं?

एक मंत्री जी भाषण दे रहे थे उसमें उन्होंने एक कहानी सुनाई:

एक व्यक्ति के तीन बेटे थे, उसने तीनों को 100-100 रूपए दिए और ऐसी वस्तु लाने को कहा जिससे कमरा पूरी तरह भर जाये। पहला पुत्र 100 रूपए की घास लाया पर उससे पूरी तरह कमरा नही भरा। दूसरा पुत्र 100 रूपए का कपास लाया उससे भी कमरा पूरी तरह नही भरा। तीसरा पुत्र 1 रूपए की मोमबती लाया और उससे पूरा कमरा प्रकाशित हो गया।

आगे उस मंत्री ने कहा हमारे प्रधानमंत्री उस तीसरे पुत्र की तरह है, जिस दिन से राजनीति में आये है उसी दिन से हमारा देश उज्जवल प्रकाश और समृद्धि से जगमगा रहा है।

तभी पीछे से किसी आदमी की आवाज आई वो सब तो ठीक है बाकी के 99 रूपए कहाँ है?

साल की चिंता करें या जीवन की..?

मान लीजिए कि कोई लड़का आठवीं में पढ़ता है और उसके मां-बाप को शक है कि इस बार वह फेल हो जाएगा, तो तुरंत उसका टी.वी. देखना, रेडियो सुनना, कहीं आना-जाना बंद। पढ़ाई शुरू, ट्यूशन शुरू। सारा का सारा घर उसके पीछे लग जाता है कि तू पढ़ ले, पढ़ ले। नहीं पढ़ा तो फेल हो जाएगा। फेल हो जाएगा तो तेरा एक साल बर्बाद हो जाएगा। तेरा एक साल जो बर्बाद होगा तो तेरी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण साल खराब हो जाएगा। और आपके सारे मित्र, दोस्त, सगे, संबंधी आपके इस विचार से सहमत होते हैं और बच्चे को एक स्वर में कहने लगते हैं- पढ़-पढ़।

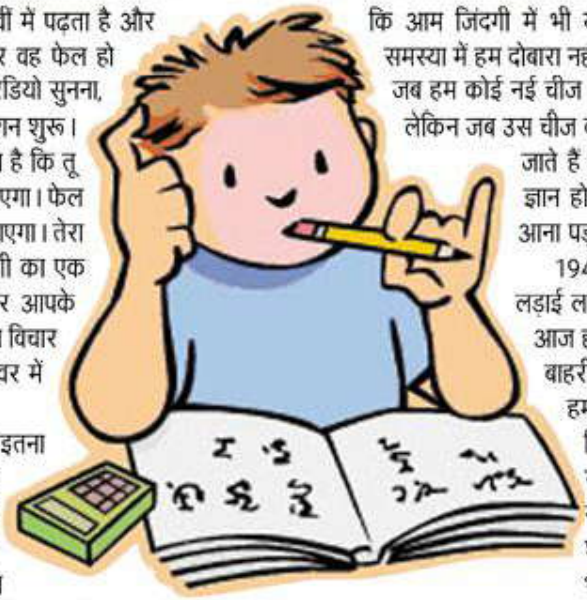

उस बच्चे पर पढ़ाई के लिए क्यों इतना जोर देते हो आप? नहीं पढ़ेगा तो उसका होगा क्या? एक साल ही तो बर्बाद होगा। लेकिन नहीं। हम सब लोग पूरी कोशिश करते हैं कि किसी तरह उसका एक साल बर्बाद न हो। लेकिन ताज्जुब है कि हमें जन्म बर्बाद होने का कोई भय नहीं रहता, एक साल बर्बाद होने का बहुत भय होता है।

यह ध्यान रखिए कि फेल होकर तो वह बच्चा अपनी कक्षा में अकेला ही सही, दोबारा वापस आ जाएगा। लेकिन संसार में फेल होकर तो दोबारा नहीं आएगा। हिंदू धर्म में ऐसी मान्यता है कि हम दोबारा जन्म लेंगे और हम सब सोचते हैं कि जब दोबारा जन्म लेंगे, तो कोई चिंता नहीं, क्योंकि सारी दुनिया फेल (जीवन में) होकर ही वापस आ रही है।

इसलिए मोक्ष की कामना करने वाले प्रार्थना करते हैं, पुनः पुनः जन्म लेना, पुनः पुनः मरना और पुनः पुनः माता के गर्भ में सोना- इस गहरे और अनंत संसार से मुरारी की कृपा मेरी रक्षा करें। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जिस आदमी के जीवन में ज्ञान आ जाता है, वह दोबारा इस संसार में जन्म नहीं लेता। वह संसार में दोबारा नहीं आता। आप देखेंगे कि आम जिंदगी में भी यदि थोड़ा-सा ज्ञान हो जाए तो उस समस्या में हम दोबारा नहीं फंसते। संसार में भी आप देखिएगा। जब हम कोई नई चीज शुरू करते हैं, तो थोड़ा कष्ट होता है। लेकिन जब उस चीज का ज्ञान हो जाए तो फिर हम स्थिर हो जाते हैं। इसी तरह से जब हमें अध्यात्म का ज्ञान हो जाए तो फिर संसार में दोबारा नहीं आना पड़ता।

1947 से पहले भारत ने आजादी की लड़ाई लड़ी। क्रांतिकारियों के अथक प्रयास से आज हम आजादी की हवा में जी रहे हैं। हमें बाहरी स्वतंत्रता तो मिल गई है, परंतु क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं? सच तो यह है कि आज भी हम गुलाम हैं। स्वतंत्रता संग्राम के पहले की पृष्ठभूमि में अगर नजर डालें, तो आप देखेंगे कि शुरुआत में यह नहीं था कि हर कोई भारत की आजादी का झंडा उठाए तथा मातृभूमि के लिये सब कुछ त्यागने के लिए निकल पड़ा हो। इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो पाएंगे कि शुरुआत में जिन लोगों ने आजादी की चिंगारी जलाई, वे अधिकतर विदेशों में अध्ययन कर या रह कर आए थे। वहां जब स्वतंत्रता का अनुभव किया तथा वापस आकर विरोधाभास देखा तो लगा कि हम स्वतंत्र नहीं हैं। उसके बाद उन्होंने पूरे देश में आजादी के संघर्ष का बिगुल बजाया। अब हम सबने बाहरी स्वतंत्रता का सुख चख लिया है। अब हम किसी भी हाल में गुलामी की जंजीरों में नहीं बंधना चाहेंगे। इसी तरह संत जन उस अखंड आनंद का सुख जान चुके होते हैं। इसलिए वे वापस संसारी नहीं बनना चाहते। पर हम भी उस असली आजादी का स्वाद चखें, इसके लिए थोड़ा प्रयास तो करना होगा। सोचिएगा इस बात पर।

संकलन-
सौ. श्रद्धा नागर

पति पर निबंध!

पति एक घरेलू प्राणी है , यह सभी घरों में अनिवार्य रूप से पाया जाता है।

इस घरेलू प्राणी को पालने का पूरा अधिकार पत्नी पद से सम्मानित महिला को प्राप्त होता है।

1. इसकी दो आंखे होती है जिससे यह मूक रहकर मात्र देखता है।

2. इसके दो कान होते है जिससे पत्नी की डांट फटकार सुनता है।

3. इसका एक मुख होता है जिसके खुलने पर पूर्णतः पाबंदी होती है।

4. इसकी इकलौती कटी नाक में अदृश्य नकेल होती है।

5. यह काफी कुछ मनुष्य से मिलता जुलता प्राणी होता है।

6. वैसे पति होने से पूर्व यह मनुष्य कि श्रेणी में होता है। पति के प्रकार:

जोरू का गुलाम: यह प्रजाति हमारे देश में बहुतायत रूप से पायी जाती है। इस प्रजाति के पति टिकाऊ, मेहनती, सीधे व वफादार होते है। यह उम्दा नस्ल के होते है। डांट, मार, गालियाँ इन पर प्रभावहीन होती हैं। पालने के लिए यह पति सबसे अच्छे होते हैं।

जोरू का बादशाह: यह प्रजाति धीरे धीरे लुप्त होती जा रही है। इसलिए सरकार जल्द ही इनके संरक्षण के लिए बादशाह पति संरक्षण नामक अभियान चलाने जा रही है।

आत्मा और मन की लड़ाई है गीता में...

गीता आत्मा और मन की लड़ाई है। आत्मा चाहती है ईश्वर दर्शन और मन चाहता है भौतिक सुख (इन्द्रिय सुख)। आत्मा है अंधी और मन है लंगड़ा। दोनों को ही है शरीर की आवश्यकता। कोई शरीर मिले तो दोनों ही (आत्मा और मन) अपना-अपना संकल्प पूरा करें। अब हम कहानी सुनते हैं। एक अंधा था, एक लंगड़ा था। दोनों मेला देखना चाहते थे। कहानी का हल सीधे तरीके से निकाला गया कि लंगड़ा अंधे के कंधे पर बैठ जाए, लंगड़ा राह बताता जाता और अंधा चलता जाता। दोनों मेले में पहुंच जाएंगे। परन्तु संसार में ऐसा होता नहीं। अंधा अपनी (बुद्धि की नजर) से सोचता कि मैं इतने वजनी आदमी को उठाकर चल सकता हूं क्या? और मेले में जे मुझे चाहिए वह मिलेगा भी या नहीं? लंगड़ा तो स्वार्थी, वह संसार को अच्छी तरह देख सकता। वहां कई तरह के पकवान मिलेंगे, झूले मिलेंगे, नाच-गाना है। कई तरह की मनोरंजनात्मक सामग्री होगी। लंगड़ा अंधे को दिलासा देता है। मैं तुझे सब सुनाऊंगा दिखाऊंगा और खिलाऊंगा। विश्वास नहीं तो मेला नजदीक है तू शोर-शराबे की आवाज तो सुन ही सकता है और सच यह है आत्मा बहरी है, गूंगी है, उसे केवल हरिदर्शन के भाव की भूख और प्यास है वह उस परमपिता परमात्मा का अंश है। आत्मीयता की सहानुभूति के साथ ही वह उसके ऋण से बंधी है। बस इस आधार पर अंधा लंगड़े को अपने कंधे पर बैठाकर मेले में चलने के लिए साथ निभाता है। यह समझौता स्वयं के कल्याण व ऋण के चुकता करने का भी होता है। क्योंकि मनुष्य जन्म होते ही ऋण शुरू हो जाता है। जैसे कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है मिट्टी की तैयारी, घड़े को मजबूती देना और ठंडा पानी होने लायक परिस्थितियां देना और अपनी लगन, मेहनत और परिपक्व घड़े को बनाकर आत्म शान्ति महसूस करना यहां उस घड़े का मोल भाव सामान्यतः एक पिता की तरह सोचता नहीं है और बनिये की तरह व्यापार नहीं करता। इसलिये वर्तमान में किसान, कुम्हार जुलाहा आदि लोग घाटे में रहते हैं। अपनी बनाई वस्तुओं की सुन्दरता में संतुष्ट भी है। कुम्हार सोचता है मेरे इस घड़े का जल जो भी पीयेगा। उसकी आत्मा तृप्त हो जाएगी। यह शरीर रूपी समझौता वैसे चित्रगुप्त द्वारा बनाई गई हमारी कर्मरूपी सीढ़ी के आधार पर हमारे जीवन लक्ष्य को प्रकाशित करता है। यहां गीता में आत्मा और मनन के द्वारा निश्चय किया गया है। हे अर्जुन। (अर्थात् तुम सब वैभव अर्जित कर सकते हो)। तुम सम्पूर्ण उपभोग-भोग लेना चाहते हैं। क्योंकि आत्मा स्वार्थी नहीं है वह भी ईश्वर-दर्शन करना चाहती है, ईश्वर की सता वैभव दिखाना चाहती है। क्योंकि संसार में सभी पूर्ण ब्रह्म है। पेड़ पूर्ण है, बीज भी पूर्ण है, पेड़ के जड़, स्तम्भ पते फूल, सभी पूर्ण है जो बीज में दिखाई नहीं देते। बीज देखने पर पेड़ ऋण दिखाई देता है। उसी प्रकार अज्ञान होने पर ईश्वर दर्शन नहीं देता, यहां पर दुर्योधन को दूसरे की थाली में ज्यादा घी नजर आता है वाली बात पर इन्द्रप्रस्थ छीनने पर पांचों पांडव दृढ़ प्रतीतज्ञ, मन कमजोर करना चाहता है, कमजोर मन दयनीय व बेबस होकर अपना सम्मान खो सकता है और जीवन स्वाभिमान का नाम है और पाण्डवों में सात्विक प्रेरणा (परमात्मा का आत्मारूपी साक्षात्कार होने) जागृत थी। क्योंकि जो जीवन की स्वयं के कर्म के फल के आधार पर जीता है वहां उसे किसी भी ऋणी होने से बचने के लिए ईश्वर अपनी विभूति के दर्शन कराते रहते हैं। यह सुख या मार्ग उसी तरह का है जैसे सागर का जल खारा है और घड़े का जल मीठा, ठण्डा, स्वास्थ्य रक्षक। यही सागर परमात्मा है और घड़े का जल आत्मा। जो लोगों को जीवन प्रदान करता है। दान से प्रदान में सुख ज्यादा है। जिसका मोल-भाव किया ही नहीं जा सकता। पति-पत्नी के सन्तान होने पर आत्मिक सुख प्राप्त होता है। यहां लड़का-लड़की होने की बात नही है। लड़की वालों के यहां से कितना दहेज दिया गया है, उसकी बात नहीं होती ये सब सुख नहीं व्यापार लालच व धोखा है जो आत्मा को भ्रमित करने का साधन है मन की चाह आत्मा को धोखा देना चाहती है, लेकिन आत्मा रूपी दर्पण पर मैल जम जाना जिसे कहा जाता है। ऐसी स्थिति में अकेले में झूठ और पाखंड में मनुष्य को नींद नहीं आती और आत्मा उसे सजग करती है तेरे मन पर मैल जमा है जरा साफ कर और देख मेरी आंखों से। दर्पण के साफ होते ही तेरी बनाई कृति में तुझे मेरे ईश्वर का दर्शन होगा। इससे आगे बढ़ने पर जिस प्रकार घड़ा फूटा, पानी फिर से मिट्टी में मिल जाता है। घड़ा मिट्टी का मिट्टी में मिल जाता है। यानि परमात्मस्वरूप प्राप्त हो जाना। यही कारण है मरने के बाद शरीर को पंचतत्व में विलीन कर देना। जब तक घड़ा है यानि कि शरीर है अपने आपको स्वच्छ साफ करते रहो। एक बार स्वयं के गुण-दोष पर नजर डालो। सप्ताह में, महीने में, वर्ष में और अभियान चलाकर स्वयं के कल्याण के लिए अपने में आए दोषों से अपने को दूर रखो। अर्थात मन साफ रखो स्वयं में निष्ठा, ईमानदारी और मन में आए अनेक विकार से दूर रहे तो आत्मा जो उजाला फैलायेगी उसका प्रकाश स्वयं पर परिवार पर, समाज पर, व देश पर पड़ेगा। केवल सजग रहने की आवश्यकता है। पाखंड और दिखावा मेले का सही आनंद की प्राप्ति नहीं कराते, क्योंकि हम दूसरों में दृष्टि दोष से पीड़ित होने लगते हैं,

इसलिए गीता में कृष्ण ने दोनों सेनाओं के बीच में रथ खड़ा कर कहा- देख, अर्जुन, दुर्योधन व तेरी सेना के महारथियों को देख यह धर्म क्षेत्र अर्थात मेले में अकेले आनंद नहीं है सभी के साथ मिलकर पार जाने की क्रिया है और उसके साथ कर्मक्षेत्र। यहां ईश्वर का साकार रूप देखते हुए बड़प्पन से कर्म में अपना स्थान बनाना है। कई ज्ञानी भी यहां ईश्वर दर्शन की जगह स्वयं कर्तारूप में प्रस्तुत होने लगते हैं, परन्तु यहां पर ईश्वर दर्शन का वह रूप जिसे योग क्षेत्र कहा गया दिखाई देता है, सचमुच कर्ता तो कोई ओर है, जिसने कर्म के साथ जीवन की परिस्थिति दी है और ऋषि मुनि तो संसार से बाहर जीते हैं उन्होंने सबसे हटकर जीवन साध लिया है लेकिन अर्जुन, सच्चाई यह है कि मैं यहां भी हूं। मन की आंखों से उस आत्मिक उजाले को तू देख, जीवन जीते-जीते शरीर कमजोर हो जाता है। थक जाता है, इसके विपरीत संसार में जब तक शरीर द्वारा फैलाई सत्ता होगी। ईश्वर दर्शन की भूख दिखाई तो देगी परन्तु अहंकार की सत्ता ईश्वर दर्शन से दूर ले जाएगी, इसके विपरीत ईश्वर दर्शन की कुन्जी समर्पण भी है। बूढ़ा होने पर एकांत बढ़ जाता है। जब मनन की प्रक्रिया भी बढ़ती है। ईश्वर ठीक सामने आ जाते हैं। संसार में लोगों के द्वारा नदिये सम्मान में अहंकारी मन ईश्वर दर्शन नहीं करता। वर्ना बुढ़ापे में ईश्वर दर्शन होने पर व्यक्ति नाचने लगता है और यह समझौता जो अंधा लगड़े को कराता है। अंधे को दर्शन हो जाता है जैसे सूरदास जी और हम आंख वालों संसार ही दिखाई देता है और अंधे के साथ किए गए समझौते में हर जन्म में लंगड़ा अंधे के कंधे पर बैठता है लंगड़ा के इन्द्रिय सुख (सांसारिक सुख) का अन्त नहीं है, किसी ने राजा भर्तृहरि को जीवन-भोग स्वरूप के बाद मनुष्य जीवन को चौथी अवस्था संन्यास से परिचय करवाया और मनुष्य जन्म अर्थ सार्थक किया। श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन के ताउम्र साथ-साथ रहकर सजग करते हुए कहा था। देख दोनों सेनाओं में तेरे कौन-कौन से साथी हैं। इस धर्म भूमि पर। द्वेष की भावना से पीड़ित इस संसार में सबसे पहले अर्जुन ने अपने बड़े पिता धृतराष्ट्र को देखा जो द्वेष से रक्तित उस युद्ध को सुन रहे थे, वे केवल दुर्योधन के युद्ध में जीतने की उम्मीद लगाए बैठे थे। परन्तु उतनी ही स्थिति वाली कुन्ती का दुख। उसकी अपनी बहू द्रोपदी के साथ किया जाना वाला अत्याचार किस महिला को पीड़ित नहीं करेगा। यह द्वेष व कुटेव नामक भयानक रोग जो अन्धे धृतराष्ट्र ने पाले (और विनाश को प्राप्त हुए) ये कर्मभूमि धर्म का क्षेत्र है। यहां जीवन जीने की समुचित व्यवस्था चारों आश्रम व्यवस्था बनाई गई है। एक के बाद एक जीते हुए जीवन काल में व्यक्ति अपने आश्रमी व्यवस्था के माध्यम से जीवन सफल बना सकता है। ब्रह्मचर्य आश्रम अपने आप में पूर्ण विद्यार्थी जीवन की सफलता है। उसके बाद गृहस्थ, व वानप्रस्थ आश्रम को पूर्ण व उचित स्थिति से जिया जाए या ऐसी शिक्षा दी जाए तो व्यक्ति अपना वानप्रस्थ और मोक्ष की अवस्था को सामान्य रूप से प्राप्त कर लेगा यहीं गीता बार-बार समझा रही है। बचपन से ही गीता पढ़ने को दी जाए तो कर्म के साथ सदाचारी मार्ग प्रत्यक्ष हो जाएंगे। परन्तु संसार में सभी उम्र के व्यक्ति जवान रहना चाहते हैं और उस दुर्बुद्धि के चलते दूसरों को धन, स्त्री आदि पर नजर रखकर उसे नरक बना डालता है और अंधा केवल उसे तो चलना है। लंगड़ा का रास्ता बताते जाना ठोकरे अंधा खाता है। ज्ञान होते हुए ईश्वर-दर्शन कराने की क्षमता होते हुए भी। अतः गीता में ईश्वर ने वे समस्त साधन दे दिए है। आश्रम व्यवस्था, योगासन सांख्ययोग और कर्म योग। कर्म से जीवन के फल निश्चित होते हैं। उसमें भी कर्म में अनासक्ति के माध्यम से। परन्तु जीवन खत्म नहीं होता वह संसारी जीवन जीता अशान्ति को प्राप्त होता है ईश्वर दर्शन की लालसा लिये हुए। हम सब वे सब व्यक्ति है, प्रयत्न करते हैं थोड़ा सफल होते हैं और फिर संसार में आ जाते हैं। एकान्त होते हैं अगर हम अंधे की तरह मेले को मिथ्या भाव ले तो हम सफल जीवन में कदम-कदम पर ईश्वर दर्शन करते हैं, बच्चों में, युवा जोड़े में, संस्कारिक कर्म में और माता-पिता ये भाई बहन के प्रेमी जीवन में नाना-नानी, दादा-दादी के साथ समय बिताने में ईश्वर-दर्शन करने से सुलभता से जीते है। यही गीता के प्रत्येक अध्याय में दर्शन होते हैं। जब तक ईश्वर के दर्शन की उत्कर्ष अभिलाषा जाग्रत न हो, उसे ईश्वर दर्शन के एक तत्व कभी दर्शन नहीं होंगे चाहे वो किसी मंदिर का पुजारी ही क्यों न हो। नाशवान संसार की आसक्ति छोड़नी ही होगी, या गीता को समझने व समझाने में समय देना होगा।

- सौ. आशा रमेश शर्मा, इंदौर

बेचारा पति!

पति-पत्नी बच्चे के लिए कपडे खरीदने बाजार गए तो कपड़े की दुकान में अपने पति से पूछा, बच्चे के लिए ये टी शर्ट अच्छी रहेगी न?

पतिः हाँ बहुत अच्छी रहेगी।

पत्नीः पर थोड़ी बड़ी नहीं लग रही है?

पतिः हाँ थोड़ी बड़ी तो है।

पत्नीः ये हरे रंग वाली ठीक रहेगी?

पतिः हाँ हरा बढ़िया रंग होता है।

पत्नीः पर ये हरा रंग ज्यादा डार्क तो नहीं है?

पतिः हाँ डार्क तो है।

पत्नीः ये नीले रंग वाली मुझे बढ़िया लग रही है।

पतिः हाँ बहुत बढ़िया रंग है।

पत्नीः पर इसमें कालर नहीं है।

पतिः बिना कालर की टी शर्ट भी कोई टी शर्ट हुई भला?

पत्नीः ये लाल रंग वाली मस्त लगेगी अपने गुड्डू पर।

पतिः हाँ मस्त लगेगा गुड्डू इस मे।

पत्नीः दुकान वाले भैया ये लाल रंग वाली टी शर्ट दे देना इनको बहुत पसंद आई है।

तीन दिन बाद टी शर्ट की धुलाई में सारा लाल रंग निकल गया। पत्नी ने गुस्से में पति से बोली, एक काम भी ढंग से नहीं आता है आपको.... लाल रंग भी कोई रंग होता है? निकल गया न सारा रंग...दुकान में कह रही थी हरे रंग वाली टी शर्ट ले लो पर आप मेरी सुनो तब न... हर काम में अपनी मन की करते हैं.... देख लिया नतीजा? एक टी शर्ट तो पसंद नहीं कर सकते पता नहीं ऑफिस में क्या साहब गिरी करते होंगे?

प्रतिभाओं का प्रोत्साहन करें

आदमी जब तक कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता, तब तक भीड़ का हिस्सा बना रहता है, भले ही वह कितना भी मेधावी, उपयोगी, परोपकारी, सेवाभावी और विलक्षण क्यों न हो। उसकी और कोई झांकने की कोशिश नहीं करता। इंसान अपनी व्यक्तिगत मेहनत, कड़े संघर्षों, समस्याओं और चुनौतियों से जूझता हुआ स्वयं को स्थापित करने का प्रयास करता है और तब कहीं जाकर कुछ उपलब्धि अपने बुते पर प्राप्त कर पाता है।

आमतौर पर उसकी पूरी संघर्ष यात्रा में ना कोई संरक्षण, प्रोत्साहन या मदद देता है, और ना ही कोई काम आता है और ना ही उसकी परेशानियों को कम करने के लिए अपनी ओर से पहल करता है। यह वह स्थिति होती है जब आदमी को अकेले ही संघर्ष करने को विवश रहना पड़ता है। यह संघर्ष खुद से, अपने कहे जाने वाले लोगों से और जीवन की ढेरों चुनौतियों से होता रहता है।

इस संघर्ष यात्रा में कोई उसके साथ नहीं होता। लेकिन जैसे ही उसे कुछ उपलब्धि मिल जाती है या बड़ा पद, सम्मान या कोई विलक्षण कार्य कर दिखाता है या फिर कोई ऐसा मुकाम पा जाता है जहां बहुतों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। तब सारी की सारी भीड़ उसके पीछे लग जाती है। स्वागत, सम्मान और अभिनन्दन के लिए जैसे कि इन स्वागत और सम्मान करने वालों के परिश्रम से कोई उपलब्धि सामने आ पायी हो। जबकि हकीकत में इस भीड़ का कुछ भी सहयोग उपलब्धियां दिलाने में नहीं होता है। तमाशबीनों की भीड़ अपने-अपने भावी स्वार्थों को देखकर भेड़ों की तरह पीछे जुट जाया करती है और फिर जयगान, प्रशस्तिगान तथा परिक्रमाओं का दौर शुरू हो जाता है।

जिस समय इंसान को संघर्षों के दौर में मदद, संरक्षण और प्रोत्साहन की जरूरत होती है, उस समय सारे लोग किनारे हो जाते हैं और तमाशबीन होकर देखते रहते हैं। विलक्षण विभूतियों और उपलब्धियां प्राप्त प्रतिभाओं का स्वागत, सम्मान और अभिनन्दन होना चाहिए, इससे औरों को प्रेरणा मिलती है लेकिन उस स्वागत, सम्मान या अभिनन्दन का क्या औचित्य है जो कुछ बन जाने के बाद दिया जाए?

होना यह चाहिए कि इंसान को उस समय मदद की जानी चाहिए जब वह सफलता के शिखरों पर चढ़ना शुरू करता है। लेकिन इस समय ना तो समाज संगठन सहयोग करते हैं, न अपने क्षेत्र के महान और लोकप्रिय कहे जाने वाले देवदूत, आम आदमी के रहनुमा (नेता) भी मदद के लिए आगे नहीं आता। आदमी अपने बूते जब कुछ बन जाता है, तब जाति विशेष के लोग उसे अपना सम्मान गौरव, प्रेरणा स्त्रोत और अपने वाला बता कर इतनी अधिक पब्लिसिटी करते हैं कि उस व्यक्ति का ध्रुवीकरण ही हो जाता है, जैसे कि वह क्षेत्रीय और वैश्विक पहचान का ना होकर जाति विशेष का हो?

इंसानियत और वैश्विक चिंतन से कोसों दूर रहने वाले लोग जातिवाद के नाम पर बड़े-से-बड़े आदमियों का कद इतना छोड़ा कर दिया करते हैं कि यह सब देखकर शर्म भी आती है और तरस भी। यह देखा जाता है कि हर जाति में ऐसे-ऐसे लोगों का समूह बना होता है जो खुद न किसी की मदद करते हैं, न सद्भावी होते हैं और न ही संरक्षक या मार्गदर्शक का धर्म निभा सकते हैं।

इन लोगों को हमेशा मंच और लंच चाहिए होता है। हर अवसर को अपने लिए भुनाने और समाज में अपने आपको बड़े के रूप में प्रतिष्ठित और गणपति के रूप में सर्वप्रथम पूज्य बनाए रखने के लिए ये सिद्ध होते हैं और ये ही लोग हैं, जिनका जाति के उत्थान से कहीं अधिक अपने यश और प्रतिष्ठा को बनाए रखने का भूत सवार होता है। ये लोग साल भर कोई न कोई अवसर तलाशते रहकर अपने लिए मंच और पब्लिसिटी का प्रबंध कर ही लिया करते हैं। इन्हें न जाति से मतलब है, न अपने क्षेत्र से। अपने अहंकार की पुष्टि और प्रतिष्ठा की तुष्टि के लिए ऐसे लोग पूरे समाज या समुदाय को गुमराह करते हुए मुख्य धारा में बने रहते हैं।

ऐसे लोग समाज, समुदाय या अपने क्षेत्र के लिए किसी सेवा कार्य में धेला भर भी देने तक की उदारता नहीं रखते, बल्कि जो लोग समाजसेवा के लिए उदारतापूर्वक काम करते हैं, उनकी निंदा करते हुए अपने आस-पास टुच्चे लोगों की ऐसी भीड़ हमेशा बनाए रखते हैं जो इनकी जी हुजूरी और हां में हां मिलाकर जयगान करती रहती है।

आजकल वही सर्वाधिक प्रसिद्ध माना जाने लगा है जिनके पास बुद्धिहीन लठैत, चाटुकार और जयगान करने वाले ऐसे लोगों का ज्यादा से ज्यादा जमावड़ा हो, जो न पढ़े-लिखे हैं, न काम-धंधा कर कमा खाने की कुव्वत है और न ही लोगों के दिलों-दिमाग में इन्हें लेकर किसी प्रकार की कोई श्रद्धा।

हमें चाहिये कि हम यह देखें विलक्षण व्यक्तित्व के बच्चों को शुरुआत से ही हर संभव मदद करें। समाज संगठन ऐसी व्यवस्था बनाए कि समाज के एक, दो नहीं सभी बच्चों के लिए ठोस प्रयास करें और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करें। तभी आने वाली नई पीढ़ी समाज संगठन से जुड़ेगी और नहीं तो 100-200 समाजजनों में ही अपनी अध्यक्षता बघारते रहे।

- पवन शर्मा

मुर्गे का डर!

एक आदमी ने एक मुर्गा रखा हुआ था जो कि उसे बहुत प्यारा था। मुर्गा भी अपने मालिक को बहुत प्यार करता था। एक दिन मालिक बीमार हो गया। मुर्गा अपने मालिक को खिडकी से बैठा देख रहा था। मालिक की पत्नी उसके बगल में बैठी थी।

पत्नी बोली, आपको बहुत तेज़ बुखार है। मै आपके लिए चिकन सूप बना लाती हूँ।

इतना सुनते ही मुर्गे के होश उड गये और वो तुरंत बोला, बहन जी एक बार Crocin दे कर भी देख लो।

प्रसाद भोग और नैवेद्य में अन्तर

मिष्ठान या भोजन के रूप में ईश्वर को अर्पित किए जाने वाला पदार्थ नैवेद्य कहलाता है जबकि प्रसाद और भोग शब्द जूठन का नाम है। अत: ईश्वर को समर्पित भोज्य पदार्थ नैवेद्य है न कि भोग और प्रसाद। इसलिए कभी भी प्रसाद या भोग शब्द न बोलकर नैवेद्य का उच्चारण करें।

शब्दों की शक्ति को समझें

नैवेद्य का अर्थ है- न+एव+इद्य - यह मेरा नहीं है अर्थात् ईश्वर का है अत: उसे ही समर्पित। शुद्ध, सात्विक और सुगन्धित खाद्य पदार्थ। देवता वायुमुखी और सुगन्धग्राही होते हैं। वे केवल नैवेद्य की सुगन्ध ग्रहण कर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

नैवेद्य को दोनों हाथों में लेकर देवताओं को दूर से अर्पित किया जाना चाहिए ताकि वे सुगन्ध, खुशबू ग्रहण कर सकें।

जो लोग देव मूर्ति के मुख में और शिवलिंग पर नैवेद्य लगा देते हैं वह अनुचित ही नहीं महापाप है इससे घोर गरीबी और अनिष्ट प्राप्त होते हैं। मूर्तियों पर केवल पुष्प एवं शिवलिंग पर

जल, दूध, दही, शहद, घी, भांग आदि अनेक फल फूल बिल्वपत्र, धतूरा, भांग, अकौआ चढ़ाने का वैदिक प्राचीनतम और वैज्ञानिक विधान है।

प्रसाद- देवताओं पर नैवेद्य अर्पित करने के पश्चात जो बचता है वह प्रसाद कहलाता है ये भक्तजनों को अर्पित किया जाता है।

भोग- जब भक्तगण प्रसाद को खाते हैं, तो वह भोग हो जाता है। भोगने वाली वस्तु या खाद्य पदार्थ को भोग कहने की परम्परा है।

विशेष ध्यान रखें कि देवता न तो कभी भूखे रहते हैं और न ही वे खाते हैं। वे सदैव भाव के भूखे होते हैं। भाव के अच्छे होने पर भी अभाव खत्म होते हैं।

भोग लगे या रूखे सूखे।
शिव तो हैं श्रद्धा के भूखे।।

किसी परम शिव भक्त की कुछ ऐसी ही भावना है।

नैवेद्य के विषय में वैज्ञानिक व्याख्या फिर कभी अगले अंकों में दी जावेगी।

इसीलिए सम्पूर्ण भारत की धरती पर असंख्य मंदिरों में जगह देवताओं की प्रतिदिन पूजा होती है और उन्हें नैवेद्य समर्पित किया जाता है। देवताओं में अग्नि, वायु, जल व आकाश तत्व की अधिकता होती है, इसलिए उनके सामने नैवेद्य अर्पित करने से, भगवान सुगन्ध ग्रहण कर नैवेद्य को स्वादिष्ट बना देते हैं।

-गायत्री मेहता, इंदौर

टूटे दिल को जोड़ना

बहुत कठिन है टूटे दिल को जोड़ना।
आओ कोशिश करें दिलों में प्यार भरें
हो सकता है कोशिशें, सब कामयाब हों, ऐसा करें
अच्छा नहीं लगता, इक-दूजे से मुंह मोड़ना
बहुत कठिन है...
यादें होती हैं जो साथ जाती हैं, दोस्त।
जिंदगी तो प्यार से संवर जाती है, दोस्त।।
सबकुछ यहां रह जाता, पर कहां होता ऐसा सोचना?
बहुत कठिन है...
कैसे मैं बुझाऊं मन में लगी अगन को यहां?
स्वार्थ की अंधी दौड़ कैसे पूरा करे सपन को, यहां?
अच्छा भी नहीं लगता मुझे किसी का दिल तोड़ना,
बहुत कठिन है...
दुनियां को कैसी रीत है, मिले न मन के गीत हैं?
कैसी हवा चली है देखो भूले जीवन संगीत हैं?
अच्छा नहीं लगता, मुझे बिना बात के बोलना।।
बहुत कठिन है...

- सुभाष नागर (भारती)
अकलेरा, राज.
07431-272310

श्री गणेशाम्बिकेभ्यो नमः

गर्व से कहो हम नागर है।

समग्र गुजरात नागर परिषद (महामंडल)

Email : sgnagarparishad@yahoo.com

कार्यालय : C/o रीता नरेश राजा 458 , जेठाभाइनी पोल, पोस्ट ओफिस के सामने, खाडिया, अहमदाबाद 380 001 (गुज.)

दूरभाष - 079-22140688 मोबाईल : 09974034466, 9426749833

दिनांक : 01-10-2014

प्रिय हाटकेशबंधु /भगिनी जयहाटकेश

हार्दिक शुभ कामनासह सहर्ष विदित किया जाता है कि "समग्र गुजरात नागर परिषद" महामंडल, अहमदाबाद द्वारा सन 1998 से प्रतिवर्ष आयोजित जीवनसाथी पसंदगी संमेलन की अष्टदशम वीं कडी का आयोजन दिनांक 4-1-2015 रविवार को अहमदाबाद में प्रस्तावित है ।

हमें अत्यंत प्रसन्नता होगी यदि आपकी सहभागिता की जानकारी आप हमें संलग्न प्रपत्र को सम्पूर्ण रुप से भरकर दिनांक 20-12-2014 तक ही उपर वर्णित कार्यालयीन पते पर भिजवाकर सुनिश्चित करें । इसके पश्चात, प्राप्त होने वाले आवेदनपत्र स्वीकार करना संभव नहीं होगा, कृपया नोट लेंवे । जरुरत पर इसी फोर्म की फोटो कोपी भी भरकर भेज सकेंगे । यदी आपको इस आवेदनपत्र की आवश्यकता ना हो तो आप अन्य जरुरतमंद नागर ब्राह्मण परिवार को देकर आभारी करें । आवेदन पत्र सुवाच्य हींदी लीपी में स्पष्ट लीखाई में ही भरे ।

कृपया पासपोर्ट साइज का हाल ही में खिंचा हुआ रंगीन (2) फोटो यहां चिपकायें (स्टेपलर ना करें.)

उमेदवारी पत्रक - युवक/युवती

अहमदाबाद कार्यालय पर आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तारीख 20-12-2014

नाम _____

(सरनेम) (प्रथम नाम) - (पिता का नाम)

सम्पर्क हेतु पूरा पता _____

_____ पिनकोड : _____

दूरभाष (STD कोड सहित) _____ मोबाइल क्र._____

नागर व ब्राह्मण / गृहस्थ / उपज्ञाति - विसनगरा / वड़नगरा / साठोदरा /चित्रोडा / प्रश्नोरा /दशोरा_____ मूलवतन / शहर_____

अभ्यास_____ व्यवसाय_____ पोस्ट/पद_____ मासिक आय_____

उमेदवार का : वजन_____ किलोग्राम_____ ऊँचाई_____ रंग_____ चश्मा है/नही_____

जन्म दिनांक _____ जन्म स्थल _____ जन्म समय (Am/Pm) दिवस, / रात्रे)_____

(निकटस्थ शहर एवं प्रदेश का नाम भी लिखे)

अपरणित / विधुर / विधवा / तलाकसुदा)

विकलांग (यदि लागू हो तो सम्पूर्ण जानकारी देवे)

क्या जन्माक्षर मानते है _____ मंगल है / नहीं_____ शनि है /नहीं_____

गोत्र_____ नाडी _____ नक्षत्र_____

E-mail का पता : Add _____

जीवन साथी से अपेक्षाएं (संक्षेप में)

पिता का नाम- माता का नाम व सही_____ उम्मीदवार की सही _____

रु. 250/- आवेदक के रु 150/- आने वाले प्रत्येक अतीरीक्त वाली (पालक) के रु. हम घोषित करते हैं । कुल रुपये

नोंट : (कृपया आवेदनपत्र भरने से पूर्व अवश्य पढ़ लेवे)

१. कृपया आवश्यक जानकारी को चिन्हित करें अनावश्यक को काट दें ।

२. उम्मीदवार के आवेदनपत्र के साथ एन्ट्री फी, माहिती पुस्तिका, पेटे रुपये 250/- तथा साथमें आनेवाले प्रत्येक अतिरिक्त व्यक्ति के पेटे रुपये 150/- के हिसाब से सारी राशी दिनांक 20-12-14 तक भेजना सुनिश्चित करें । बाद में फोर्म स्वीकार नहीं होगें

३. समस्त राशि का बैंक ड्राफ्टया चेक "समग्र गुजरात नागर परिषद" के नाम से जो कि अहमदाबाद पर आहरित हो प्रेषित करें (अथवा) मनीआर्डर से प्रेषित करे (अथवा) संस्था के बैंक खाता बैंक ओफ बड़ोदा, खाडिया, अहमदाबाद के खाता क्रमांक 12410100007023 में जमा कर रसीद की फोटो प्रति आवेदन पत्र के साथ ही प्रेषित करें । बैंक में भरनेवाली परची में दाहीनी बाजु सबसे नीचे कौने में उम्मीदवार का नाम अवश्य लीखे और बैंक के केशीयर को भी यह नाम कम्प्युटर में फीड करने का आग्रह रखे ।

४. कार्यालय में नकद राशि एवं आवेदन पत्र 9-00 बजे से दोपहर 2-00 बजे एवं सायं 5-00 बजे से 8-00 बजे तक ही स्वीकार्य होंगे ।

५. सम्मेलन स्थल पर प्रातः 9-30 के पूर्व उपस्थित दर्ज करवाना सुनिश्चित करें विलम्ब से आने पर अल्पाहार सुविधा से वंचित होना पड़ सकता है।

६. आवेदन पत्र के साथ घोषित व्यक्तियों की संख्या के अलावा एकस्ट्रा व्यक्ति को प्रवेश नहीं दी जावेगी ।

७. आवेदन पत्र के साथ अंतिम शिक्षण का प्रमाणपत्र एवं जन्म दिनांक की पुष्टि हेतु अंकसूचि/ प्रमाणपत्र के अलावा और कुछ प्रेषित न करें ।

८. किसी गलत जानकारी के लिये संस्था जवाबदार नहीं होगी । संबंध करने के पूर्व दोनो परिवार आपस में जानकारी प्राप्त कर सुनिश्चित होकर ही निर्णय लेवें ।

९. कार्यक्रम स्थल पर कोई भी फार्म स्वीकार नहीं किया जावेगा, न ही कोई प्रतिष्टी स्वीकार की जावेगी ।

१०. आवेदनपत्र को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संस्था को होगा जिसके लिये कारण बताने की बाहयता नहीं होगी ।

११. यदि आपके आवेदनपत्र प्रस्तुत करने के पश्चात सम्मेलन में सम्मिलित होने संबंधी जानकारी आपको 24-12-2014 तक नहीं मिले तभी संस्था से सम्पर्क करें इसके पूर्व नहीं ।

१२. समस्त न्यायलयीन परिक्षेत्र केवल अहमदाबाद (गुजरात) ही होगा ।

१३. कार्यक्रम के अगले दिन ता. 3-1-2015 को अहमदाबाद जो उम्मीदवार और उनके वाली आना चाहते है उनके लिए आवास और भोजन की निःशुल्क सुविधा है । उसके लिए दिनांक 24-12-2014 के पहले कार्यालय पर सूचित करना आवश्यक है ।

खास नोंध : उम्मीदवार की माहिती पुस्तिका जिस को अपने पत्ते पर मंगवानी हो उनको पोस्टेज चार्ज के रु. 100/- अलग से भेजने पड़ेंगे । यदी आप कार्यक्रम में आनेवाले ना हो और माहिती पुस्तिका मंगवाने के लिए आप के रजीस्ट्रेशन के साथ ही Postage Charge के Rs. 100/- भेजने का कष्ट करेंगे । तब ही कार्यक्रम के पश्चात पुस्तक जलद ही भेज शकते है

फार्म प्राप्ति के स्थान
मध्यप्रदेश नागरब्राह्मण परिषद की सभी ईकाइयोसे प्राप्त कर सकते है ।
राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण परिषद, नईदिल्ही की वेबसाईट से आवेदनपत्र डाउनलोड कर शकते हैं ।

अंबाजी (उत्तर गुजरात) में रात्री पूजा 10-4-15 से 14-4-15 तक करने का आयोजन है

समाज का कोई भी दायित्व सेवाभाव से निष्ठा पूर्वक निभाते थे

समाजसेवा व शासकीय सेवा के दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन एवं मिलनसार स्वभाव पं.श्री बालकृष्ण जी नागर की विशिष्ट पहचान थी आप सभी वर्गों व सभी आयुवर्ग में समान रुप से लोकप्रिय थे। ०१-०१-१९३० को ग्राम बापचा के जमीदार पटेल स्व.श्री प्रेमनारायण जी नागर के यहां जन्मे बालकृष्ण जी दो भाई व चार बहनों में सबसे बडे थे। आपने लगभग ३५ वर्षो तक शिक्षा विभाग में सफलतापूर्वक अपनी सेवाएं दी। आप जीवन पर्यन्त समाजसेवा करते रहे,समाज का कोई भी दायित्व सेवाभाव से निष्ठा पूर्वक निभाते थे। श्री नागर ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। सरल स्वभाव के श्री नागर सामाजिक कार्यों में अपनी सक्रिय प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराते थे, मृदुभाषी श्री नागर ०४ नवम्बर २०१४ को देव प्रबोधनी एकादशी के दिन ब्रम्हमुहुर्त में प्रभु के श्री चरणों में समर्पित हुए । आपके भरे पूरे परिवार में दो पुत्र एवं तीन पुत्रियां है, आपकी पूत्रवधु श्रीमती बबिता नागर वर्तमान में ग्राम पंचायत बापचा की सरपंच है।

पं. बालकृष्ण जी नागर

-डॉ.संजय नागर उज्जैन

पूज्यनीय दादा की पुण्य स्मृति को सादर नमन

आदरणीय दादा आपका अचानक जाना पूरे परिवार को स्तब्ध कर गया,आपसे जुडी स्मृतियां सदैव हमारे साथ रहेगी,जब भी आपके तखत को देखती हूं तो आपकी बहुत याद आती है। परमपिता परमेश्वर आपको श्री चरणों में स्थान दे। पूज्यनीय दादा को हम सभी का सादर नमन।

आपकी बहू-श्रीमती बबीता अशोक नागर, सरपंच ग्राम बापचा जिला शाजापुर

श्री जितेन्द्र नागर-सरली (माकड़ोन)

श्री ईश्वरीलालजी नागर के सुपुत्र एवं ललित नागर के छोटे भाई व आयुष के पूज्य पिताजी श्री जितेन्द्र नागर (जितेश)का आकस्मिक देवलोकगमन 7-11-2014 को हो गया, वे किडनी रोग से पीड़ित थे, तथा उनके इलाज हेतु मासिक जय हाटकेश वाणी ने अपील कर आर्थिक सहयोग भी जुटाया था, कुछ समय तक उन्हें लाभ भी हुआ, परन्तु ईश्वर को कुछ ओर ही मंजूर था। परमपिता परमेश्वर परिवार को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें, इस प्रार्थना के साथ हार्दिक श्रद्धांजलि।

श्रीमती विजयकान्ता नागर-इन्दौर

श्रीमती विजयकान्ता पत्नि श्री नटवर जी नागर का स्वर्गवास 17.11.2014 को इंदौर में हो गया। आप चाचौड़ा नागर परिवार से सम्बद्ध थी, सुपुत्र-दीपक नागर, प्रेमनारायण नागर, महेन्द्र नागर, अशोक नागर, सुभाष नागर, मनोहर नागर, अनिल नागर ने शोकाकुल परिवार को इस मुश्किल घड़ी में ढांढस बंधाने वाले समाजजनों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

श्रीमती दुर्गादेवी नागर-खजराना

खजराना निवासी श्रीमती दुर्गादेवी नागर (पत्नि स्व.श्री रामचंद्र जी नागर) (कामरेड गुरू) का देवलोकगमन 22-11-2014 को हो गया। शोकाकुल परिवार को संबल देने के लिए पं. मनोहर शर्मा एड., पं. गणेश नागर, पं. राजेश नागर, पं. राकेश रावल ने समाजजनों, गणमान्य नागरिकों का आभार व्यक्त किया है।

अपनत्व, आत्मीयता, स्नेह यादें
उभरती, एहसास की दस्तक
जानकी जयंती (2-12-2014)
स्व. श्री श्रद्धेय जानकीलाल रा. जोशी
स्मृतियां संजोये पुष्पार्पण, समस्त जोशी परिवार, इंदौर
- पी.आर. जोशी, इंदौर

श्रीमती गीतादेवी नागर, ग्राम मवासा

ग्राम मवासा, तहसील नरसिंहगढ़ जिला राजगढ़, मध्यप्रदेश निवासी श्रीमती गीतादेवी नागर का 2 नवम्बर 2014 को स्वर्गवास हो गया। वे 85 वर्ष की थी। ज्ञात हो कि विगत 25 अप्रेल 2014 को ही उनके पति पं. श्री प्रभुलालजी नागर का 106 वर्ष कि आयु में निधन हुआ था। इसे एक संयोग कहा जाये या फिर उन दोनों आत्माओं का गहनतम प्रेम, कि मात्र 6 माह के अंतराल में ही दोनों देवलोक के वासी हो गए। उनके परिवार में 4 पुत्रियाँ तथा 3 पुत्र है। बड़े पुत्र पंडित राधेश्याम शर्मा प्राचार्य एवं सुविख्यात भागवत कथाकार है। छोटे पुत्र गिरीश नागर एवं महेंद्र नागर अपने-अपने व्यवसाय में भलीभांति स्थापित है। मध्यप्रदेश नागर परिषद् भोपाल एवं मालवांचल के सभी समाजजनों ने दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करने एवं शोक संतप्त परिजनों को इस दु:ख एवं क्षति को सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

ओ. पी. शर्मा-भोपाल
9826047546

मेष

स्वास्थ्य: इस महीने आपकी सेहत अच्छी रहेगी। मानसिक शांति मिलेगी।

रिश्ते और प्यार: इस महीने आपकी लव लाइफ बेहद मजेदार रहेगी। अकेलापन खत्म हो सकता है और रिश्तों में मजबूती आएगी।

करियर और शिक्षा: यह माह छात्रों के लिए सामान्य रहेगा। महीने की शुरुआत में एकाग्रता बनाने में दिक्कत आएगी लेकिन महीने के अंतिम दिनों में सब ठीक हो जाएगा।

वृषभ

स्वास्थ्य: इस महीने स्वास्थ्य संबंधी छोटी-मोटी परेशानियां हो सकती हैं। अनिंद्रा और तनाव के कारण स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

रिश्ते और प्यार: गलतफहमी का कोई इलाज नही होता। इस महीने रिश्तो मे गलतफहमी पालने से बचें।

करियर और शिक्षा: समय अनुकूल है, थोड़ी सी मेहनत से ही पूरा फल मिलने की उम्मीद है। आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मिथुन

स्वास्थ्य: सेहत का ध्यान रखें और लंबी यात्रा पर जाने से बचें। मानसिक तनाव से बचने के लिए योग और ध्यान का रास्ता अपनाएं।

रिश्ते और प्यार: अगर आप किसी से प्यार का इज़हार करना चाहते हैं तो इस महीने कर दें, सफल होने की संभावना अधिक है।

करियर और शिक्षा: लंबे समय से आप परीक्षा या टेस्ट के नतीजों का इंतजार कर रहे थे वह इस महीने आ सकते हैं।

कर्क

स्वास्थ्य: बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। बुखार या मामूली चोटों का भी उपचार समय पर करें।

रिश्ते और प्यार: यह महीना प्रेम-प्रसंगो के लिए अनुकूल नहीं है। प्रेम-संबंधों में दूरियां बढ़ सकती हैं। यह वक़्त सोच-समझकर और शांत होकर चलने का है।

करियर और शिक्षा: यह महीना छात्रों के लिए विशेष कामयाबी भरा साबित हो सकता है। कम मेहनत का भी अधिक फल मिलेगा।

सिंह

स्वास्थ्य: महिलाओं के लिए यह महीना कष्टकारी हो सकता है। पुराने दर्द उभर सकते हैं।

रिश्ते और प्यार: इस महीने किसी खास शख्स से आपकी मुलाकात हो सकती है जिसके साथ आपका रिश्ता काफी लंबे समय तक रहेगा।

करियर और शिक्षा: यह महीना छात्रों के लिए अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों को कम मेहनत में भी अच्छे परिणाम मिलने की संभावना है।

कन्या

स्वास्थ्य: अधिक कार्य करने की वजह से इस माह आपका स्वास्थ्य ख़राब हो सकता है। समय पर आराम करें और खानपान का ख्याल रखें।

रिश्ते और प्यार: यह महीना रिश्तों के लिहाज से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। रिश्तों के भंवर में फंसने से बचें।

करियर और शिक्षा: बेरोजगार या नौकरी बदलना चाहते हैं, तो समय अनुकूल है। अच्छी जॉब के ऑफर आ सकते हैं।

तुला

स्वास्थ्य: यह महीना स्वास्थ्य के लिहाज से सामान्य रहेगा। क्रोध ना करें और मन को शांत रखें।

रिश्ते और प्यार: महीने की शुरुआत में प्रेम संबंधों में उदासीनता बनेगी लेकिन मास के उत्तरार्द्ध तक संबंधों में सकारात्मक प्रभाव दिखाई देगा।

करियर और शिक्षा: यह महीना छात्रों के कठिन साबित हो सकता है। कठिनाइयों को दूर करने के लिए किसी सीनियर की मदद लें।

वृश्चिक

स्वास्थ्य: इस माह स्वास्थ्य के प्रति जागरुक रहें, किसी पुरानी बीमारी की वजह से आपको परेशान होना पड़ सकता है।

रिश्ते और प्यार: इस महीने आप अपने कार्य में व्यस्त होने के कारण अपने पार्टनर को समय नहीं दे पाएंगे।

करियर और शिक्षा: इस महीने आपको अधिक मेहनत करनी पड़ेगी लेकिन इस मेहनत का आपको फल भी मिलेगा। लक्ष्य की दिशा में एकाग्र होकर प्रयास करें।

धनु

स्वास्थ्य: आपकी लापरवाही इस महीने आपको भारी पड़ सकती है। समय पर दवाई लेना ना भूले अन्यथा अधिक बीमार हो सकते हैं।

रिश्ते और प्यार: इस महीने प्रेम प्रसंगों को लेकर सावधान रहें, अन्यथा अनावश्यक तनाव बढ़ सकता है।

करियर और शिक्षा: यह माह छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। एकाग्रता ना बना पाने के कारण मानसिक तनाव हो सकता है।

मकर

स्वास्थ्य: इस महीने आपको गैस, बदहजमी आदि का सामना करना पड़ सकता है। बाहर का तला-भुना ना खाएं।

रिश्ते और प्यार: इस महीने अपने रिश्ते को मजबूत करने पर ध्यान दें। अपने पार्टनर की भावनाओं की कद्र करें अन्यथा दूरियां बढ़ सकती हैं।

करियर और शिक्षा: इस महीने इंजीनियरिंग से जुड़े छात्रों को विशेष लाभ होने की संभावना है। करियर को एक नई दिशा देने के लिए यह समय अच्छा है।

कुंभ

स्वास्थ्य: सेहत के लिए समय अनुकूल नहीं है। सावधानी बरतने से समस्या कम हो सकती है। पेट की बीमारियां हो सकती हैं।

रिश्ते और प्यार: अपने साथी के साथ समय बिताने से रिश्ता और मधुर हो सकता है, लेकिन यदि आप समय नहीं देते तो बात बिगड़ भी सकती है।

करियर और शिक्षा: इस महीने आप अपनी शिक्षा या करियर से जुड़ा कोई अहम फैसला ले सकते हैं। यह फैसला आपका आने वाला कल तय करेगा इसलिए यह फैसला सोच समझकर लें।

मीन

स्वास्थ्य: मौसम परिवर्तन संबंधी परेशानियों से रूबरू होना पड़ सकता है। सुबह व्यायाम करें।

रिश्ते और प्यार: इस महीने अपनी वाणी पर संयम रखें, खासकर साथी से बातचीत करते समय।

करियर और शिक्षा: यह महीना छात्रों के लिए नॉर्मल रहेगा। बेरोजगारों को अभी और भागदौड़ करनी पड़ सकती है।

मातृ देवो भव...पितृ देवो भव...

सादर पुण्य स्मरण

स्व. श्री रामचन्द्रजी मेहता — प्रभु मिलन-17 दिसम्बर 2011

स्व. श्रीमती लतादेवी मेहता — प्रभु मिलन-15 दिसम्बर 2013

सुबह मन्दिर की घंटी के स्वरों में आप याद आते हैं पापा,
स्तुति की स्वर लहरियां आपकी याद दिलाती है माँ,
पूरा दिन आप ही के आशीर्वाद और स्नेह के बीच बीत जाता है,
शाम को घर लौटते धवल के घुंघरुओं की आवाज में,
हम आपके साथ बिताए हुए लम्हों की यादें संजोते है
आप कहीं नहीं गए, हो यहीं हमारे बीच में,
सुबह उदय होते सूर्य, संध्या को घर लौटते
पंछियों का कलरव, आपकी स्मृतियां आपके शब्द
हमेशा हमारी राहें प्रशस्त करते रहेंगे।

वन्दन...नमन्...

श्रद्धावनत : भ्राता : राधेश्याम-शशिकला मेहता,
पुत्र : जितेन्द्र-रीना मेहता, पुत्रियां : किरण-दिनेश मेहता एवं
सीमा-नवीन नागर, भतीजा : प्रतीक-प्रगति मेहता
व समस्त मेहता एवं नागर परिवार, मक्सी-इन्दौर-तराना एवं मनासा

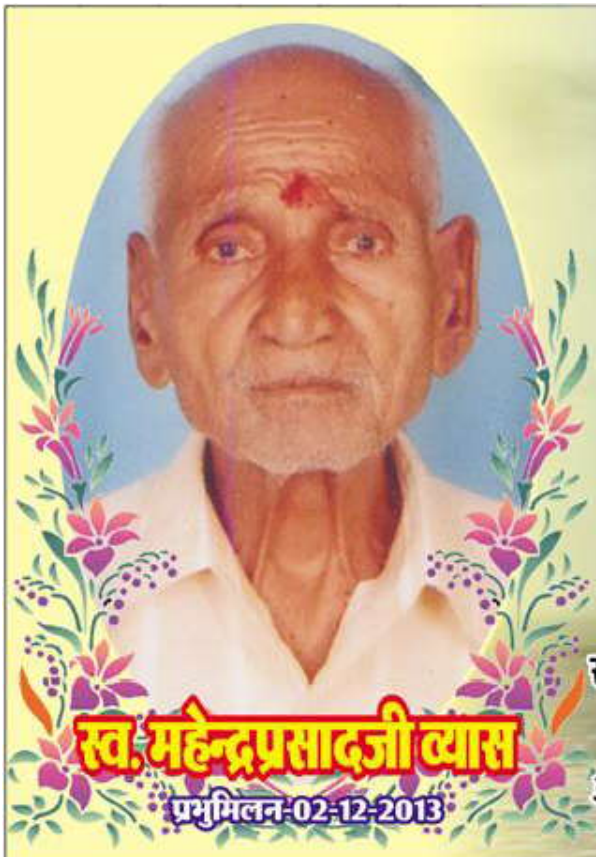

सादर पुण्य स्मरण

स्व. महेन्द्रप्रसादजी व्यास

की पुण्य स्मृति पर
हम सभी की ओर से
शत् शत् नमन

श्रद्धावनत
श्रीमती कांता बेन व्यास (पत्नी)
स्व. सुनील व्यास (पुत्र), श्रीमती माला व्यास (पुत्रवधु)
निलेश व्यास (पुत्र)
अंकित व्यास (पौत्र) एवं समस्त व्यास एवं भट्ट परिवार
मो. 9575323143

स्व. महेन्द्रप्रसादजी व्यास
प्रभुमिलन-02-12-2013

पुण्यात्मा का परमात्मा से मिलन

अश्रुपूरित श्रद्धांजली

जन्मदिनांक- 28-10-1912
देवलोक गमन दिनांक 29-10-2014

श्रद्धेय रतनबाई

सदैव मुस्करा कर जीवन जीने की कला सिखाने वाली ममतामयी जिन्हें मैं बेन कह कर संबोधित करता था ने निश्चित रुप से बात-बात पर गुस्सा करने वाली आज की पीढ़ी को संदेश दिया है कि सदैव हर हाल में खुश रहने से एवं मुस्कुराकर बात करने से खुशनुमा लम्बा जीवन जीया जा सकता है। बच्चों के साथ विशेष प्रेम करने वाली ऐसी ममतामयी और धार्मिक श्रीमती रतनबाई स्व. हीरालालजी नागर की पत्नी का 102 वर्ष की उम्र में देवलोक गमन हो गया। जिनका अन्तिम संस्कार थान्दला में पद्मावती नदी के तट पर किया गया। 102 वर्ष की उम्र में भी प्रतिदिन मन्दिर जाना उनकी दिनचर्या में शामिल था। दिनांक 28-10-2014 को श्री बिहारी मन्दिर में अन्नकूट की प्रसादी ग्रहण करने के पश्चात रात्रि 11 बजे तक परिवार के साथ खुशनुमा माहौल में वे बातचीत करते रहे।

दिनांक 29-10-2014 को सुबह 08 बजे श्रीमती रतनबाई अपने भरे-पूरे परिवार जिसमें 4 पुत्र, 3 पुत्रियां, 4 पोते, 4, पोतियां, 6 नाती एवं 24 परनाती - परपोते का भरा-पूरा परिवार छोड़ कर ब्रह्मलीन हो गये।

मेरे परिवार की ओर से परम पुज्यनीय बेन को अश्रुपूरित श्रद्धांजली देता हूं, और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि बेन को स्वर्गलोक में उच्च स्थान दे व सम्पूर्ण परिवार को आघात सहने की शक्ति प्रदान करें। जय श्री कृष्ण...

श्रद्धावनत-राजेश नागर एवं परिवार, झाबुआ

RYDAK

(RED)

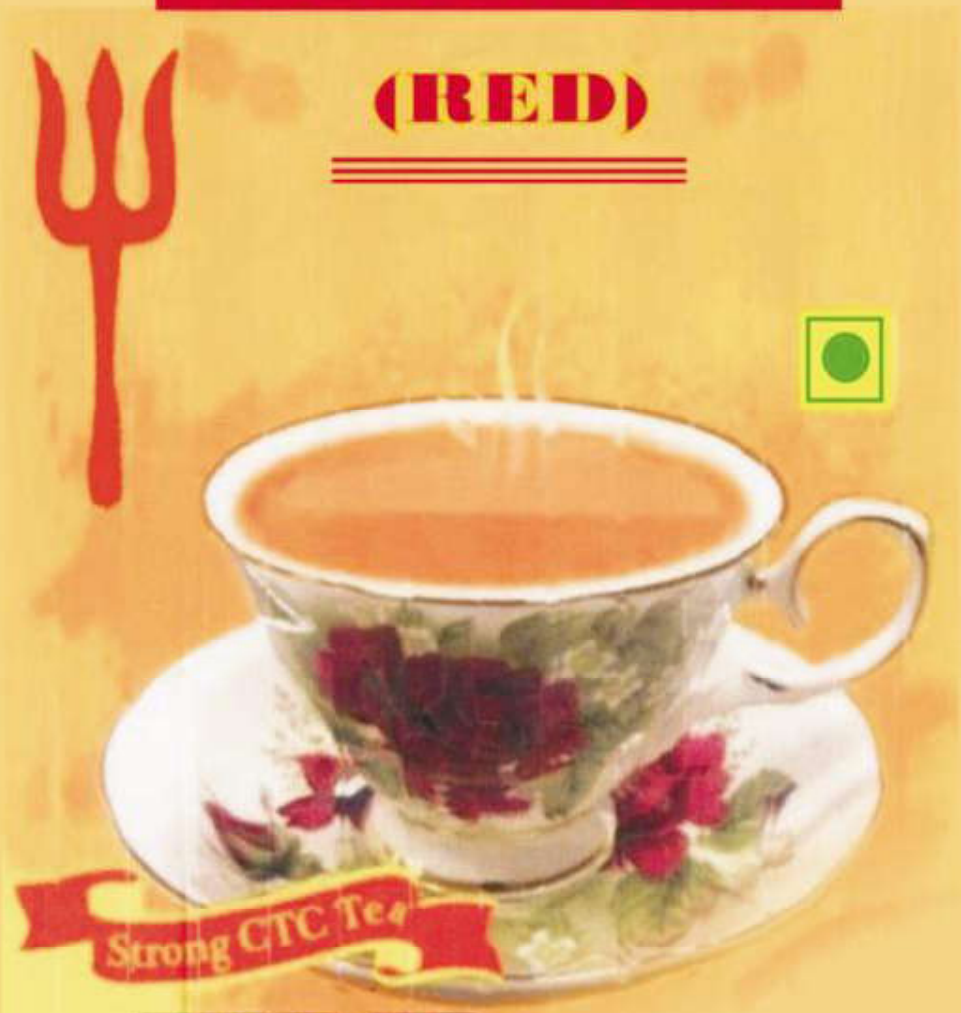

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

75, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा श्री दीपक प्रिंटर्स
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
संपादक : सौ.संगीता शर्मा

मो. 99262-85002